ओ३म्

सुषमाञ्जली

१५ मार्च १९४० – २६ अक्टूबर २०१४

१९५९ में अपने पति श्री चन्द्र प्रकाश जी के साथ श्रीमती सुषमा सर
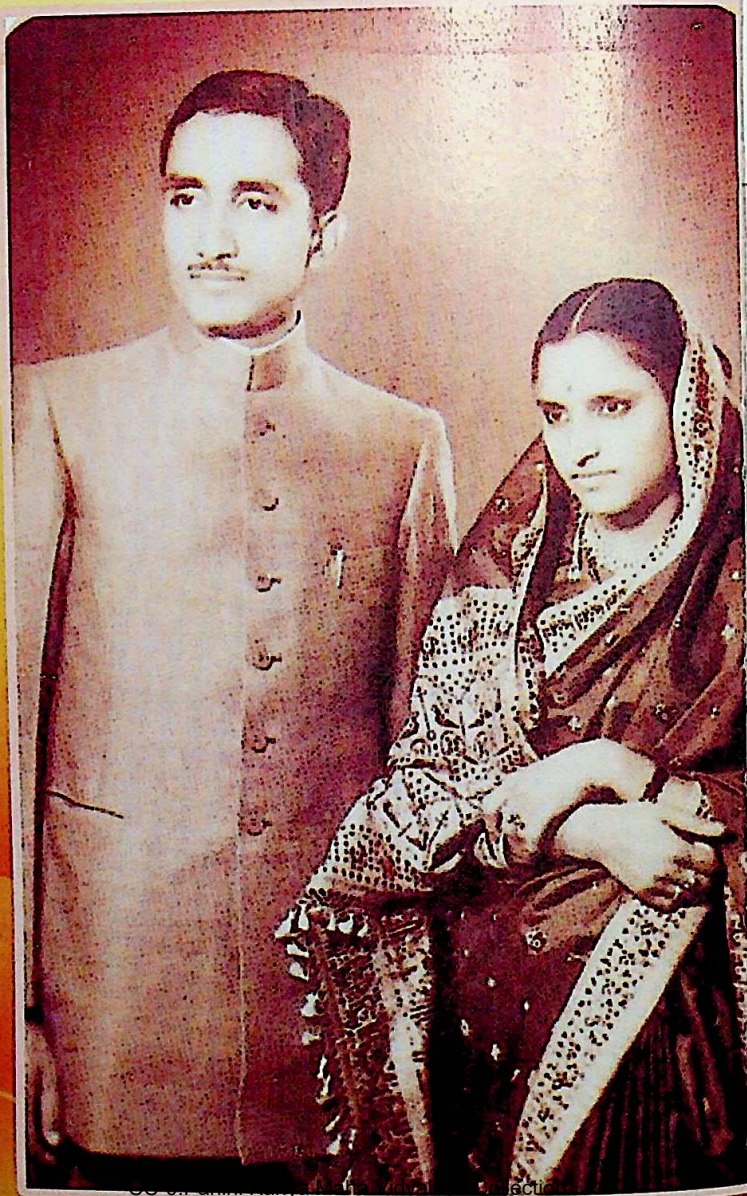
सुषमाञ्जली

सुषमा सर्राफ स्मृति–यज्ञ–संध्या एवं
बच्चों के लिए प्रेरणास्पद सामग्री

सम्पादक मण्डल

स्वाति
दीप्ती
सुरभि
आशुतोष
उदय
आरती
मोहित
मधुरिमा
सुप्रिया
आदित्य

प्रकाशकः
मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।

प्राप्ति स्थान :

- मीनाक्षी प्रकाशन
  बेगमपुल, मेरठ

- आर्य समाज
  मेरठ शहर

- प्रथम आवृत्ति :
  1500

- 2 नवम्बर 2014

- मुद्रक :
  सुधाकर मुद्रणालय, मेरठ
  फोन : 0121-4035969, 4028969

प्रस्तावना

पंच महाभूतों के विशिष्ट समायोजन में चेतना का दिव्य समावेश ही जीवन है। कर्म करने की पूर्ण स्वतन्त्रता एवं मेधा बुद्धि से युक्त मानव जीवन का स्थान सृष्टि में सर्वोपरि है। अनेक जन्म जन्मान्तरों एंव जीवनों में भ्रमण के उपरान्त मानव योनि में उत्तम कर्म करने का सुअवसर प्राप्त होता है।

ऋषियों द्वारा प्रतिपादित सर्वश्रेष्ठ यज्ञ कर्म ही मनुष्य को भैतिक एव आत्मिक सुख प्रदान करने में समर्थ है। अतः "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म" तथा "स्वर्ग कामो यज्ञेत" की भवानायें हमारे समाज में सुप्रचारित है।

शास्त्रों में तीन प्रकार के यज्ञों का उल्लेख मिलता है।

1. नित्य यज्ञ : प्रत्येक गृहस्थ के द्वारा कर्त्तव्य रूप में प्रतिदिन सम्पादित किये जाने वाले पंचमहायज्ञों को नित्य यज्ञ कहा जाता है।

2. नैमित्तिक यज्ञ : अमावस्या, पूर्णिमा आदि विशेष अवसरों पर किये जाने वाले दर्शेष्टि, पौर्णमासेष्टि इत्यादि नैमित्तिक यज्ञ कहलाते हैं।

3. काम्य यज्ञ : जब याजक किसी विशेष कामना को लेकर विद्या, धन, व्यापार आदि की उन्नति के लिये यज्ञ करें तो उन्हे काम्य यज्ञ कहते हैं।

स्वर्गीय श्रीमती सुषमा सर्राफ (15–3–1940 से 26–10–2014) की समृति में प्रकाशित इस पुस्तक में उपर्युक्त तीनों प्रकार के यज्ञों से सम्बन्धित मन्त्रों का संक्षिप्त संकलन किया गया है जिससे मानव मात्र ऋषियों के बनाये वेदमार्ग का अनुसरण कर जीवन को यज्ञमय बनाते हुए स्वजीवन को सार्थक कर सकें।

आशा है कि परिवार का यह लघु प्रयास हम सभी के लिये उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होगा।

बुहत ही कम समय में इस पुस्तक को मुद्रित कराने में श्री अशोक सुधाकर, सुधाकर मुद्रणालय का सहयोग सराहनीय है।

सम्पादक मण्डल

विषय सूची

मेरी मॉं सुषमा सर्राफ – एक परिचय

मेरी मां, श्रीमती सुषमा सर्राफा का जन्म 15 मार्च सन् 1940 में रूड़की उत्तर प्रदेश में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री जगदीश प्रसाद एवं मां का नाम श्रीमति दयावती था। मां अपने 9 भाई बहनों में सबसे बड़ी थीं। आप लोग 6 बहनें एवं 3 भाई थे। आपकी स्नातक (बी0ए0) तक की शिक्षा रूड़की में ही हुई।

सन् 1959 में आपका विवाह मेरठ के एक आर्य समाजी परिवार में हुआ। आपके पति (मेरे पिता) का नाम श्री चन्द्र प्रकाश था। मां के ससुर (मेरे बाबा जी) का नाम श्री मनोहर लाल सर्राफ एवं सास (मेरी दादी मां) का नाम श्रीमती यज्ञवती देवी था।

मेरे बाबा जी एक सर्राफ थे और विवाह के समय मेरे पिता भी सर्राफा व्यापार में ही थे। मेरे पिता को पढ़ाई लिखाई का बहुत शौक था। यहां तक कि उस समय की आई0ए0एस0 की परीक्षा भी उत्तीर्ण करी। वो सच में सरस्वती के एक पुजारी थे और उन्हें सर्राफा व्यापार में रूचि नहीं आई और सन् 1964 में मेरे पिता ने मीनाक्षी प्रकाशन के नाम से मेरठ में ही पुस्तक प्रकाशन का अलग व्यापार कर लिया।

मेरी मां के चार पुत्र हुए 1960 मे श्री विवेक शेखर, 1961 में श्री सुधीर सिंहल, 1964 में मैं हिमांशु शेखर एवं 1967 में श्री प्रभात शेखर हुए। इस सब के बीच मां ने मेरठ में ही एम0ए0 की शिक्षा भी प्राप्त की।

अपने मायके से मां बहुत ही उत्तम संस्कार लाई थीं जिनमें से कुछ बातें विशेष तौर पर उल्लेखनीय हैं

1. उत्तम स्वास्थ्य
2. खुश होकर कार्य करने की आदत एवं इच्छा शक्ति
3. सभी को प्यार और आदर देने की आन्तरिक इच्छा
4. सभी के प्रति दया भाव
5. आर्य समाजी विचारधारा

इन सभी को मां की ससुराल में जबरदस बल मिला। मेरे दादा जी

शुरू से ही आर्य समाज से बहुत ही................तरीके से जुड़े थे। घर में स्वास्थ्य पर बहुत जोर दिया जाता था। अपने हाथ से काम करने की आन्तरिक इच्छा शक्ति ने मां के गृहणी धर्म को हमेशा चमका कर रखा एवं बड़ों को आदर एवं छोटों को शर्तरहित प्यार करने की भावना से घर का वातावरण बहुत ही आनन्दित एवं उल्लसित रहता था।

हमें बड़ों को आदर करने का चपन से ही इतना जोर दे कर संस्कार दिये गये कि हालाकि हम चारों भाईयों में आपस में केवल 2—3 साल का अन्तर है परन्तु बड़े भाई लोगों का केवल आदर एवं मान देने की संस्कार हमें मिले एवं छोटो को प्यार से अपने से मिला कर चलने के संस्कार मिले। उसी का फल है कि आज भी मैं अपने बड़े भाई का पहला नाम नहीं लेता परन्तु केवल शेखर भाई से सम्बोधित करता हूं। और मुझे और प्रभात जी को भी बड़े भाईयों से बेहिसाब प्यार और मान मिलता है।

दया भाव से परिपूर्ण हमारी मां हर परिस्थिति एवं तबके के लोगों से मन से जुड़ती थीं। मां ने ही हमें सिखाया की दूसरों की परिस्थिति को समझने एवं उनसे व्यवहार करने में दया भाव हमेशा बहुत सहायता करता है।

समय गुजरता गया देखते ही देखते हम चारों की शादी सन् 1984 से 1993 के बीच हो गयी। घर में मां ने अपनी चारों बहुओं और पोते पोतियों के साथ बहुत ही दक्षता से एक बड़े सयुंक्त परिवार को संभालकर संजोया।

मां एक स्वच्छन्द व्यक्तित्व की मालकिन थी। और परिवारों के सभी सदस्यों को स्वच्छन्द तरीके से जीवन जीने की सलाह देती एवं सहायता करती थीं।

सन् 1978 में मेरी दादी जी को कैंसर हो गया मुझे खूब याद हैं कि मां ने बहुत मेहनत एवं निर्मल भाव से दादी जी की सेवा की। चाहे वो उन्हें शौच कराना हो, निल्हाना हो, खाना खिलाना हो या कुछ भी, वो दादी जी के सभी काम अपने हाथ से करती थी।

सुषमा स्मृति

पूज्य अम्मा जी श्रीमती सुषमा सर्राफ जी
की स्मृति में समर्पित

समस्त – पौत्र एवं पौत्रीगण

शायद हम चारों में भी इस तरह के संस्कार घर में ये सब अपनी मां को करते हुए देखकर ही आये हैं।

सन् 1979 में मेरी दादी जी का निधन हो गया। और घर की पूरी जिम्मेदारी मेरी मां पर आ गयी जिसे उन्होंने बहुत ही निपुणता से निर्वाहा किया।

1993 में अपनी 53 वर्ष की आयु में मां ने सर्राफा बाजार स्थित अपनी सर्राफे की दुकान में आना शुरू किया। दुकान आने पर उन्होंने अपने लिये काम ढूंढ़ा और अपनी जगह बनाने के लिये कम्प्यूटर सीखा। आबूलेन स्थित बिट्स एण्ड बाईट्स संस्थान में कम्प्यूटर की शिक्षा ली। उस जमाने में यह एक नई एवं चौंकाने वाली बात थी।

मार्च 1993 से अगस्त, 2014 तक लगातार 21 साल वो दुकान पर आती थीं और सभी तरह के लोगों से व्यवहार एवं बातचीत करती थीं। वो घर वालों को दिल से जीतती थी एवं बाहर वालों को भी दिल से।

सन् 2000 में मेरे दादा जी का निधन हो गया था और परिवार की ओर भी ज्यादा जिम्मेदारियाँ मां पर आ गयी। परन्तु वह फिर भी संयत आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ती रहीं।

सन् 2007 में मेरे पिता का देहान्त हुआ। और तब से मेरी मां ने पूरे परिवार की धुरी का किरदार निभाया। फैलता पारिवारिक व्यापार बड़े–बड़े पुत्र एवं पुत्र–वधुएं, पोते, पोतियों, सभी को जोड़ कर परिवार को चलाना एक ऐसी जिम्मेवारी थी जिस में बहुत ही समझदारी एवं बातों के मर्म को समझने की गहराई वाले व्यक्तित्व की जरूरत थी। मेरी मां ने भी इस रोल को बखूबी निभाया।

सन् 2011 मे नोएडा शिफ्ट हो गयीं और वहां भी पारिवारिक एवं सामाजिक वैभव पूर्ण जीवन जिया।

घर में मेहमान का यथासंम्भव सत्कार होता था एवं आज भी होता है। यही कारण है कि हमने घर में हमेशा मेहमानों को आते जाते देखा। आर्य समाज के उच्च स्तर के सन्त अपने मेरठ दौरे पर

हमारे घर में ही ठहराना पसंद करते थे। मेरी मां के स्वागत सत्कार में इस तरह का अपनापन था।

उन्हें गाय से विशेष लगाव था। बचपन से ही उनके रूड़की के घर में गाय पाली जाती थी। फिर मेरठ के परिवार में भी गाय थी तथा नोएडा में भी उन्होंने गाय रखी हुई थी। देखा जाये तो पूरे जीवन काल में मां ने गाय रखी एवं उसकी सेवा की। पूरे घर में घर की गाय का दूध, दही एवं मक्खन, मठ्ठा मेरी मां की वजह से ही उपलब्ध रहता है। नोएडा से भी वो दिल्ली के हमारे तीनों घरों में ताजा दूध भिजवाती थीं।

मां को बागवानी को बहुत शौक था एवं ईश्वर की कृपा से मेरठ में भी एक फार्म हैं एवं नोएडा में भी एक फार्म है। इन दोनों ही जगहों पर मां बड़े ही शौक से बागवानी करती थीं। उन्होंने बहुत से फलदार वृक्ष लगायें हुये हैं जैसा कि आम, अमरूद, शरीफा, पपीता, मीठे नींबू, अलूचा, अनार, आड़ू, लोकाट, जामुन, बेलपत्थर, अन्जीर, सन्तरा, कीनू एवं सदाबहार करोंदे एवं इमली इसके अलावा मौसम की सब्जियां खूब ही आती थी। उनकी बागवानी के फल एवं साग सब्जी से हमारे चारों घरों का काम करीब करीब चल जाता था। आलू, धान, आदि भी उगाती थीं।

उनकी मृत्यु के एक दिन बाद 27 अक्टूबर की सुबह मैं और मेरे छोटे भाई प्रभात शेखर हमारे मेरठ के फार्म पर टहलने गये वापसी में वहां के माली ने घर के लिए करोंदे, सन्तरे, और पालक, हमारे संग रख दी। घर आकर मैने रसोई में अपनी बड़ी भाभी को सब्जी देते हुए कहा, " लीजिये मां ने सब्जी भिजवाई है।" वह एकदम हतप्रभ रह गयी। मेरी तरफ देखती रहीं और फिर दुखी चेहरे से मुस्कुरा दीं।

उनके कर्मों का फल आना शुरू हो गया था।

– हिमांशु शेखर

अति परोपकारी भाभी : सुषमा जी

भाभी जी से मेरा लगभग रोजाना ही मिलना होता था। वही मुस्कराता चेहरा, परिवार का हाल–चाल पूछना अक्सर होता रहता था। जब मेरी शादी हुई तो मेरी नौतनी करी, तब से अब तक लगातार सम्पर्क होता रहा। मेरी पत्नी का ऑपरेशन डा० ने बता दिया था जब मैंने बताया कहने लगीं इतनी छोटी उम्र में, भैया उसे मेरे साथ भेजना। उसे वो डॉ० के पास ले गयीं। डॉ० से बात की तो कुछ जांच आदि करा कर ऑपरेशन से बच गयी। एक तरह से मैं इस परिवार का सदस्य हो गया। कोई भी आर्य समाज से सम्बन्धित कार्य अधिकतर मेरे से पूछ कर करती थीं। पूरा परिवार ही मुझको पूरा आदर देता है।

दानशील भाभी : रक्षा पुरम में महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल बन रहा है। राजेश सेठी जी (थापर नगर आर्य समाज के मंत्री)मेरे से बोले सुषमा जी के पास चलो उनसे इस विद्यालय में भव्य यज्ञशाला बनवानी है। हम दोनों गये, अपना प्रस्ताव रखा। पूछा कितना रूपया लगेगा? सेठी जी ने बताया "आठ लाख"। उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दी। शुरू में 3 लाख दिये। बाद में देती रहीं हर बार पूछती कितने रह गये और देती रहीं।

परोपकारी भाभी : 2009 में ठंड बहुत पड़ रही थी। एक दिन मेरे से बोली भैया ठण्ड बहुत पड़ रही है। गरीब लोगों के लिए मैने 100 कम्बल खरीद लिये हैं। आज रात को शहर में घूमते हैं जो भी ठण्ड से त्रस्त व्यक्ति मिलेगा उसको कम्बल उढ़ा देंगे। बिना किसी शोर–शराबे के, बिना किसी को बताए, बिना किसी प्रचार के रात को शहर में निकल कर गरीबों को कम्बल उढ़ाते चले गये। इसी प्रकार एक साल 20 लिहाफ लेकर बाँटने चले गये। ऐसी परोपकारी थी मेरी भाभी।

जब भी किसी गरीब लड़की की शादी होती तुरन्त उसकी सहायता करतीं। कैंसर पीड़ितों को तो यह परिवार लगातार सहायता करता रहा है।

एक बार उन्होंने योजना बनाई कि गरीब लड़कियों का सामुहिक विवाह कराया जाये। प्रचार भी किया लेकिन सामुहिक विवाह के तौर पर कोई राजी नहीं हुआ। इस प्रकार यह योजना सफल नहीं हो पायी।

ऐसी परोपकारी भाभी को शत् शत् प्रणाम!

–अशोक सुधाकर

सुषमा : एक झलकता सौन्दर्य

लगभग 60 वर्ष पूर्व मेरे मित्र चन्द्र प्रकाश जी के विवाह के पश्चात् सुषमा जी से प्रथम भेंट के समय मैं आश्चर्य चकित हो गया कि श्यामल बनियों के परिवार में गौर वर्णी सुन्दरी खतरानी कैसे आ गयी। युवावस्था के उक्त काल में चन्द्र प्रकाश व मेरे बीच मर्यादित हास्य का विषय होता था खतरी व बनियों के व्यंग्यात्मक संवाद। जिस दिन रामगोपाल मेरठ कॉलिज वाले हमारे पास जुड़ जाते तो हास्य–व्यंग्य कटाक्षपूर्ण हो जाता। मैं अवाक् था कि अम्मा जी (स्व० यज्ञवती जी) से मैंने विनोद में कहा कि यह छटी हुई खतरानी कहाँ से ले आई, अम्मा जी! चन्द्र प्रकाश से मैं आयु में बड़ा होने से सुषमा जी मुझे भाई साहब कहती थीं।

प्रिय विवेक शेखर (प्रथम संतति) को देखकर मुझे विश्वास हो गया कि पिता जी की अगली पीढ़ी व्यवसाय से बनिया होगी पर शरीर से खतरी।

समय बीतता गया और मैं स्टेट बैंक में पदोन्नति प्राप्त करता हुआ 24 वर्ष मेरठ से बाहर रहा। बीच–बीच में अपनी माता जी को मिलने आता–जाता रहा लेकिन हर बार पिता जी (स्व० मनोहर लाल जी) एवं परिवार से बिना नागा मिलता था। उस समय पिता जी के ज्ञान पूर्ण बहुत से सूत्र मैंने आज तक अपनी स्मृति में संजोए हुए हैं।

सुषमा जी के बौद्धिक विकास एवं व्यवसायी रूचि पनपती रही। फिर एक भेंट में उन्होंने बताया कि मैंने दुकान जाना शुरू कर दिया है। जिसका अनुमोदन पिता जी ने भी किया। उन्होंने कहा कन्हैयालाल जमाना तेजी से बदल रहा है। दुकान में मेरा बैठने का ढंग तक बदल गया। नयी पीढ़ी नये ढंग से सोचती है और काम करती है "यह समय ने प्रत्यक्ष कर दिया"।

संस्मरण बहुत हैं जिनको इन पंक्तियों में समेटा नहीं जा सकता। समास रूप से मैं कहना चाहूँगा कि सुषमा जी का व्यक्तित्व शनैःशनैः विकसित हुआ और 'साधना' की बहुरानी मनोहर परिवार की गरिमायुक्त गृह स्वामिनी, प्रज्ञावान व्यवसायी, स्थानीय आर्य समाज की प्रेरक प्रदान, तथा महर्षि दयानन्द की निष्ठापूर्ण पथगामिनी बन गयी।

मेरे अवशेष जीवन (वर्तमान आयु 92 वर्ष) में सुषमा जी की स्थिर स्मृति बनी रहेगी।

अच्छा, अन्तिम श्रद्धायुक्त नमस्ते!

–कन्हैयालाल कपूर

गौ भक्त हमारी माता जी

प्रातःकाल गाय की सेवा करती थीं।
दोपहर बाद कम्प्यूटर पर बैठकर एक्सपर्ट की तरह
काम करती थी।
भगवान की कृपा से हाथ में पूरी बरकत थीं।

विवेक शेखर (पुत्र)

मम्मी के साथ मेरे खट्टे–मीठे बहुत अनुभव हैं। कभी–कभी मम्मी को कटु शब्द सुनने को मिलते थे। मम्मी कुछ देर विचलित होकर शान्त हो जाया करती थीं तब मैं मम्मी से पूछती थी कि आप इतना सब कैसे सहन कर लेती हैं? तब वे कहती थीं कि पहले कभी हमने भी कुछ गलत किया होगा, उस व्यक्ति के साथ इसलिये हम यह सब सुन रहे हैं। जब कभी मेरे साथ भी ऐसा कुछ होता है तो मैं भी मम्मी की यह बात याद करके शान्त हो जाती हूं। मम्मी की सहनशीलता का यह गुण मैं अपने जीवन में उतार सकूं? यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

पूनम शेखर (पुत्र वधु)

एहसास होता है कि मेरी तकदीर बुलंद है

विधाता ने अपनी सृष्टि में मानव की रचना बड़ी विचित्र की है। कुछ वस्तुएं एवं व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें पाने का विश्वास कठिनता से होता हैं तथा कुछ ऐसे होते है जिनके जाने का विश्वास नहीं हो पाता। पूज्य मां जी की स्मृति में इन पंक्तियों को लिखते समय मन को यह विश्वास कठिन हो रहा हैं कि वो इस दुनिया में नहीं हैं। क्योंकि इस दुनिया में कदम रखने से भी कई मास पहले ही बालक का मन मां के ह्रदय से जुड़ जाता है। जन्म के पश्चात बालक को सगे सम्बन्धी मित्र रिश्तेदार घर परिवार धन वैभव विद्या व्यवहार कर्तव्य धर्म, अधर्म आदि

सभी कुछ यथाकर्म प्राप्त होता है परन्तु जन्म से पहले उसका सम्बन्ध केवल परमेश्वर एवं मां से ही होता है। मां के साथ ही उसका मूक वार्तालाप होता है, मां ही उसके हृदय की धड़कन को पहचानती है, मां की हर खुशी हर व्यवहार केवल अपनी सन्तान के लिये होता है। इसीलिये मां को निर्माता कहा जाता है "माता निर्माता भवति" और ऐसा निर्माता जो अपने निर्माण के लिये अपना सर्वस्व बलिदान कर देती है और सन्तान को जन्म देते हुए पुनर्जीवन प्राप्त करती है।

मां शब्द को सुनते ही हृदय को जिस शान्ति एवं शीतलता का अनुभव होता है उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। विद्वान कहते हैं कि मां का हृदय धरती से भी विशाल होता है "माता गुरूतरा भूमे" मां के हृदय में अपनी सन्तान के लिये विद्यमान स्नेह को नापा नहीं जा सकता जैसे ही उसे गर्भधारण का ज्ञान होता है उसकी समस्त जीवनचर्या में एकदम परिवर्तन हो जाता है। इच्छा व रूचि होते हुए भी मां ऐसा कोई खान–पान या व्यवहार नहीं करती जो उसकी सन्तान के लिये अहितकारी हो। नौ मास अपने जीवन के कण–कण से अपनी सन्तान का निर्माण करने के उपरान्त जब मां सन्तान को जन्म देती है तो सारा दिन उसके चेहरे को निहारती रहती है। अपनी सन्तान से बढ़कर सौन्दर्य मां को संसार में कहीं नजर नहीं आता। सन्तान के मल मूत्र साफ करने में मां को कभी घृणा व आलस्य नहीं होता। अपनी सन्तान की तोतली वाणी मां का सबसे प्यारा सबसे मधुर संगीत होता है। छोटे–छोटे लड़खड़ाते पैरों से जब उसका बालक चलना प्रारम्भ करता है वह सुख सैंकड़ों उत्सवों के सुख से भी बढ़कर होता है। लेकिन बालक को इन सब त्यागों एवं बलिदानों का ज्ञान बहुत बाद में स्वयं माता व पिता बनने पर ही हो पाता है।

पूजनीय मां जी के अपार प्रेम में डूबी हुई अनेकों स्मृतियां उनके बिछोह के दुःख को और बढ़ा देती है। बचपन में पूजनीय दादा जी, पिता जी आदि सभी का प्यार प्राप्त होते हुए भी मां जी ही हमारे

लिये भामाशाह का खजाना थीं। हम अपनी प्रत्येक जिद को पूरा करने के लिये मां के ही दामन को थामते थे। मां जी भी थोड़ा सा रूठने मनाने पर अपने हृदय के द्वार खोल ही देती थी। बड़ा होने पर जब श्री राम कालेज आफ कामर्स में पढ़ने के लिये मैं दिल्ली रहने लगा तो खर्च कई गुना बढ़ गया। उस बढ़े हुए व्यक्तिगत खर्च को पूरा करने के लिये मां जी से जिद करने और लडने का ही एकमात्र रास्ता बचता था। मां जी ही थीं। जिनसे शेविंग किट खरीदने के लिये मैंने छह बार पैसे लिये और हर बार आकर कह दिया कि पैसे खर्च हो गये हैं। थोड़ी डॉट डपट के बाद पैसे फिर से मिल गये।

विवाह के बाद की एक घटना भी मुझे भुलाये नहीं भूलती जिससे पता लगता है कि मां का हृदय सदैव अपनी सन्तान के मन की बात जान लेता है। अंजुला जी से विवाह के उपरान्त आखिर वो घड़ी आयी जिसकी हर दम्पति प्रतीक्षा करता है। प्यारी बेटी दीप्ति का जन्म होने का समय निकट था परन्तु आवश्यक कार्यवश मेरा मन लन्दन जाने के धर्म संकट में पड़ा हुआ था ऐसी परिस्थिति में मां जी आगे आयीं उन्होंने मेरे मन की बात को भांपकर मुझे समझाया कि तुम निश्चिंत होकर अपना काम करो। अंजुला को संभालने की जिम्मेदारी मेरी है और उन्हीं के समझाने पर मैं विदेश चला गया तथा दीप्ति बेटी को मिलने के लिये उसके जन्म के नौ दिन बाद भारत आ पाया।

मैं समझाता हूं कि संसार की हर संतान के लिये अपनी मां के साथ बिताया हर लम्हा एक यादगार होता है जिसका वर्णन करना संभव नहीं है संसार के सभी महापुरूष कहते हैं कि मां के ऋण से उऋण कोई क्या हो सकता है। "चारों भाईयों में दूसरे स्थान पर रहने के उपरान्त भी पूजनीया मां जी के आशीर्वादों को उनके अन्तिम श्वांस तक प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। जीवन के अन्तिम वर्षों में नोएडा निवास पर रहते हुए भी सदैव प्रभु भक्ति, आर्य समाज, दीन दुःखियों की सेवा, सत्य मार्ग पर चलने जैसी अनेकों शिक्षाएं प्यार,

दुलार एवं आशीर्वाद के साथ मार्गदर्शन करती रहीं।

अन्त में परमपिता जगदीश्वर से उनकी आत्मा की अपार शन्ति की कामना करते हुए प्रार्थना करता हूं कि हम सभी को उनके दिए अच्छे संस्कारों एवं विचारों को धारण करने का सौभाग्य मिले।

माँ के चेहरे मुझे इतनी फुरसत कहां मैं अपनी तकदीर का लिखा देख सकूं।
मां के चेहरे पर मुस्कुराहट देखकर एहसास होता है कि मेरी तकदीर बुलंद हैं।
चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए– विनीत आत्मजः

सुधीर सिंघल

पूज्यनीया

मेरे को अपने परिवार से जुड़े लगभग 26 साल 10 माह हो चुके हैं। 1992 में मैंने अपनी जन्मदात्री मां (श्रीमति आदर्श गोयल) को खो दिया था। लेकिन मम्मी का साथ होने से मुझे कभी भी उस कमी का एहसास नहीं हुआ। जितना मान सम्मान उनका मैं कर पायी उससे बहुत ज्यादा मम्मी से मुझको मिला, मम्मी का व्यक्तित्व बहुत दृढ़ था। घर में कुछ भी सुख या दुःख हो, और उनकी सेहत खराब हो, परन्तु परिवार की जरूरत के लिए उस समय वह उस स्थान पर मौजूद होती थीं। जो कुछ मैंने मम्मी में देखा, समझा, सीखा व महसूस किया, वह कुछ ऐसा था–

जैसे ही मैंने अपनी जरूरतें समेटी हैं, वैसे ही खुशियां मेरे घर लौटी हैं।
जैसे ही मैंने अपना क्रोध कम किया है, वैसे ही शांति का घर मैं आगमन हुआ है
जैसे ही मैंने निस्वार्थ कर्म किया है, वैसे ही मुझे संतोष धन मिला है
जैसे ही मैंने किसी की मदद को हाथ बढ़ाया है, वैसे ही अपने गमों को कोसो दूर भगाया है।

अंजुला सिंहल (पुत्र वधु)

मां का मेरे लिये सन्देश

मेरे लिये मां का सन्देश बहुत ही सरल है वो चाहती थीं कि उनके जीवन की तरह हम भी अपने जीवन में कर्मवीर बनें, सच्चे प्यार की भावना को सम्मान एवं साथ दें, सभी मुद्दो को दयाभाव से हल करें और विकासशील आधुनिक विचारधारा रखें।

हिमांशु शेखर (पुत्र)

हमारी पूजनीय ममतामयी मम्मी जी,

हम धन्य हैं, पूर्णवान है जो आपके जैसी सासु मां हमें मिली। आपने कण–कण में अपनी खुशबु बिखेरी। आप का जीवन प्रेम से परिपूर्ण था, चाहे वह फूलों से हो, प्रकृति से हो, अपने बच्चों से हो या फिर अपनी गाय से हो। आप बहुत परिश्रमी थीं। आपने समाज को कई क्षेत्रों में अपने बहुमूल्य योगदान से अलंकृत किया। आपने सदैव अपने परिवार को तथा परिवार जनों को अपने जीवन में सदैव उच्च स्थान दिया।

आप अपने सिद्धान्तों की पंक्की थीं। आपने अपने परिवार के हम सभी बच्चों को कभी प्यार, कभी अनुशासन से जीने की सच्ची कला सिखायी। घर में बच्चों का अम्मा से और अम्मा का बच्चों से बेहद प्यार रहा। आर्य समाज में तो आप वर्षों प्रधाना के पद को सुशोभित करती रहीं। आपने अपने उत्तम आचरण से सदैव दूसरों को रास्ता दिखाया। आप परिश्रमी, न्याय संगत, धार्मिक विचारों वाली महिला थीं। आपके लिये जीवन भी एक एडवेन्चर की तरह था। आप मजबूत विचारों की महिला थीं। जो ठान लिया वो ठान लिया। पिछले वर्ष जब आप अपने परिवार वालों के साथ यू0एस0 जाने वाली थीं और वहां आपके दो बच्चे दीप्ती और मोहित आपका इंतजार कर रहे थे और आपका हीमोग्लोबीन 5 था तब दो सप्ताह पहले आपने ब्लड चढ़वाया और 21 दिन का यू0एस0 का ट्रिप आपने बड़ी हिम्मत और जोश से पूरा किया।

मुझे लगता है कि ससुराल में एक सासु मां ही ऐसी साथी होती हैं जिनसे आप दिल की बात कह सकते हो और जो आपको सही राह दिखाने के साथ–साथ सही सलाह देती हैं। उनके सांनिध्य मैं आने के बाद मेरे जीवन में ऐसा कई बार हुआ, जब मैने अपनी समस्या उनके सामने रखी और उन्होंने उसका सही हल बातों बातों में समझा दिया।

हम आप से हर बात शेयर करते थे। जब मैंने आपकों बताया कि मुझे जल के महत्व के विषय में बोलना हैं तो आपने मेरी पूरी स्पीच ध्यान से सुनी और सराहना भी की। अन्यथा ना ही किसी के पास इतना समय होता है ना मन।

मेरे पति श्री हिमांशु शेखर के जन्मदिन के समारोह में भी जब मैने स्टेज पर पहली बार इनके लिये गाना गाने का निर्णय लिया तो सबसे ज्यादा आप प्रसन्न थीं। और जब मैं स्टेज पर जाने से झिझक रही थी तो आप मेरा हाथ पकड़कर स्टेज पर ले गईं और मेरी हिम्मत बढ़ाई। आपकी कमी को तो कोई पूरी नहीं कर सकता लेकिन आप हमारी स्मृतियों में सदैव जीवित रहेंगी। हमें विश्वास है कि आपका आशीर्वाद सदैव हमारे ऊपर बना रहेगा।

वधु नीलम (पुत्र वधु)

ईश्वर पर पूर्ण आस्था

मेरी मां एक साधारण औरत से दिव्य शक्ति अपने जीवन काल में बनीं। ये दिव्य शक्ति मां ने अपने अच्छे कर्मों, अच्छे सोच विचार से हासिल की। मुझे मेरी मां में जो दिव्य गुण दिखाई देते हैं वो,

- दूसरों के प्रति शर्त रहित प्रेम
- ईश्वर में पूर्ण आस्था
- बच्चों के प्रति विशेष प्रेम,
- सभी के प्रति सेवा भाव
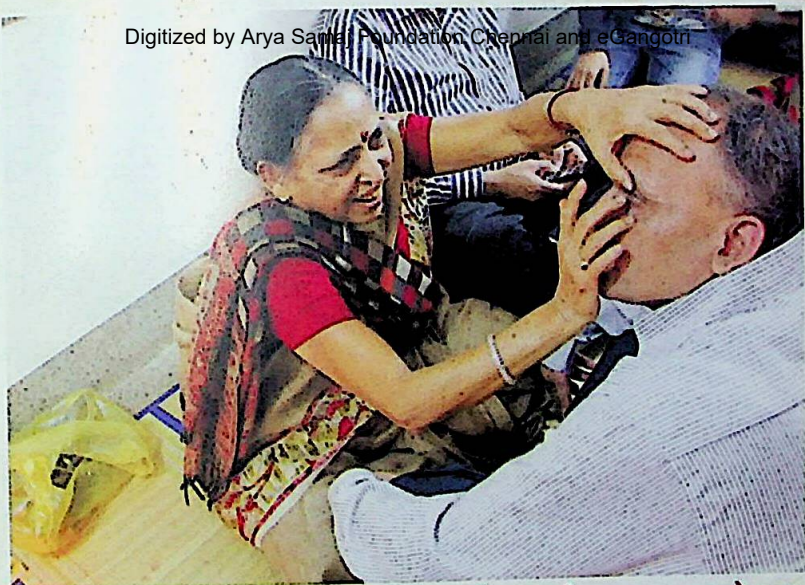
२०१० दीपावली पर अपने पुत्र विवेक शेखर को काजल लगाते हुए

२००८ में अपने पुत्र सुधीर सिंहल एवं पुत्रवधु श्रीमती अंजुला सिंहल के साथ
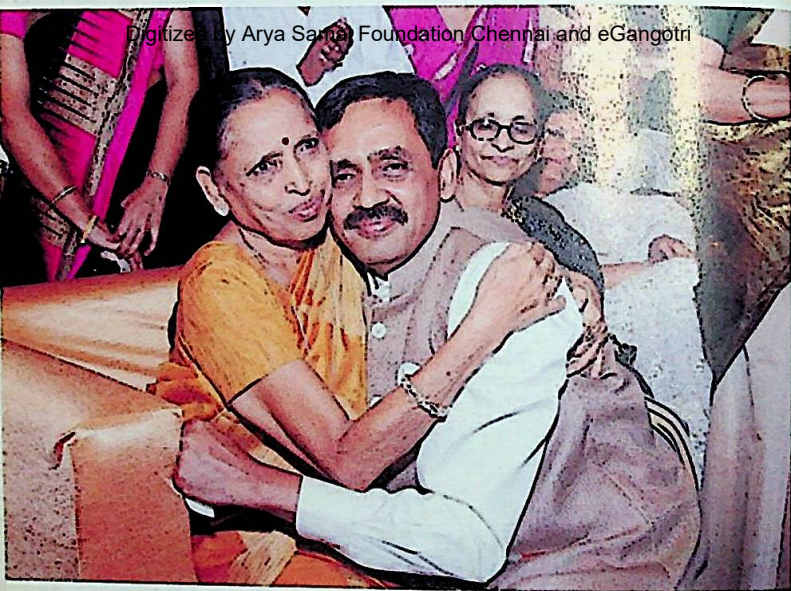
जून २०१४ में अपने पुत्र हिमांशु शेखर के साथ

29 5 2006

मई २००६ में अपने पुत्र प्रभात शेखर के साथ

२०१४ की रक्षा बन्धन

२०१४ में परिवार के बीच
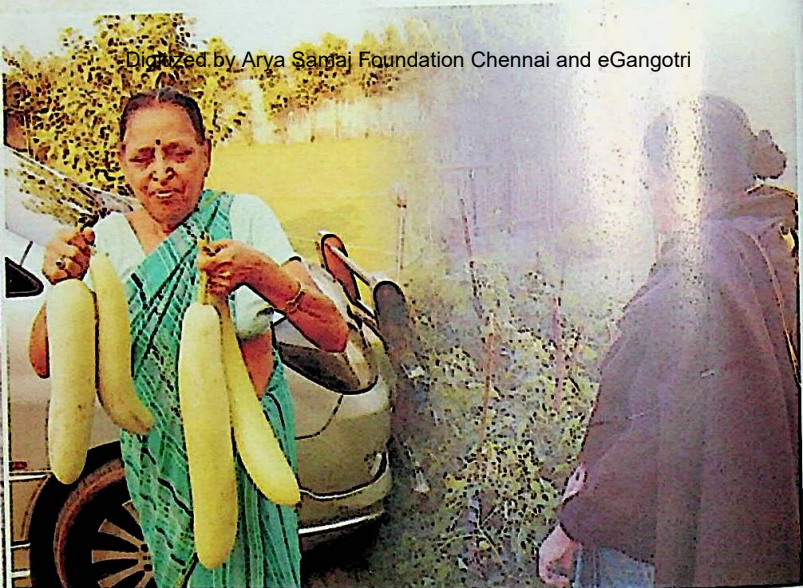
२०१४ में अपने फार्म में उल्लसित

२०१३ में यू०एस०ए० के एक मगरमच्छ फार्म पर

- कर्मशील, आधुनिक, प्रगतिशील एवं विकासशील
- उन्होंने हमेशा सभी को पूर्ण रूप से निस्वार्थ अपनाया।

मैं अपने जीवनकाल में ये ईश्वर से प्रार्थना करता हूं – हे ईश्वर ये सारे भाव जो मेरी मां में थे। उनका मैं पूर्ण रूप से अनुसरण करुँ। मेरी मां के जीवन के इन नियमों को उतार पाया तो मैं समझूंगा कि मां हमेशा मेरे साथ हैं।

पुत्र प्रभात शेखर

आधुनिक एवं साहसी महिला

हमारी मम्मी जी (श्रीमति सुषमा सर्राफ) एक कर्मशील, विवेकशील सेवाप्रधान, विचारों से आधुनिक और बेहद से ज्यादा साहसी और दूसरों को भी विषम् परिस्थिति में हिम्मत देने वाली एक दिव्य शक्ति थीं। मेरे उनके साथ महान्ता का अनुभव किया। उसी का एक छोटा सा अनुभव हैं, एक बार मेरे पति श्री प्रभात जी, की तबीयत काफी खराब हो गयी थी मेरा मन सुबह सुन्दरकाण्ड का पाठ करने को था, पर बच्चे छोटे होने की वजह से शायद कहीं न कहीं हिम्मत नहीं बंध रही थी लेकिन जैसे ही उनको इस बात का पता चला उन्होंने तुरन्त कहां कि सुबह पांच बजे से कल से मैं तुम्हारे साथ पंढूगी फिर हिम्मत और विश्वास दोनों ही दुगने हो गये। लगातार सुबह 4 बजे वो उठतीं थीं नहा धो कर लगातार 7–8 दिन पाठ ही नहीं, समझाया भी, किसी भी कठिन परिस्थिति में उनका पहली लाइन यही होती थी घबराने की जरूरत नहीं, मैं "तुम्हारे साथ हूं" जीवन का ज्ञान और कर्मठता हमने उन्ही से सीखी, मेरी जिन्दगी मैं वो मेरी "श्रेष्ठ गुरू" रहेंगी। ***मनीता*** (पुत्र वधु)

Gayatri Mantra's Mahima

Amma was a Woman of Extreme strength and courage. She Loved Ever one. She was admired as a Friend, Sister, Mother & Grand Mother. One of the Memories about her which I Cherish the most is when she asked me if I Knew Gayatri Mantra and I said Yes. She asked me to recite it. After Which she asked me whether I knew the Meaning of the mantra. To which I shook my head, than she taught me the meaning, which made me realize the power of Gayatri mantra that really hears me to stay calm and collected during stressful times.

Now that you have left us, we will forever hold you in our hearts in which we have truly learnt the most from you. We will always love you and hope that you look down on us with pride. May God bless you.

Varun Gupta (Son in law of Shri Vivek Shekhar)

दयालु अम्मा

बचपन से हम गीता के बारे में सुनते आए हैं। उसमें 18 अध्याय है परन्तु उन अध्याओं से ऊपर एक दादी का अध्याय है जो मैंने अपनी अम्मा में देखा। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को मोह माया के बारे में बताया और उससे ऊपर अम्मा ने हमें दया और मानवता के बारे में बताया। अम्मा में मानवता, दया और समाज के प्रति एक संवेदनशीलता थी, जिसका विवरण करना मेरी 'अम्मा' के लिए सबसे अति आवश्यक है। अम्मा रोज फार्म हाऊस पर परिवार के लिए दूध सब्जियों की व्यवस्था करने जाती थीं। उस फार्म हाऊस से पहले एक छोटी सी झोपड़ी थी जिसमें 2 परिवार रहते थे जिनके 5 बच्चे थे, मैंने स्वयं देखा है की अम्मा उन बच्चों के लिए अपने हाथ से फिरोक

झबले सिल कर ले जाती थीं। ऐसे ही फार्म हाऊस के पहले केयर टेकर के लिए जिसके 3 बच्चे थे, जिनके के लिए स्वेटर, कपड़े बनाकर ले जाती थी। मैने दुनिया को खरीद कर दान देते हुए तो देखा हैं, किन्तु ये मानवता का भाव केवल अम्मा में था।

अम्मा के जीवित रहते हुए मैं एकलौती शादी शुदा घर का बच्चा हूं। मेरी सासू मां जब बीमार हुई तब उनकी सेवा करने की प्ररेणा मुझे अम्मा ने दी। उन्होंने मुझ से कहां "बड़ों की सेवा का फल अवश्य मिलता है।" अम्मा उनके लिए अलग–अलग तरीके का खाना बनाकर भेजती थीं। अम्मा की वजह से मैं कठिनाई के दिनों को पार कर पाई।

मेरे पिता और चाचाओं को बांधने का काम केवल मेरी अम्मा ने किया। उनकी छोटी–छोटी स्मृति हमेशा हृदय में रहेंगी।

स्वाति शेखर (पौत्री)

ऑलराउण्डर अम्मा

अम्मा की शक्सीयत ऐसी थी कि उनके बारे में लिखना मेरे लिए सम्भव नहीं है।

जो अम्मा ने कमाया है अपने आचार विचार दृढता सौम्यता और कर्मों से उसका एहसास मैं कर सकती हूं। जब भी कोई भी व्यक्ति मुझे मिलता है जो उनसे सम्पर्क में था। अम्मा एक ऑल राउण्डर थीं, इस लिए नहीं होना चाहिए बल्कि यह सब गुण उनमें कुदरति थे। सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने मैं सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। मैं पूरी कौशिश करूंगी कि में अम्मा के जीवन को केवल दूर से ना सरहाते हुए, उनके सभी पहलुओं को अपने जीवन में उतारूँ। जब मैं छोटी थी मुझे अम्मा से बहुत डाँट पड़ती थी, क्योंकि मैं बहुत शैतानी करती थी। दीवारों पर लिखने से लेकर किसी

के घर जाने पर समान तोड़ने फोड़ने तक सब। दरअसल मुझे तो याद नहीं पर अम्मा बताती थीं, जब एक बार वह मुझे सुजाता अम्मा जी (अम्मा की छोटी बहन) के घर ले गयीं तो मैंने बहुत सारी काजू बर्फी खा ली, अम्मा ने मुझे धीरे से मना किया पर मैंने नहीं सुना। तब उन्होंने बाथरूम में ले जाकर डाँट लगाई कि किसी के घर ऐसे नहीं करते। मैंने मानने, रोने, गुस्सा करने की जगह अम्मा से कहा" अम्मा आप बहुत डाँटती हो, भई हम अगली बार से आपको लेकर नहीं आयेंगे"।

अम्मा 20 साल बाद भी वह किस्सा सुनाकर खिलखिलाकर हंसती थी। वह जहां भी हों इसी तरह खिलखिलाती रहें।

आरती शेखर (पौत्री)

My Friend Amma

Me and Amma shared a very special bond. she was my inspiration and my guide. She is the most important and influential person in my life. Her loving and caring attitude made everyone love her back.

Amma has taken care of me since my birth. And I wish I could have done even half of what she has done for me. She taught me to face the failures of life and always believe in myself.

Every moment spent with Amma is a cherished memory. I remember when Amma was supposed to come to USA for our graduation ceremony, in September 2013. Papa called me a couple of weeks before the travel date to tell me that Amma was not feeling too well, and her hemoglobin was very less. (Amma had a liver condition). Her hemoglobin was 6. At such low level of hemoglobin a person can not even walk properly. Then two units of blood was transfused and She was asked to take rest and recover for next one month. But Amma because of her love, strong will

power and opthmism regained her strength in 10 days only and came all the way to US, and never did any of us feel that she was weak. That was the strength of her persona.

Because of Amma, I have never visited a doctor alone. She was always by my side comforting me. This one time when I was suffering from jaundice and my taste buds were going crazy and I used to be very cranky for food. So encourage and motivate me to eat food, Amma would sit and have the same food with me. I call this Amma's Love Trick. She was always able to motivate and guide me through her love and caring ways rather then force.

Even while Amma was in the Hospital, she never lost her sense of humor and spontaneity. While she was in hospital once, I used to be there everyday during the day time. There was this one day I could not go to visit her, so I called up Himanshu Chacha to check in, Chacha handed the phone to amma, she was out of breath and exhausted I asked her as to how was she feeling... then instead of telling me about her well being, she communicated her feeling of missing me in her very signature style.."Deepti tu to satak lee". That was her way to remain relaxed in any kind of situation.

As I had been living with her since 2011 as we all had shifted to Noida from Meeut, I feel endlessly fortunate that I was able to be with her constantly. Amma was a very independent person and always wanted to do all her daily routine works by herself. My chance to be with her during her last days are specially blessed as I could help her in her routine work. Though I never realized that those days would turn out to be our last days of togetherness when she was in and out of the hospital for 3-4 days for 3-4 times in last 2 months since September 2014 beginning.

She loved her family so much that even when she was unable to speak clearly, yet she was eager to speak to everybody.

Amma taught all of us by example to be strong. Amma's generosity and love for family knew no bounds. Amma was an epitome of positivity and affection. I would thank her for all that she has done for us and wish her soul and warmth to guide and be with us forever. Iove you Amma.

Deepti Singhal (Grand Daughter)

Amma Namastey,

This is What I would always say when I met amma in a very happy joy ful manner and would get a warm loving reply "Jeetay raho ". This reply is what i'm going to Misses the most. She would always make miss roti on her own when I visited her in meerut and would sit with me and serve it with homemade butter. Then in the evening before going to the showroom she would prepare "bail ka sharbat" for me with loads of ice.Amma always put our health first. She would always suggest some homemade remedy whenever she figured that something was bothering me, be it sore throat or fever or any little thing. And these remedies would always help (I am never forgetting any of them) and i tell my friends to try the same confidently.

When I reminisce I cant recall a single dull moment with amma. All the time she would interact with you and you would always feel loved and blessed. She was always worried about me being an introvert when with outsiders and always encouraged me to speak up and not be scared. I really thank her for this support as it has really helped me to be a more interactive person. This is the love and care she showed for each person of her family and I am really proud to be her grandson.

She would love to have us massage her head and legs lightly while we watch TV with all the kids around her. Also her love for "Churan Chatni" has been liked by everyone as we would get to eat different tasty things.

She was a family person and only wanted that all of us should stay together and share each others joys and sorrows.

Wish for her blessings to be upon us forever and hope we make her proud in whatever we do and follow her values and share with our loved ones.

Mohit Grand Son

मेरी अम्मा के साथ बहुत सारी यादें जुड़ी हैं। अम्मा के साथ बी.सी. लाईन्स जाना उनके साथ चिपककर सोना, जब भी मैं बिमार हुई हूं अम्मा हमेशा मेरे साथ होती थी। चिकिन पॉक्स, डेंगू, वे हर बार मेरे पास बैठी हुई होती थीं।

मेरा पहला विदेशी ट्रिप, सिंगापुर, भी अम्मा के साथ था। मेरे को जब कि याद है जब मैं मेरठ में थीं तो अम्मा मेरे से रोज अपने बाल बनवाती थी, और पाउडर लगवाती थी। मेरे को उस समय बाल बनाने नहीं आते थे। पर वो हमेशा " कितनी अच्छी चोटी बनाई है।" बोलती थी और उसी चुटिया से जूड़ा गूंध लेती थी।कितनी प्यारी थीं मेरी अम्मा

अम्मा के हाथ का मिर्च का अचार और उनका अन्कडिशनल प्यार मेरे को हमेशा याद आयेगा।

अम्मा ने जितना हमें प्यार से बिगाड़ा है उतना ही समझाकर सम्भाला भी है।

Thankyou Amma for giving us so much love and effection.
We all really miss you.

सुरभि शेखर (पौत्री)

My Inspiration for Life

Amma is one person who would always be my inspiration. She was the type of person everyone wanted to be around. She used to put a smile on our faces, even without trying. She was loveable , caring and had a strong will power. The very strength of togetherness of our family is Amma. She has given us such strong family values that we can't but live together.

She always encouraged me to do what I love , whether it be to pursue higher studies or excel in sports. Whenever I think of

Amma, a wave of positivity runs through my body.
She was a very interesting and an "interested" person. She never missed an opportunity to try new things or meet and establish a connect with people from different cultures.
While we were on one of the holidays to USA. One incident tells a lot about her ability to connect to anybody. On Miami beach, in a park, we all were strolling for a while and Amma showed her unwillingness to walk any further. We all were hungry too. So I asked Amma to sit on a bench and I went to grab a quick bite while Amma was in the park. When I returned with the food in about 15-20 minutes, I didn't find Amma at the spot where I had left her, I searched for her and found her sitting next to a lady and to my surprise Amma was playing her Kongo Drum. Later she told me that after I left she felt bored and strolled around and saw this lady who was playing Kongo drums. She went upto her and spoke to her but Amma could not speak her language and the drum player could not speak Amma's language. Still through facial expressions and bodily gestures they both established a connect and the drum player offered Amma to play her drums. That was THE connect of humanity. That was the kind of humane attitude my Amma had only which could help establish such bond and relation with absolute strangers having nothing in common.
Amma we all miss you a lot. I know you'll always guide us in life, like you always have. Amma's gone but she will always be in my heart.

Madhurima Shekhar
Grand Daughter

Our Benevolent, Amma

Amma to me meant a bond of love, affection and care. She was one of the most wise and selfless person I have met in my life. She was the one whom I could count on. The best and the most fulfilled moment of my life was with Amma.

When I was 3-4 years old I had to get a blood test done. I went to the clinic with Amma, Papa and Mommy. But only Amma came with me to the sampling room. I was horrified when I saw the Needle of the injection and I started crying but there She was. She gave me courage and convinced me and I was settled. She held my hand and when the doctor inserted the needle, she pressed my hand a bit hard as if she was feeling the pain not me.

My first trip abroad to Australia was special as Amma was an Important part of it. My parents had not gone with us. Other family members were there like my Taujis, taijis and brothers and sisters elder to me. I was the youngest member of the group. But Amma was always with me and taking care of everything of me. Amma also helped me to arrange my suitcase.

Once we went to the sea beach for swimming. That was my first experience of a sea beach and I was really scared. To encourage me Amma also went into water and helped me get over the fear of beach water and waves.

She would always come to encourage me with her lovable ways of persuasion and explaining, be it Ganga ji in Haridwar and swimming pool of our Noida farm.

She taught me a lot and Amma is the main reason I love animals like cows and dogs. Amma did a lot for me and made hand woven sweaters and made delicious dishes at home.

Amma cared for me a lot and whenever I would go to meet her in Noida, her first sentence was..."Kuch Khaa le, kitna patla ho raha hai.." and then would make something for me. I love and respect her a lot for her love and care for me.

All I can say that she is the best grand mother I could get...Love you Amma.. Forever.

Ashutosh Shekhar
Grand son (14 Years)

Har Har Gange

Whoever it is, sometime or somewhere leaves a message. My dear Amma is a special one. She passed away leaving her blessings, learning and some messages which have inspired me a lot. And I would love sharing them.

Respecting elders was her life motive and main principle. She taught me about her flowers and vegetables in her farm. She taught me the love for cows...LOL... She taught me the trust and faith for God. The bravery in her scared me. She was a true star and one of a kind.

She followed her religion and rules very strictly and religiously.

I still have this one sweet memory for her and me where I would come beside her while sleeping she would hug me instantly. In Meerut every evening I would take a comb make her sit on the bed

and start combing her hair. Every morning she would give me bath saying." Har Har gange", these exact words are in my mind and heart.

Amma's part in Arya Samaj and in my life was substantial. She meant a lot to me.....

Supriya Shekhar
Grand Daughter(11 Years)

The Family Mentor, Amma

Amma gave us everything, love, joy and many more things. I wish I could give her one thing and the thing that I wish to give her is ...Happy journey ahead.

After Baba ji she handled everybody and never gave up on her family. She led everybody to a better future and supported everybody in difficult times. She never differentiated between us anad treated everybody equally.

Our Amma was really a religious person and believed in God. She had faith in God and we have faith in her. When I see up in the sky at night, there is one star that is shining really bright and leading us on the right path and making our future better and that's for sure is Amma.

I do not know where people go when they die, I do not know if there is someone who takes care of them but if there is someone who takes care of them, we better telll him that he should take extra care of Amma and treat her like a Queen because our Amma is a special one.

Amma is our God and our true teacher.

Uday Shekher
Grand Son (9 Years)

आपकी ये यात्रा मंगलमय हो!

मैं आदित्य शेखर अपनी अम्मा को बहुत प्यार करता हूं। मैं 8 साल का हूं आप 74 साल की हो आप मेरे से 66 वर्ष बड़ी हैं। इन आठ सालों में आपने मुझे बहुत प्यार दिया है। आप हमें घर पर बहुत प्यार से रखती थी। वो हमें हमारी शैतानियों पर डांटती नहीं थीं, लेकिन गलत बात पर जरूर समझाती थीं। वो हम सब बच्चों को बहुत प्यार करते थीं। आपने हमेशा यही प्रयत्न किया कि घर के सभी सदस्य मिलकर रहें और खुश रहें।

आपकी ये यात्रा भी मंगलमय हो।

आदित्य शेखर (8 वर्ष पौत्र)

२०१० में अपने एक शोरूम का उद्घाटन करते हुए
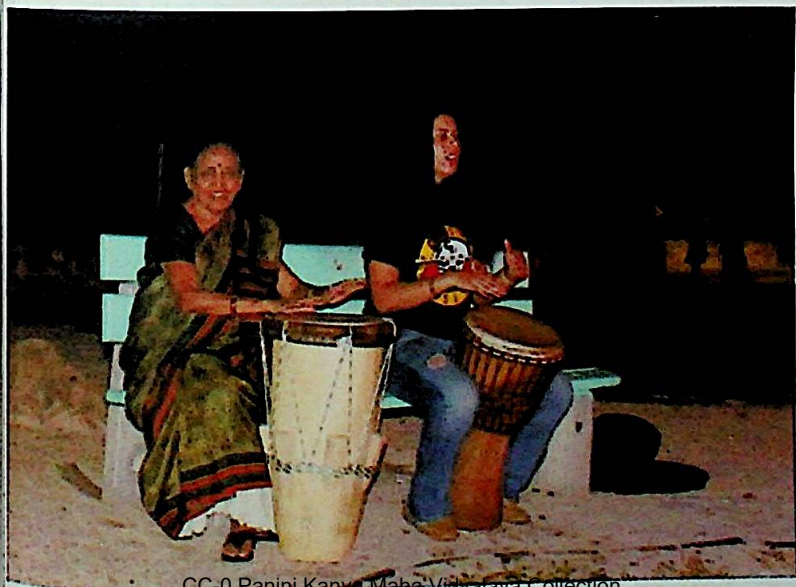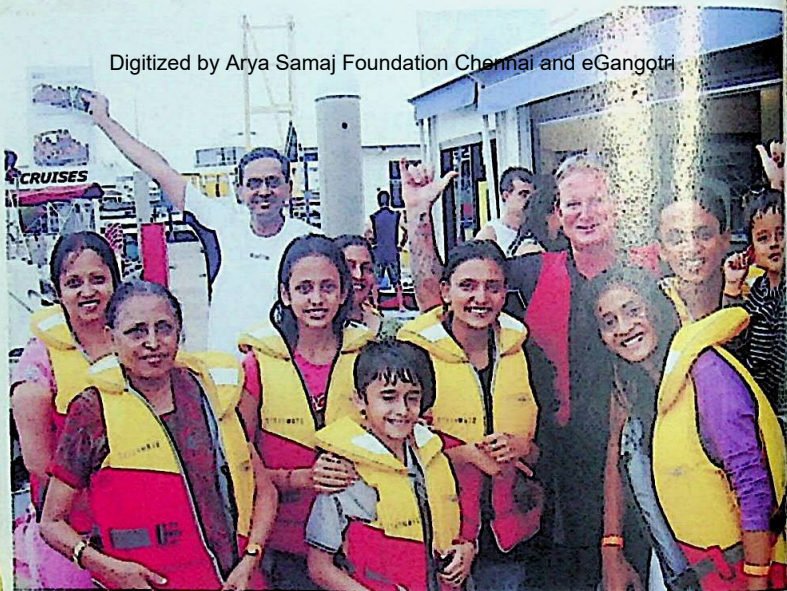
२०१३ में Miami USA Beach पर

२००९ में आस्ट्रेलिया में Speed Boat में बच्चों के साथ

२०११ में अपनी पौत्री आरती शेखर के साथ

२०१२ में अपने पौत्र मोहित एवं श्रीमती राज गर्ग (समधन)के साथ

२००९ में परिजनों के साथ आस्ट्रेलिया में समुद्र स्नान
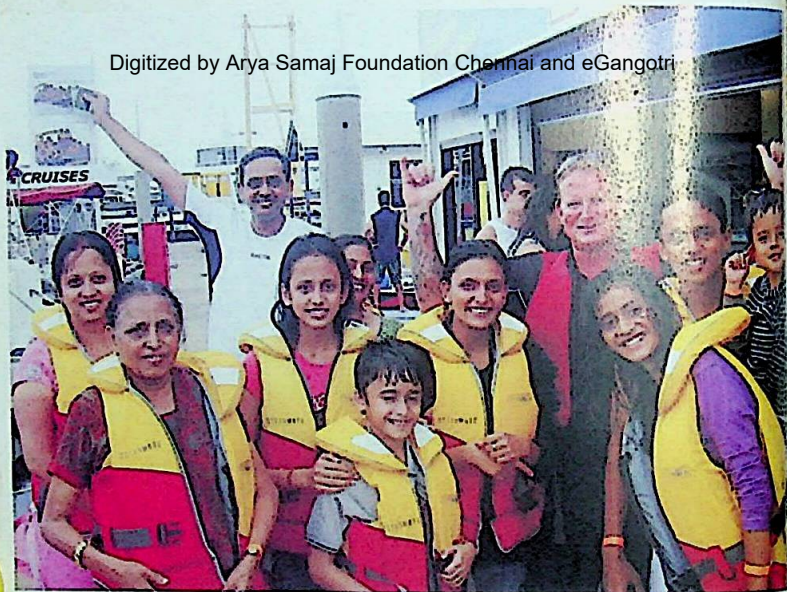
२००९ में आस्ट्रेलिया में Speed Boat में बच्चों के साथ

२०११ में अपनी पौत्री आरती शेखर के साथ

२०१२ में अपने पौत्र मोहित एवं श्रीमती राज गर्ग (समधन)के साथ

२००९ में परिजनों के साथ आस्ट्रेलिया में समुद्र स्नान

२०१३ का एक आनन्दित क्षण

२०१३ में अपने पौत्र आशुतोष के साथ
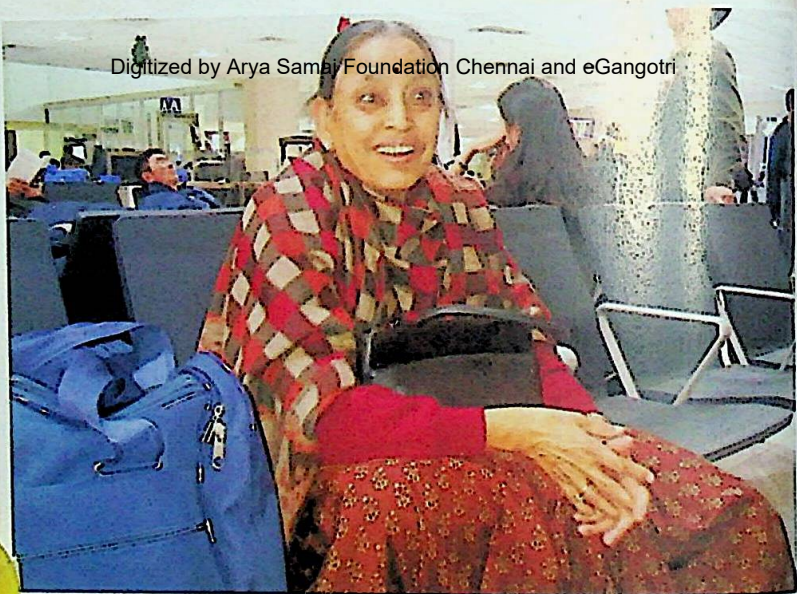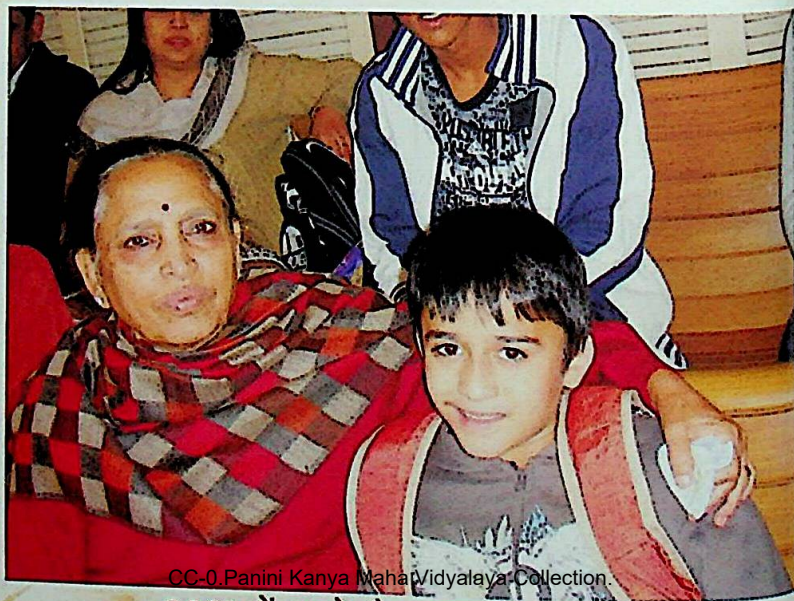
साहस, निडरता, धैर्य से परिचय कराया था

मां बन कर जिसने दुलारा था।
सखी बन कर मार्ग दिखाया था।
बहन बन कर किया प्रताड़ित
साहस, निडरता, धैर्य से परिचय कराया था

ऐसी थी मेरी बहन, सुषमा, मेरे से केवल दो ही वर्ष बड़ी थी परन्तु सोच विचार में बहुत ऊंची। मेरे पति एवं पुत्र की मुत्यु के बाद उस कठिन समय में ऐसा कसकर मेरा हाथ पकड़ा था जिसकी पकड कभी ढीली नही पड़ी। हर परिस्थितियों में मेरे साथ चट्टान की तरह खड़ी हो जाती थी।

प्रभु की इस पवित्र आत्मा को में ही सजोकर नही रख पायी और वो बीच रास्ते मे ही हाथ छुड़ाकर चली गयी।

यही प्रार्थना है कि जहां रहें, चन्द्रमा की तरह चमकती रहें।

प्रतिभा (बहन)

घने वृक्ष की छाया

सुषमा जीजी हम सब भाई बहनों में सबसे बड़ी थीं। जब से मैने होश सम्हाला उनको सदैव मां के रूप में ही देखा था। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी मुस्कुराते हुए देखा था। हम सबको विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की शिक्षा देती रहती थीं। ममता, दया व ईमानदारी उनके चरित्र की विशेषताएं थीं। जब कभी भी मैं बीमार हुआ सबसे पहले उनका फोन आता था और मेरी तबियत के बारे में पूछती थी यह एक प्रकार का मेरे प्रति उनका भावनात्मक जुड़ाव था।

परन्तु असीम दुख है कि उस घने वृक्ष की छाया प्रभु ने बहुत जल्दी हम पर से हटा ली।

जैसी ईश्वर इच्छा

राकेश, उषा एवं नीता
(भाई एवं भाभियां)

परोपकारी बहन

हमारी बड़ी बहन सुषमा जीजी ऐसे व्यक्तित्व की मालकिन थीं जो ईश्वर बहुत कम लोगों को प्रदान करते हैं।

गुणों की खान, दूसरों की सेवा करने के भाव से ओत प्रोत, और सबके सुख दुख में काम आने वाली, ऐसी थीं हमारी बड़ी बहन।

जब हमारी मां ये संसार छोड़कर गयीं हम भाई बहन अकेले हो गये परन्तु जीजी के होते हुए हमें हमारी मां की कमी कभी महसूस नहीं हुई।

भाग्य की धनी हमारी लाडो बहन जिन्होंने बचपन से ही सबका प्यार दुलार पाया अपने मां बाप की लाडली बेटी थी।

अपने सास ससुर की कर्तव्य और कर्म से परिपूर्ण बहू थी। अपने पुत्रों, बहुओं एवं पौत्र पौत्रियों की स्नेहीपूर्ण दादी थी। हम भाई बहनों में सबसे बड़ी इन मां रूपी बहन ने सबका भरपूर प्यार और आदर पाया।

भगवान से हाथ जोड़कर यही प्रार्थना है कि अगले जन्म में भी हमें उनका साथ मिले।

सुजाता (छोटी बहन)

कर्तव्य की मिसाल

मेरी मम्मी जी स्व. श्रीमति सुनीता गोयल के भाई बहनों में सुषमा मौसी जी सबसे बड़ी बहन थीं और मेरी मम्मी जी बहन नम्बर 3 थीं। हालाकिं इन दोनों में शायद 4–5 साल का ही अन्तर था परन्तु मैने बचपन से ही मेरी मम्मी जी को सुषमा मौसी जी को मां समान प्यार एवं आदर देते हुए देखा है। इन लोगों का प्यार पूर्ण स्वच्छन्द व्यवहार था।

जब आज से 30 साल पहले पोस्टिंग बिजनौर में थी तब मेरे

छोटे भाई श्री अपूर्व गोयल के जन्म का समय आया तब सुषमा मौसी जी ने बड़ी बहन के कर्तव्य से बढ़कर एक मां के कर्तव्य भाव के अनुरूप बिना किसी की बात सुने मेरी मम्मी जी को मेरठ ले आयीं। अपने घर में रखा एवं सबसे अच्छी डाक्टरी एवं नर्सिंग होम की सुविधा के बीच मेरे छोटे भाई का जन्म हुआ। ऐसी ममता एवं कर्तव्य की मिसाल थीं मेरी सुषमा मौसी जी

मेरी मम्मी कहती थी कि सुषमा जीजी हम सबके लिए आदर्श हैं अपनी चारों बहुओं को बेटियों की तरह रखती हैं।

मुझे याद जब एक बार मौसी जी नवरात्र के दौरान अलीगढ़ हमारे घर आई थीं। आर्य समाजी विचार की होने के कारण वे नवरात्र के कोई व्रत नहीं रखती थीं। परन्तु हमारे घर के रीति रिवाजों की मर्यादा को ध्यान में रखते हुए उन्होंने हमारे साथ पूरे तरीके से व्रत रखा एवं उस उत्सव में वातावरण को और भी बल दिया। दूसरों का मन एवं मर्यादा बनाये रखने की यह एक छोटी सी परन्तु उनके व्यक्तित्व के बारे में बहुत कुछ कहने वाली घटना हैं।

मुझे नृत्य का शौक है जब भी हम परिवार के सभी लोग प्रयोजन से इक्कठे होते थे सुषमा मौसी जी सबसे पहले मुझसे नृत्य करने का अनुरोध करती थीं। बड़े ही चाव से पूरे मौके का आनन्द लेती थीं। आज मैं सोचती हूं कि अब मुझे नृत्य करने को कौन कहेंगा। मेरे जीवन की यह कमी शायद ही कोई पूरी कर पाये।

स्वाति गुप्ता (पुत्री)

If I was to take out one thing from the time I spent with her in all the years is that in her company I always felt positive. If someone I shared my thoughts on something specific, she would really listen and explain in a fashion that worried would vanish. She could really understand your thoughts and for this reason whenever I was with her, I felt really comfortable. She was always composed and confident in her own way and sort of passed that on. Even in the last conversation I had with her, she told me that she had a lot of will power and beyond all these great attributes and not to be missed was her grace which she always carried.
Dear Bua I will always remember you very very fondly and your smiling image with the twinkle in the eyes will always remain with me.
Apka Gogi.

Gaurave Gupta
Grand Son

Giving, helpful, loving, caring and kind is what defines her.
Her soul is made of pure love, yet she is worth way more than gold.
For all she has done, I will forever be thankful, and my love for her only grows more with each day that passes. The memories I would forever cherish for they are priceless.
Will miss you a lot Badi Mausiji

Radhika (Grand Daughter)

बाबा रामदेव की माता जी

बाबा रामदेव जी से हमारे परिवार का परिचय मेरठ में उनके योग कैम्प की वजह से सन् 2005 में हुआ था। बाबा रामदेव हमारे घर ही ठहरे थे। तभी से वो मेरी मां को मां जी कहकर ही बुलाते है। मेरी मां के हाथ के बने खाने एवं उनके निर्मल स्वागत सत्कार की भावना ने बाबा को मेरी मां से किस तरह से जोड़ दिया इस बात का एहसास हमें उस दिन हुआ जब कई साल पहले दिल्ली से हरिद्वार जाते वक्त बाबा बिना पूर्व सूचना के हमारे घर आ गये, और मेरी मां से बोले,"मां जी खाना दो" आनन्द से ओत–प्रोत मेरी मां ने आन फान में खाना बनाकर खिलाया। तब से अब तक ये घटना कई बार हो चुकी है। बाबा का मां के प्रति इतना आदर एवं प्यार है की 28 अक्टूबर 2014 को जब हम हरिद्वार में मां की अस्थियां विसर्जित करके आ रहे थे। तो वापसी में बाबा रामदेव से मिले। बहुत सी बातों के बीच उन्होंने हमें समझाया कि ये ना समझना की माता जी नहीं तो मैं तुम सबका ध्यान नहीं रखूंगा।

२००८ में बाबा को भोजन कराते हुए

२०१३ में दिल्ली में मायके एवं ससुराल पक्ष के सदस्यो के साथ
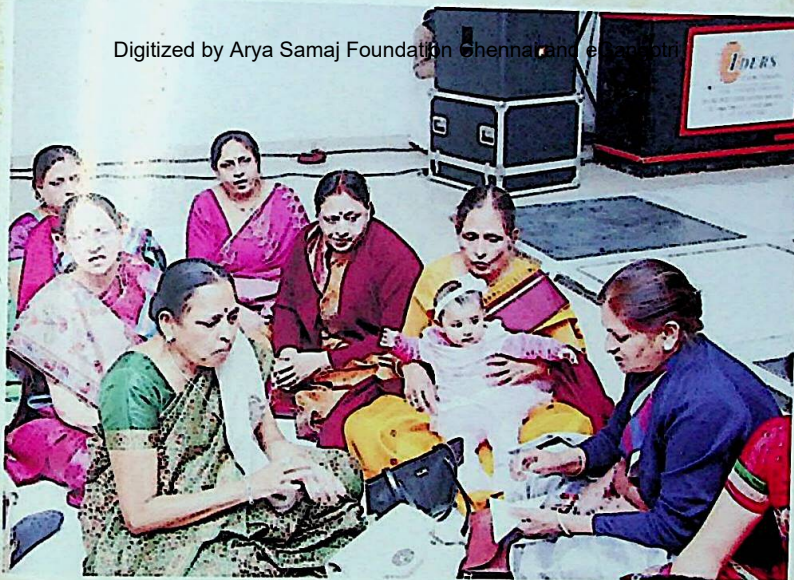
२०१२ में अपनी बहनों के साथ
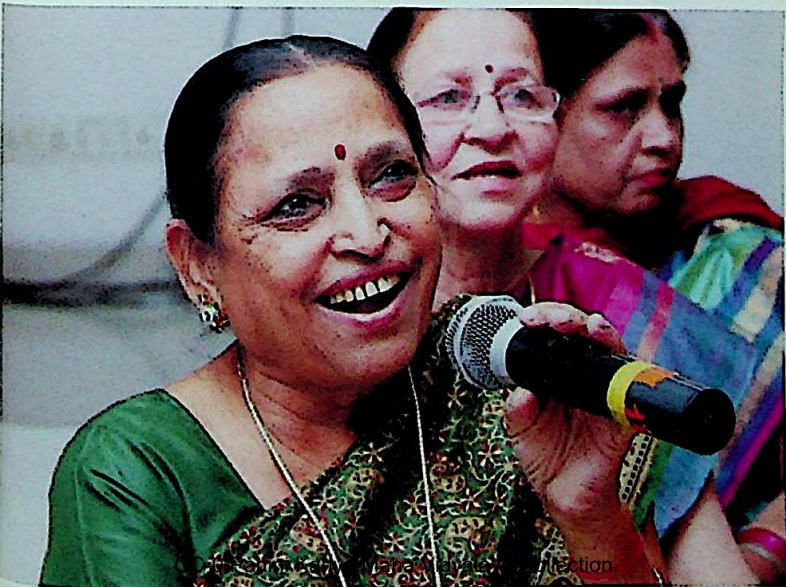
२०१२ में गायन

२०१२ में बहनों श्रीमती सुजाता जायसवाल एवं श्रीमती प्रतिभा गुप्ता के साथ

२०१२ में मेरठ के घर पर
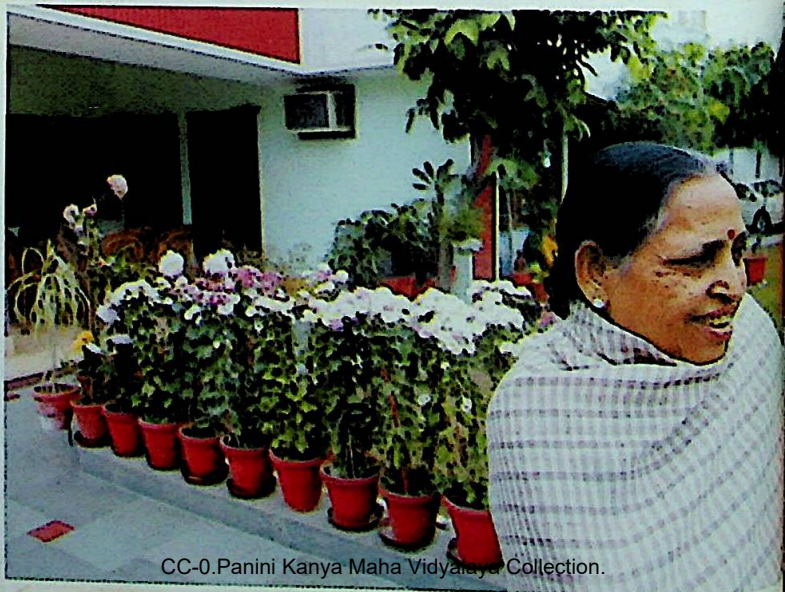
२०१३ में अपने भतीजे गोरव गुप्ता के साथ

२०१२ में अपनी बहन श्रीमती सुनीता गोयल के साथ

२०१३ में नियाग्रा फाल्स पर

२०१२ में अपने पौत्रों-पौत्रियों के साथ नोएडा दुकान पर

नित्य कर्म विधि

आर्य समाज के नियम

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्रा और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहें।

नित्य कर्म

प्रातः काल ब्राह्म-मुंहूर्त में ४ बजे उठकर प्रातः स्मरणीय प्रार्थना, मंत्रों व भजनों का उच्चारण करें। प्रार्थना के पश्चात् उस दिन के करने योग्य कर्मों का विचार करें। माता-पिता के चरण छुए तथा नमस्कार करें। तत्पश्चात् शौचादि से निवृत्त होकर सपरिवार वायु-सेवन के लिए घर से बाहर भ्रमण करें। लौटकर हल्का व्यायाम कर स्नान करें।

तत्पश्चात् सपरिवार, संध्या, अग्निहोत्र भजन गान तथा स्वाध्याय करें। वृद्ध, स्त्री-पुरुष, युवा, बालक सभी को प्रतिदिन स्वाध्याय करना चाहिए। आलस्य त्यागकर ये सब कार्य प्रातः ७ बजे तक सम्पन्न कर लेवें।

इसके पश्चात् सपरिवार यथा सामर्थ्य अल्पाहार करें। फिर अपने दैनिक काम में लग जायें, कोई कार्य धर्म विरुद्ध न करें। भोजन का समय दस-ग्यारह के मध्य का उचित है अथवा जैसी सुविधा हो। भोजन से पूर्व पितृ यज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ करें तथा भोजन के समय के मंत्र का पाठ करके भोजन करें। यदि कोई अतिथि आ जाये तो पहले उसको भोजन करावें। तीसरे पहर फल अथवा दूध का हल्का भोजन करना चाहिए। सायंकाल को भी संध्या हवन करना चाहिए। रात्रि का भोजन आठ बजे कर लेना चाहिए।

कभी-कभी आर्य परिवारों को निमंत्रण देकर पारिवारिक सत्संग भी करने चाहिए। सत्संग संतानों में सदाचार और धर्म के संचार का अच्छा साधन है। सोने से पूर्व माता-पिता बच्चों के हाथ-मुँह धुलाकर उनसे सोते समय के प्रार्थना मंत्रों का उच्चारण करावें। माता-पिता के चरण स्पर्श कर नमस्कार करके सो जावें। इन कर्मों के करने से दीर्घायु, उत्तम आज्ञाकारी संतान तथा धन की प्राप्ति होती है।

प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में दैनिक सत्संग प्रातः ६ बजे से ७.

३० बजे तक तथा साप्ताहिक सत्संग रविवार को प्रातः ८ बजे से १० बजे तक होते हैं। ग्रीष्मकाल में यह सत्संग १ घंटा पूर्व आरम्भ होते हैं। सब भाई-बाहिनों से निवेदन है कि निकट के समाज मन्दिर में सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठावें।

प्रातः स्मरणीय मन्त्र

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं, प्रातस्सोममुत रुद्रं हुवेम ॥१॥

अर्थ—*हे ज्ञान स्वरूप, सकलैश्वर्य दाता सूर्य-चन्द्रादि के रचयिता, समस्त ब्रह्मांड के पालनकर्त्ता जगदीश्वर ! आप सर्व जन सेवनीय, शुभ-कर्म प्रेरक रोग-शोक नाशक अन्तर्यामी हैं, हम इस प्रभात वेला में आपकी स्तुति करते हैं।*

ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम, वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।
आध्रश्चिद्यंमन्यमानस्तुरश्चिद्, राजाचिद्यंभगंभक्षीत्याह ॥२॥

अर्थ—*हे सर्वशक्तिमान्, महातेजस्विन् जगदीश्वर ! आपकी महिमा अपार है। आप ही समस्त सृष्टि के कर्त्ता, धर्त्ता एवं भर्त्ता तथा प्राणियों के कर्म, स्वभाव के ज्ञाता हैं। हे महासमर्थ प्रभो ! इस प्रातः वेला में हम आपका स्मरण करते हैं।*

ओं भग प्रणेतर्भग सत्यराधो, भगेमां धियमुदवा ददन्नः।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वै र्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥३॥

अर्थ—*हे भजनीय सर्व उत्पादक, ऐश्वर्यप्रद प्रभो ! आप हमें सद्बुद्धि प्रदान कर हमारी रक्षा कीजिये। गौ-अश्वादि देकर हमारी समृद्धि को बढ़ाइये तथा वीर एवं विद्वान् पुरुषों से संयुक्त कीजिये जिससे हमें किसी प्रकार का कष्ट न हो।*

ओं उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत, प्रपित्व उत मध्ये अह्नाम्।
उतोदिता मघवन्सूर्यस्य, वयं देवानां सुमतौ स्याम ॥४॥

अर्थ–*हे परम पूज्य परमात्मन् ! आपकी कृपा तथा अपने पुरुषार्थ से शीघ्र ही हम ऐश्वर्ययुक्त एवं बलवान् होंवें। आपकी कृपा तथा विद्वानों के सदुपदेश से हम सुखी रहें।*

ओं भग एव भगवाँ अस्तु देवा स्तेन वयं भगवन्तः स्याम।
तंत्वा भग सर्व इज्जोहवीति, स नो भग पुर एता भवेह ॥५॥

अर्थ–*हे सर्व भजनीय, सर्व सेवनीय परमेश्वर ! आप से हम भाग्यवान् हों तथा आपका बारम्बार स्मरण करें। आप ही हमारे प्रेरक बनकर हमारा उद्धार करें।*

प्रातः स्मरणीय भजन

उठ भोर भई त्यागो निद्रा, अब ईश-भजन की बेला है।
प्रभु परमेश्वर में ध्यान लगा, जो सच्चा सखा सहेला है ॥
शुद्ध शीतल सुन्दर सुगन्ध भरी, वायु चलती आनन्द भरी।
देखो उषा, पक्षी चेते हैं, गुणगान करें जगदीश्वर का।
तू भी जाग उठ-गुण गा, बना आलस का क्यों चेला है ॥
मानव का चोला है तेरा, ईश्वरभक्ति से सफल बना।
प्रभुभक्ति बिन यह चोला भी, इक माटी का ही ढेला है ॥
धन, जन, बल, तन ना साथ चले, शुभ कर्म कमा इस चोले से।
आया था अकेला दुनिया में, जाना भी तुझे अकेला है ॥
ऐ बन्दे सोच, विचार जरा, मोह-माया में क्यों फँसा रहा।
यह बात सदा रख सम्मुख तू, यहाँ चार दिनों का मेला है ॥

'सेवक' ऋषियों के सत्संग से, तू आत्मा अपनी शुद्ध बना।

जप-तप से जीवन को चमका और झूठा छोड़ झमेला है ॥

भोजन के समय का मन्त्र

ओं अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यानमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिष, उर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ॥

अर्थ–*हे अन्न के स्वामिन् देव ! आप हमें रोग नाशक, बलवर्द्धक अन्न देकर हमारा उद्धार कीजिये तथा हमारे सेवकादि तथा पशु आदि में पराक्रम धारण कराइये।*

सोते समय के मन्त्र

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकम् तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥१॥

अर्थ–*जो दिव्य गुणों वाला मन जागते तथा सोते समय दूर जाने वाला, इन्द्रियों का प्रकाशक है वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।*

ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो, यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः।
यदपूर्व यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२॥

अर्थ–*जिस मन के द्वारा कर्मनिष्ठ और मननशील यज्ञों में तथा धीर गम्भीर पुरुष युद्धों में अपने इष्ट कर्मों को करते हैं तथा जो प्राणियों के भीतर पूजनीय हैं वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।*

ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च, यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।
यस्मान्नऋते किञ्चन कर्म क्रियते, तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥३॥

अर्थ–*जो मन बुद्धि उत्पादक, स्मरण शक्ति का आधार तथा सर्वकर्म-साधक है। प्राणियों में धैर्य स्वरूप प्रकाशमान है। वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।*

ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्।
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता, तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥४॥

अर्थ—*हे सर्वेश्वर ! जिस नाश रहित मन से भूत, भविष्य और वर्तमान का ज्ञान होता है तथा जो पांच ज्ञानेन्द्रिय, अहंकार तथा बुद्धि द्वारा सम्पादित जीवन-यज्ञ का अधिष्ठाता है। वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।*

ओं यस्मिन्नृचः सामयजूꣳषि, यस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः।
यस्मिँश्चितꣳसर्व मोतं प्रजानां, तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥५॥

अर्थ—*हे परमात्मन् ! जिस मन में चारों वेद रथ के पहिये के धुरे में अरे के समान विद्यमान हैं। जिसमें प्राणियों के सब विचार आते जाते हैं। वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।*

ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव।
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥६॥

अर्थ—*जो मन मनुष्यों को उसी प्रकार इधर-उधर ले जाता है तथा वश में रखता है जिस प्रकार अच्छा सारथी घोड़ों का इधर-उधर ले जाता है तथा रस्सियों द्वारा नियंत्रण में रखता है। जो हृदय में स्थित, जरारहित तथा अतिशय गमनशील है वह मेरा मन अच्छे संकल्प वाला हो।*

ओ३म्

वैदिक संध्या (ब्रह्मयज्ञ)

विधि—शौच, वायु सेवन, दन्त धावन, तेल मर्दन तथा स्नान करके पवित्र मन और एकाग्र चित्त हो एकान्त स्थान में आसन लगाकर प्रतिदिन दोनों समय प्रातः सूर्योदय से पूर्व सायंकाल शुद्ध पवित्र हो सूर्य

अस्त होने पर रात और दिन की सन्धि वेलाओं के समय सब मनुष्यों को परमेश्वर की स्तुति करनी चाहिए। जिस प्रकार शरीर के लिए भोजन आवश्यक है वैसे ही अन्तःकरण की शुद्धि, आत्मिक बल, चित्त की स्थिरता, आत्मोन्नति, अभिमान-नाश, बुद्धि की तीव्रता एवं ईश्वरीय ज्ञान के लिए परमात्मा की उपासना, सन्ध्या भी आवश्यक है। प्रातःकाल पूरब दिशा को तथा सायंकाल पश्चिम दिशा को मुँह करके बैठें। सब ओर से मन हटा कर परमात्मा के स्वरूप में मन को स्थिर करें यदि किसी प्रकार का आलस्य हो तो सिर और नेत्रादि पर जल से मार्जन करें, आरम्भ में कम से कम तीन प्राणायाम करें अर्थात् भीतर की वायु को बलपूर्वक निकाल कर यथाशक्ति बाहर रोक दें और शनैः शनैः ग्रहण करके कुछ देर भीतर ही रोक के बाहर निकाल दें, और वहाँ भी कुछ देर रोकें, इस प्रकार क्रम से तीन बार करें, इससे आत्मा और मन की स्थिति स्थिर होगी।

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्॥ (इस मन्त्र से शिखा बंधन करें)

अर्थ–*हे प्राणों के प्राण, दुःख-निवारक, सुख-स्वरूप परमात्मन्! आप सकल जगत उत्पादक, सर्वश्रेष्ठ, पाप-विनाशक और दिव्य गुणों के केन्द्र हैं। हम आपका ध्यान करते हैं। आप हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करें।*

आचमन मन्त्र

निम्न मन्त्र से तीन आचमन करें–

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः॥

अर्थ–*दिव्य गुण युक्त, सर्वप्रकाशक, सर्वानन्दप्रद परमात्मा अभीष्ट*

आनन्द की प्राप्ति तथा पूर्णानन्द द्वारा तृप्ति के लिये हमारे लिये कल्याकारी हों तथा वह परमेश्वर हम पर चारों तरफ से सुख की वर्षा करें।

इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र

सीधे हाथ की मध्यमा और अनामिका अंगुलियों से जल इन्द्रियों को लगावें–

ओं वाक् वाक् मुँह का दांयाँ व बायाँ भाग
ओं प्राणः प्राणः नाक का दायाँ व बायाँ भाग
ओं चक्षुः चक्षुः दाईं और बाईं आँख
ओं श्रोत्रम् श्रोत्रम् दायाँ और बायाँ कान
ओं नाभिः टूंडी
ओं हृदयम् हृदय
ओं कण्ठः कण्ठ (गला), **ओं शिरः** सिंर
ओं बाहुभ्याम् यशोबलम् दोनों भुजायें
ओं करतल करपृष्ठे दोनों हाथों के ऊपर नीचे

अर्थ–*हे ईश्वर। मेरी वाणी, प्राण, नेत्र, कान, नाभि, हृदय, कण्ठ, सिर और भुजाओं में यश और बल हो तथा मेरे हाथ धर्मयुक्त कार्य करें।*

मार्जन मन्त्र

बाईं हथेली में जल लेकर दायें हाथ की मध्यमा (तीसरी) अनामिका (चौथी) अंगुलियों से शरीर के अंगों पर जल छिड़कें–

ओं भूः पुनातु शिरसि सिर पर
ओं भुवः पुनातु नेत्रयोः दोनों नेत्रों पर
ओं स्वः पुनातु कण्ठे कण्ठ (गले) पर
ओं महः पुनातु हृदये हृदय पर

ओं जनः पुनातु नाभ्याम् नाभि पर
ओं तपः पुनातु पादयोः दोनों पैरों पर
ओं सत्यं पुनातु पुनः शिरसि फिर सिर पर
ओं खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र सब शरीर पर

अर्थ–*हे प्राणों के प्राण, दुःख-विनाशक, सुखस्वरूप, सबसे महान्, सर्वोत्पादक परम तपस्वी, सत्यस्वरूप तथा सर्वव्यापक प्रभो ! कृपा करके आप क्रमशः मेरे सिर, नेत्र, कण्ठ, हृदय, नाभि, पाँव आदि सब अंगों को पवित्र और बलवान् कीजिये।*

प्राणायाम मन्त्र

निम्न मन्त्र से कम से कम तीन प्राणायाम करें–

ओ३म् भूः। ओ३म् भुवः। ओ३म् स्वः। ओ३म् महः। ओ३म् जनः। ओ३म् तपः। ओ३म् सत्यम् ॥

अर्थ–*हे ईश्वर ! आप सच्चिदानन्द स्वरूप, सबसे महान्, सर्वजगदुत्पादक ज्ञानस्वरूप तथा अविनाशी हैं।*

अघमर्षण मन्त्र

सृष्टि रचना की भावना द्वारा परमेश्वर की स्तुति करते हुए तथा पाप न करने का संकल्प करते हुए निम्न मन्त्रों का पाठ करें–

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ॥१॥

अर्थ–*भगवान् के प्रदीप्त ज्ञानमय अनन्त सामर्थ्य से वेद तथा कारण रूप प्रकृति कार्यरूप में प्रकट हुए। उसी के सामर्थ्य से यह जगत् भी महाप्रलय रूप रात्रि में परिवर्तित होता है। समुद्र व अन्तरिक्ष का निर्माण भी उसी ने किया है।*

ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत।

अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥२॥

अर्थ—*सकल जगत् के नियन्ता भगवान् ने जलों के पश्चात् समय का विभाग, वर्ष, दिन व रात विभाग को पूर्व सृष्टि के अनुसार बनाया।*

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्।
दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः ॥३॥

अर्थ—*सबको धारण करने वाले परमात्मा ने सूर्य, द्युलोक, पृथ्वी, अन्तरिक्ष तथा सब लोक-लोकान्तरों को पहले कल्प के समान ही बनाया।*

इसके पश्चात् (*ओं शन्नो देवी०*) इस मन्त्र से तीन बार आचमन करके मन में गायत्री आदि मन्त्रों के अर्थों का मनन करें।

मनसा परिक्रमा मन्त्र

सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु पिता के समान पालन करने वाले रक्षक परमेश्वर का ध्यान करते हुए मन में दृढ़ आस्तिकता और शक्ति को उत्पन्न करने के लिये निम्न मंत्रों का पाठ करें—

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः।
तेभ्योनमोऽधिपतिभ्यो नमोरक्षितृभ्योनम इषुभ्यो नम एभ्योअस्तु।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥१॥

अर्थ—*प्राची दिशा का स्वामी ज्ञानस्वरूप बन्धन रहित परमात्मा हमारा रक्षक है तथा किरणों व प्राणरूप साधनों से समस्त संसार की रक्षा करता है। रक्षा करने, प्रकाश और ज्ञानादि प्रदान करने के लिए परमात्मा को बारम्बार नमस्कार हो। जो हमसे द्वेष करता है अथवा जिससे हम द्वेष करते हैं उसको आपके न्याय रूपी सामर्थ्य पर छोड़ते हैं।*

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥२॥

अर्थ–*दक्षिण दिशा का स्वामी परमैश्वर्ययुक्त, चराचर प्राणियों में प्रकाशमान हमारी रक्षा करने वाला है। वह ज्ञानियों द्वारा ज्ञान प्राप्त कराता है। (शेष पूर्ववत्)*

ओ३म् प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥३॥

अर्थ–*वरने योग्य परमात्मा पश्चिम दिशा का स्वामी, बड़े-बड़े विषैले प्राणियों से हमारी रक्षा करता है तथा अन्न द्वारा हमें जीवन दान देता है। (शेष पूर्ववत्)*

ओ३म् उदीचि दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥४॥

अर्थ–*उत्तर दिशा का स्वामी, शान्ति का भण्डार तथा स्वयम्भू परमात्मा विद्युत द्वारा समस्त संसार की रक्षा करता है। (शेष पूर्ववत्)*

ओ३म् ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षितो वीरुध इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं

वो जम्भे दध्मः ॥५॥

अर्थ–*नीचे की दिशा का स्वामी, सर्वव्यापक परमात्मा हरे रंग वाले वृक्षों, लताओं और औषधियों द्वारा हमारी रक्षा करता है। (शेष पूर्ववत्)*

ओ३म् ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ॥६॥

अर्थ–*ऊपर की दिशा का स्वामी, सब राजाओं का राजा हमारा रक्षक है। वह परमात्मा आनन्दरूप साधनों से समस्त संसार की रक्षा करता है। (शेष पूर्ववत्)*

उपस्थान-मन्त्र

परमात्म शक्ति व उसके स्वरूप का अनुभव कर उसकी अमर गोद में बने रहने की प्रार्थना निम्न मन्त्रों के पाठ द्वारा करें–

ओ३म् उदुयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ॥१॥

अर्थ–*हे सुखस्वरूप परमेश्वर ! आप अन्धकार से परे दिव्य गुणों से युक्त सर्वत्र विद्यमान हैं। आपकी उत्तम ज्योति को हम प्राप्त होवें।*

ओ३म् उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॥२॥

अर्थ–*हे परमात्मन् ! आप सर्वज्ञ, वेदों के उत्पादक तथा प्रकाशस्वरूप हैं। संसार की प्रत्येक वस्तु आपकी महिमा दिखाने के लिए झण्डी का काम देती है।*

ओ३म् चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।

आ प्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ँ सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ॥३॥

अर्थ–वह परमात्मा दिव्यगुणयुक्त, अद्भुत, प्रकाशरूप सब स्थावर-जगत् की आत्मा है–तथा द्युलोक, पृथ्वी, अन्तरिक्ष आदि समस्त पदार्थों में परिपूर्ण होकर उनकी रक्षा करता है। सर्वथा द्रोहरहित श्रेष्ठ विद्वान् और अग्नि का भी प्रकाशक और सत्योपदेष्टा है, वह गुण युक्त विद्वानों के हृदय में ही उत्कृष्ट रूप में प्रकाशित होता है।

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥४॥

अर्थ–हे सर्वद्रष्टा भगवन् ! आप धर्मात्मा विद्वानों के हितकारी तथा शुद्धस्वरूप हैं। भगवन् आपकी आज्ञा से हम सौ वर्ष जीवें, अपने कानों से सौ वर्ष वेदवाणी सुनें। आपके रचे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य को सौ वर्ष पर्यन्त भली-भाँति देखें। सौ वर्ष हम जिह्वा से आपका गुणानुवाद गावें। कभी भी पराधीन न होकर इससे भी अधिक आयु प्राप्त कर इसी प्रकार रहें।

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अर्थ–हे प्राण, पवित्रता और आनंद के देने वाले प्रभु आप सर्वज्ञ और सकल जगत के उत्पादक हैं। हम आपके उस उत्तम, पाप विनाशक व ज्ञान स्वरूप तेज का ध्यान करते हैं जो हमारी बुद्धियों

में प्रकाशित रहता है। हमारी बुद्धियाँ कदापि आपसे विमुख न हों, आप सदैव हमारी बुद्धियों में प्रकाशित रहें और हमें सत्कर्मों की ओर प्रेरित करते रहें।

गायत्री भावार्थ

हे प्राणों के प्राण ! दुःख के हरने वाले ! सुख के धाम।
देव ! जन्मदाता ! नित्य ध्यावें, तेरा ऐश्वर्य अभिराम ॥
बुद्धि हमारी सत्य मार्ग में, रहे अटल हे दीनानाथ।
यह वर दो, हम द्वार खड़े हैं शीश झुकाये जोड़े हाथ ॥

समर्पण

हे ईश्वर दयानिधे ! भवत्कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः ॥

अर्थ–*हे करुणा के भण्डार परमात्मन् ! आपकी कृपा से इस जप, उपासना आदि कर्म से हमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की शीघ्र ही सिद्धि हो जावे।*

नमस्कार मन्त्र

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

अर्थ–*जो सुखस्वरूप, संसार के उत्तम सुखों का देने वाला, कल्याण का कर्त्ता तथा अपने भक्तों को सुख देने वाला, मंगलस्वरूप तथा धार्मिक पुरुषों को मुक्ति देने वाला है, उसको हमारा बारम्बार नमस्कार है। हे प्रभो ! हमारे आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक तीनों ताप शान्त हों।*

॥ इति संध्योपासन ॥

दैनिक यज्ञ

संध्या करके यजमान अपने घर पर अग्निहोत्र करें। जो व्यक्ति अपने घर पर यज्ञ करने में असमर्थ हो तो वह आर्य समाज में एकत्रित होकर दैनिक अग्निहोत्र स्वाध्याय सत्संग करे।

समय—प्रातः ६ से ७.३० बजे तक ग्रीष्म ऋतु में १ घंटा पूर्व सम्मिलित हों।

कार्यक्रम—यज्ञ ४५ मिनट, भजन १५ मिनट, स्वाध्याय सत्संग ३० मिनट।

आचमन मंत्र

यज्ञ के लिए बैठे हुए सब लोग अपने जल-पात्र से दाएँ हाथ की हथेली पर थोड़ा जल लेकर नीचे लिखे मंत्रों से तीन बार आचमन करें—

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ इससे पहला

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ इससे दूसरा

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा ॥ इससे तीसरा

थोड़े से जल से अपना सीधा हाथ धोवें।

अंग स्पर्श मंत्र

बाएँ हाथ की हथेली में थोड़ा जल लेकर दाएँ हाथ की बीच की दो अंगुलियों से निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए अंग स्पर्श करें और सातवें से मार्जन करें—

ओं वाङ् म आस्येऽस्तु ॥१॥ मुख का स्पर्श करें।

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥२॥ इससे नासिका स्पर्श करें।

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥३॥ इससे दोनों नेत्रों का स्पर्श करें।

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥४॥ इससे दोनों कानों का स्पर्श करें।

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥५॥ इससे दोनों भुजाओं का स्पर्श करें।

ओं ऊर्वोर्मऽओजोऽस्तु ॥६॥ इससे दोनों जांघों का स्पर्श करें।

ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥७॥ इससे सारे शरीर पर जल का मार्जन करें।

ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥

ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे, भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

ओं य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

ओं यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥४॥

ओं येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥५॥

ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥६॥

ओंसनोबन्धुर्जनितासविधाताधामानिवेदभुवनानिविश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास् तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥
ओंअग्नेनयसुपथारायेअस्मान्विश्वानिदेववयुनानिविद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

अग्न्याधान मंत्र

ओं भूर्भुवः स्वः। इस मंत्र से कपूर को कड़छी में रख अग्नि प्रज्ज्वलित करें।

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

इस मंत्र से वेदी के बीच में अग्नि स्थापित करें।

अग्नि प्रदीपन मंत्र

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयंच अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

इस मंत्र से छोटी-छोटी समिधा रख अग्नि को प्रदीप्त करें।

समिधाधान मंत्र

निम्न मंत्रों से आठ अंगुल लम्बी ३ समिधा घी में भिगोकर अग्नि कुंड में रखें–

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम ॥ पहली समिधा

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन।

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदं न मम। दूसरी समिधा

ओं तं त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वा॰ इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम। तीसरी समिधा

घृताहुति मंत्र

निम्न मंत्र को पाँच बार बोलकर घी की पाँच आहुतियाँ देवें—

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे—इदन्न मम।

जल–प्रसेचन के मंत्र

अंजलि से जल सेचन करें—

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ॥ पूर्व दिशा में।

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ पश्चिम दिशा में।

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ उत्तर दिशा में।

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥

वेदी के चारों ओर जल छिड़कें।

आघारावाज्याहुति

निम्न मंत्रों से हवनकुंड के उत्तर व दक्षिण भाग में घी की आहुति देवें–

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये–इदन्न मम। उत्तर

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय–इदन्न मम। दक्षिण

आज्यभागाहुति

निम्न मंत्रों से मध्य में आहुति देवें–

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये–इदन्न मम।

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय–इदन्न मम।

प्रातःकाल आहुति के मंत्र

निम्न मंत्रों से यजमान घी तथा अन्य लोग सामग्री की आहुति देवें–

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥

ओं सूर्यो वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥

सायंकाल आहुति के मंत्र

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

निम्न मंत्र को मौन मन में उच्चारण करके आहुति देवें–

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूर्रात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

प्रातः-सायं काल के मंत्र

ओंभूरग्नयेप्राणायस्वाहा।इदमग्नयेप्राणाय–इदंनमम।

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय–इदं न मम।

ओंभूर्भुवःस्वरग्निवाय्वादित्येभ्यःप्राणापानव्यानेभ्यःस्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यःप्राणापानव्यानेभ्यःइदन्नमम।

ओं आपो ज्योतिरोंसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

गायत्री मंत्र

ओं भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥

पूर्णाहुति मंत्र

निम्न मंत्र का तीन बार उच्चारण करके तीन आहुति देवें–

नोट–दैनिक यज्ञ के लिये आवश्यक मंत्रों के शीर्षक पर * का चिह्न देखें।

ओ३म् सर्वं वै पूर्ण ँ स्वाहा।

दैनिक यज्ञ के पश्चात् यदि समय हो तो किसी भी आर्ष ग्रन्थ का पाठ या किसी एक वेद मंत्र की व्याख्या का अध्ययन कर अपने जीवन में आचरण करने का प्रयत्न करें।

॥ इति दैनिक यज्ञ ॥

अग्निहोत्र (देवयज्ञ)

ऋत्विक वरण–यदि यजमान स्वयं मंत्रोच्चारण करने में असमर्थ हो तो ऋत्विक (पुरोहित) का वरण करें, कर्म यजमान स्वयं करे। यजमान का आसन वेदी के पश्चिम में पूर्वाभिमुख तथा पुरोहित का आसन वेदी के दक्षिण में उत्तराभिमुख रक्खें। यजमान पुरोहित से आसन ग्रहण करने का निवेदन करे। पुरोहित आसन ग्रहण करे। तत्पश्चात् अन्य सभासद वेदी के उत्तर, पूर्व में आसन ग्रहण करें।

* आचमन मंत्र *

यज्ञ के लिए बैठे हुए सब लोग अपने जल-पात्र से दाएँ हाथ की हथेली पर थोड़ा जल लेकर नीचे लिखे मंत्रों से तीन बार आचमन करें–

ओं अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा ॥ इससे पहला

अर्थ–*हे प्रभु, आप जल के समान शांति देने वाले हैं, हमें शांति प्रदान कीजिए। जैसे जल हमारे जीवन का आधार है, वैसे ही आप जीवन के आधार हैं।*

ओं अमृतापिधानमसि स्वाहा ॥ इससे दूसरा

अर्थ–*हे परमेश्वर ! जैसे जल मेघ बनकर ऊपर से सुख की वृष्टि करता है, उसी प्रकार आप हमें संकटों से बचाते हैं।*

ओं सत्यं यशः श्रीर्मयि श्रीः श्रयताम् स्वाहा ॥ इससे तीसरा

अर्थ–*हे परमात्मन् ! हमें सत्य के मार्ग पर चलते हुए यश और लक्ष्मी प्राप्त हो ताकि हम दूसरों की भी सहायता कर सकें।*

थोड़े से जल से अपना सीधा हाथ धोवें।

अंग स्पर्श मंत्र

बाएँ हाथ की हथेली में थोड़ा जल लेकर दाएँ हाथ की बीच की दो अंगुलियों से निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए अंग स्पर्श करें और सातवें से मार्जन करें–

ओं वाङ् म आस्येऽस्तु ॥१॥ मुख का स्पर्श करें।

ओं नसोर्मे प्राणोऽस्तु ॥२॥ इससे नासिका का।

ओं अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ॥३॥ इससे दोनों नेत्रों का।

ओं कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ॥४॥ इससे दोनों कानों का।

ओं बाह्वोर्मे बलमस्तु ॥५॥ इससे दोनों भुजाओं का।

ओं ऊर्वोर्मऽओजोऽस्तु ॥६॥ इससे दोनों जांघों का स्पर्श करें।

ओं अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ॥७॥ इससे सारे शरीर पर जल का मार्जन करें।

अर्थ–*हे प्रभो ! मेरे मुख में वाक्शक्ति, दोनों नासिका-छिद्रों में प्राण-शक्ति, आँखों में देखने की शक्ति और कानों में सुनने की शक्ति बनी रहे। मेरी भुजाएँ बलवान् रहें। मेरी जंघाओं में चलने का सामर्थ्य रहे। मेरे सम्पूर्ण अंग और सारा शरीर ही रोग-रहित बना रहे।*

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

पुरोहित यजमान को यज्ञोपवीत धारण करावें।

ओं यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥१॥

ओंयज्ञोपवीतमसियज्ञस्यत्वायज्ञोपवीतेनोपनह्यामि॥२॥

अथ ईश्वर स्तुति प्रार्थनोपासना

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव ॥१॥

अर्थ—*हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप, सर्वसुखों के दाता परमेश्वर ! आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कीजिए। जो कल्याणकारक गुण, कर्म, स्वभाव और पदार्थ हैं, वे सब हमको प्राप्त कराइए।*

ओं हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे, भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥२॥

अर्थ—*जो स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करने वाले सूर्य-चन्द्र आदि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं, जो उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का प्रसिद्ध स्वामी एक ही चेतनरूप था, जो सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व वर्तमान था, वह इस भूमि, सूर्यादि को धारण कर रहा है, हम लोग उस सुखस्वरूप शुद्ध परमात्मा के लिए ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अति प्रेम से विशेष भक्ति किया करें।*

ओं य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्यच्छायाऽमृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥३॥

अर्थ—*जो आत्मज्ञान का दाता, शरीर, आत्मा और समाज के बल को देने वाला है, जिसकी सब विद्वान् लोग उपासना करते हैं और जिसका प्रत्यक्ष सत्य स्वरूप शासन, न्याय अर्थात् शिक्षा को मानते हैं, जिसका आश्रय ही मोक्ष-सुखदायक है जिसका न मानना अर्थात् भक्ति न करना ही मृत्यु आदि दुःख का हेतु है, हम लोग उस सुखस्वरूप सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए आत्मा और अन्तःकरण से भक्ति अर्थात् उसी की आज्ञा-पालन करने में तत्पर रहें।*

ओं यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥४॥

अर्थ—*जो प्राण वाले और अप्राणिरूप जगत् का अपनी अनन्त महिमा से एक ही राजा विराजमान है, जो इन मनुष्य आदि और गौ आदि प्राणियों के शरीर की रचना करता है, हम उस सुखस्वरूप, सकलैश्वर्य के देने वाले परमात्मा की उपासना अर्थात् हम अपनी सकल उत्तम सामग्री को उसकी आज्ञा पालन में समर्पित करके विशेष भक्ति करें।*

ओं येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥५॥

अर्थ—*जिस परमात्मा ने तीक्ष्ण स्वभाव वाले सूर्य आदि और भूमि को धारण किया है, जिस जगदीश्वर ने सुख को धारण किया है और जिस ईश्वर ने दुःखरहित मोक्ष को धारण किया है, जो आकाश में सब लोक-लोकान्तरों को विशेष मान युक्त अर्थात् जैसे आकाश में पक्षी उड़ते हैं, वैसे ही सब लोकों का निर्माण करता और भ्रमण कराता है, हम लोग उस सुखदायक, कामना करने के योग्य परब्रह्म की प्राप्ति के लिए सब सामर्थ्य से विशेष भक्ति करें।*

ओं प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥६॥

अर्थ—*हे सब प्रजा के स्वामिन् ! परमात्मन् ! आपसे भिन्न दूसरा कोई इन सब उत्पन्न हुए भूगोलादि जगत को बनाने वाला और व्यापक नहीं है। उस आपके भक्ति करने वाले हम चेतनादिकों का तिरस्कार नहीं करता है, अर्थात् आप सर्वोपरि हैं। जिस-जिस पदार्थ*

की कामना वाले होकर हम लोग भक्ति करें आपका आश्रय लेवें, और

वाञ्छा करें, वह कामना सिद्ध होवे, जिससे हम लोग धनैश्वर्यों के स्वामी होवें ॥

ओं स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा।
यत्र देवा अमृतमानशानास् तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥७॥

अर्थ–हे मनुष्यो ! वह परमात्मा अपने लोगों को भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक सब कामों को पूर्ण करने वाला है। वही सम्पूर्ण लोक-मात्र और नाम, स्थान तथा जन्मों को जानता है, और लोग जिस सांसारिक दुःख-सुख से रहित नित्यानन्दयुक्त, मोक्षस्वरूप धारण करने वाले परमात्मा में, मोक्ष को प्राप्त होकर विद्वान् लोग स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं, वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है। अपने लोग मिलकर सदा उसकी भक्ति किया करें।

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम उक्तिं विधेम ॥८॥

अर्थ–हे स्वप्रकाश ! ज्ञानस्वरूप ! सब जगत् के प्रकाश करने वाले, सकल सुखदाता परमेश्वर ! आप जिससे सम्पूर्ण विद्यायुक्त हैं, कृपा करके हम लोगों को विज्ञान व राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए अच्छे धर्मयुक्त आप्त लोगों के मार्ग से सम्पूर्ण प्रज्ञान और उत्तम कर्म प्राप्त कराइए, और हमसे कुटिलतायुक्त पाप-रूप कर्म को दूर कीजिए। इस कारण हम लोग आपकी बहुत प्रकार की स्तुति रूप, नम्रतापूर्वक प्रशंसा सदा किया करें और सर्वदा आनन्द से रहें।

अथ स्वस्तिवाचन

ओं अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥१॥

अर्थ–*पहले ही से जगत् को धारण करने वाले, हवन, विद्या, दान और शिल्प क्रिया के प्रकाशक, प्रत्येक ऋतु में पूजनीय, जगत् के सुन्दर पदार्थों को देने वाले, रमणीय रत्नादिकों के पोषण करने वाले अग्नि स्वरूप परमात्मा की मैं स्तुति (उपासना) करता हूँ।*

ओं स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये ॥२॥

अर्थ–*हे ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! जैसे पुत्र के लिए पिता ज्ञानदाता होता है, वैसे आप हमारे लिए सुख के हेतु पदार्थों की प्राप्ति कराने वाले होवें।*

ओं स्वस्ति नो मिमीतामश्विना भगः स्वस्ति देव्यदितिरनर्वणः। स्वस्ति पूषा असुरो दधातु नः स्वस्ति द्यावापृथिवी सुचेतुना ॥३॥

अर्थ–*हे ईश्वर ! अध्यापक और उपदेशक हमारा कल्याण करें, वायु सुख का सम्पादन करे, अखण्डित प्रकाश वाली विद्युत-विद्या हमारा कल्याण करे। पुष्टिकारक मेघादि हमारा कल्याण करें। अन्तरिक्ष और पृथ्वी हमारे लिए कल्याणकारी हों।*

ओं स्वस्तये वायुमुपब्रवामहै सोमं स्वस्ति भुवनस्य यस्पतिः। बृहस्पतिं सर्वगणं स्वस्तये स्वस्तय आदित्यासो भवन्तु नः ॥४॥

अर्थ–*हम स्वस्ति के लिए वायु और चन्द्रमा की उपसना करते हैं। संसार का जो स्वामी है, वह हमारी स्वस्ति करे। अनेक सहायकों से युक्त बृहस्पति की हम स्वस्ति के लिए उपासना करते हैं। आदित्य हमारे लिए स्वस्तिकारक हों।*

ओं विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहसः ॥५॥

अर्थ–*आज यज्ञ के दिन हमारे आनन्द के लिए सब विद्वान् लोग और दिव्य पदार्थ कल्याणकारी हों। सर्वत्र बसने वाला अग्नि मंगलकारी हो। हमारे कल्याण के लिए, दुष्टों को रुलाने वाले आप, पापरूप अपराध से हमारी रक्षा करें।*

ओं स्वस्ति मित्रावरुणा स्वस्ति पथ्ये रेवति।
स्वस्ति न इन्द्रश्चाग्निश्च स्वस्ति नो अदिते कृधि ॥६॥

अर्थ–*हे परमेश्वर ! सबके मित्र और श्रेष्ठ सज्जन हमारा कल्याण करें। शुभ धनादि-सम्पन्न मार्ग हमारे लिए कल्याणकारी हों। राजा और नेता ब्राह्मण हमारे लिए कल्याणकारी हों।*

ओं स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताघ्नता जानता संगमेमहि ॥७॥

अर्थ–*हे ईश्वर ! कल्याण के मार्ग में आनन्द से हम विचरें, जैसे सूर्य और चन्द्र नियमित गति से बिना किसी उपद्रव के विचरते और सबको लाभ पहँचाते हैं। दानशील अहिंसक और ज्ञान-सम्पन्न के साथ हम मेल करें।*

ओं ये देवानां यज्ञिया यज्ञियानां मनोर्यजत्रा अमृता ऋतज्ञाः।
ते नो रासन्तामुरुगायमद्य यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥८॥

अर्थ–*जो आप विद्वानों में भी अत्यन्त पूजनीय और मननशील सत्यज्ञानी हैं, वे आप संन्यासी लोग विद्या के उपदेश हमें देवें और कल्याणकारी पदार्थों से हमारी रक्षा करें।*

ओं येभ्यो माता मधुमत्पिन्वते पयः पीयूषं द्यौरदितिरद्रिबर्हाः।
उक्थशुष्मान्वृषभरान्त्स्वप्नसस्ताँआदित्याँअनुमदास्वस्तये॥९॥

अर्थ–जिन विद्वानों के लिए, सबको निर्माण करने वाली पृथ्वी मीठे दुग्धादि पदार्थ देती है और अखण्डनीय मेघों से भरा हुआ अन्तरिक्ष-लोक सुन्दर जल देता है, अत्यन्त बल वाले यज्ञ द्वारा वृष्टि करने वाले, उन लोकों को उपद्रव न होने के लिए हमें प्राप्त कराइए।

ओंनृचक्षसोअनिमिषन्तोअर्हणा,बृहद्देवासोअमृतत्वमानशुः।
ज्योतीरथाअहिमायाअनागसो,दिवोवर्ष्माणंवसतेस्वस्तये॥१०॥

अर्थ–मनुष्यों के द्रष्टा, आलस्यरहित, लोगों के पूजनीय विद्वान् लोग, जो कि अमर पद को प्राप्त हो चुके हैं, सुन्दर प्रकाशमय रथों से युक्त हैं जिनकी वृद्धि को कोई दबा नहीं सकता, ऐसे पापरहित विद्वान् जो कि अन्तरिक्ष-लोक से ऊँचे देश को ज्ञानादि द्वारा प्राप्त करते हैं, हमारे कल्याण के लिए हों।

ओंसम्राजोयेसुवृधोयज्ञमाययुरपरिह्वृतादधिरेदिविक्षयम्।
तांआविवासनमसासुवृक्तिभिर्महोआदित्याँअदितिंस्वस्तये॥११॥

अर्थ–अपने तेज से अच्छी प्रकार विराजमान, ज्ञानादि से वृद्ध जो विद्वान् लोग यज्ञ को प्राप्त होते हैं और जो सबसे अपीड़ित देवता लोग बड़े-बड़े स्थानों में निवास करते हैं, उन गुणों से अधिक भक्तों को हव्यान्न के साथ और अच्छी स्तुतियों के साथ कल्याण के लिए सेवन कराओ।

ओंकोवःस्तोमंराधतियंजुजोषथविश्वेदेवासोमनुषोयतिष्ठन।
कोवोऽध्वरंतुविजाताअरंकरद्योनःपर्षदत्यंहःस्वस्तये॥१२॥

अर्थ–जिस स्तुति का तुम सेवन करते हो, उस स्तुति को कौन बनाता है ? हे मननशील विद्वान् लोगो ! तुममें कौन यज्ञ को अलंकृत करता है ? जो यज्ञ हमारे पाप को हटाकर कल्याण के लिए हमारा पालन करता है, उसका विचार करो।

ओंयेभ्योहोत्रांप्रथमामायेजेमनुःसमिद्धाग्निर्मनसासप्तहोतृभिः।
तआदित्याअभयंशर्मयच्छतसुगानःकर्त्तःसुपथास्वंस्तये॥१३॥

अर्थ–*जिसके कारण विद्वान् लोग बड़े-बड़े यज्ञों द्वारा सम्मान पाते हैं, वे भयरहित सुख को देवें और कल्याणकारी वैदिक-मार्ग बतावें।*

ओंयईशिरेभुवनस्यप्रचेतसोविश्वस्यस्थातुर्जगतश्चमन्तवः।
ते नः कृतादकृतादेनसस्पर्यद्या देवासः पिपृता स्वस्तये ॥१४॥

अर्थ–*जो विद्वान् अच्छे ज्ञान वाले, सबके जानने वाले, स्थावर और जंगम लोक के स्वामी बनते हैं, आज कल्याणं के लिए किए और न किए हुए पाप से पार करें।*

ओं भरेष्विन्द्रं सुहवं हवामहेऽहोमुचं सुकृतं दैव्यं जनम्।
अग्निंमित्रंवरुणंसातयेभगंद्यावापृथिवीमरुतःस्वस्तये॥१५॥

अर्थ–*पाप के हटाने वाले, शक्तिशाली विद्वानों को संग्रामों में अपनी रक्षा के लिए बुलावें और सर्वश्रेष्ठ कर्म वाले आस्तिक पुरुषों को बुलावें और अनादि लाभ तथा अनुपद्रव के लिए अग्निविद्या, प्राणविद्या, सेवनीय जलविद्या, अन्तरिक्ष तथा पृथ्वी की विद्या और वायुविद्या का हम सेवन करें।*

ओं सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहसं सुशर्माणमदितिं सुप्रणीतिम्।
दैवीं नावं स्वरित्रामनागसमस्त्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये ॥१६॥

अर्थ–*अच्छी प्रकार रक्षा करने वाली, लम्बी-चौड़ी उपद्रवरहित, अच्छा सुख देने वाली अच्छी प्रकार बनाई गई, सुन्दर यंत्रों से युक्त, दृढ़, विद्युत्-सम्बन्धी नौका अर्थात् विमान के ऊपर हम लोग सुख के लिए चढ़ें।*

ओंविश्वेयजत्राअधिवोचतोतयेत्रायध्वंनोदुरेवायाअभिहुतः।
सत्यया वो देवहूत्या हुवेम शृण्वतो देवा अवसे स्वस्तये ॥१७॥

अर्थ–*हे पूजनीय विद्वानों ! हमारी रक्षा के लिए आप उपदेश किया करें। पीड़ा होने वाली दुर्गति से, शत्रुता से रक्षा और सुख के लिए हम आपको बुलाया करें।*

ओं अपामीवामप विश्वामनाहुतिमपारातिं दुर्विदत्रामघायतः।
आरे देवा द्वेषो अस्मद्युयोतनोरुणः शर्म यच्छता स्वस्तये ॥१८॥

अर्थ–*हे विद्वानो ! रोगादि और लोभ-बुद्धि को पृथक् करो। पाप की इच्छा करने वाले शत्रु की दुष्ट बुद्धि को दूर करो, द्वेष करने वाले सबको हमसे पृथक् करो, हमारे लिए बहुत सुख दो।*

ओं अरिष्टः स मर्त्तो विश्व एधते प्र प्रजाभिर्जायते धर्मणस्परि।
यमादित्यासोनयथासुनीतिभिरतिविश्वानिदुरितास्वस्तये॥१९॥

अर्थ–*जिन पुरुषों को अच्छी नीतियों से, पापों का उल्लंघन करके सन्मार्ग में प्रवृत्त करने की इच्छा होती है, वे सब पुरुष किसी से पीड़ित न होकर बढ़ते हैं, धर्मानुष्ठान के बाद पुत्र-पौत्रादिकों से भली-भाँति बढ़ते हैं।*

ओं यं देवासोऽवथ वाजसातौ यं शूरसाता मरुतो हिते धने।
प्रातर्यावाणं रथमिन्द्र सानसिमरिष्यन्तमा रुहेमा स्वस्तये ॥२०॥

अर्थ–*हे विद्वान् लोगों ! अन्न के लिए जिस रमणीय, गान-साधन वाष्पयानादि की रक्षा करते हो और धन के कारण संग्राम में जिस रथ की रक्षा करते हो, बड़े यंत्रालय के विद्वानों से भी सेवनीय, उसी रथ पर हम कल्याण के लिए चढ़ें।*

स्वस्ति नः पथ्यासु धन्वसु स्वस्त्यप्सु वृजने स्वर्वति।
स्वस्ति नः पुत्रकृथेषु योनिषु स्वस्ति राये मरुतो दधातन ॥२१॥

अर्थ—हमारे लिए राजमार्ग में कल्याण हो, [illegible] देश में जलाशय कल्याणकारी हों, सब आयुधों से युक्त शत्रुओं को दबाने वाली सेना में कल्याण हो, पुत्रों के उत्पन्न करने वाले उत्पत्ति-स्थान में कल्याण हो, और गौ आदि के लिए कल्याण हो।

ओं स्वस्तिरिद्धि प्रपथे श्रेष्ठा रेक्णस्वत्यभि या वाममेति। सा नो अमा सो अरणे नि पातु स्वावेशा भवतु देवगोपाः ॥२२॥

अर्थ—जो समुद्र और पृथ्वी पर चलने वालों के लिए कल्याणकारिणी होती है, जो अति सुन्दर धन वाली है, जो यज्ञ को प्राप्त होती है, वह समृद्धि हमारे गृह की रक्षा करे। वही वन आदि देशों में रक्षिका हो।

ओं इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥२३॥

अर्थ—हे ईश्वर ! अन्नादि इष्ट पदार्थों और बलादि के लिए हम आपका आश्रय लेते हैं। हे जीवो ! तुम वायु-सदृश पराक्रम वाले हो। सब जगत् का उत्पादक देव, यज्ञरूप श्रेष्ठ कर्म के लिए तुमको प्रेरित करे। उस यज्ञ द्वारा अपने ऐश्वर्य को बढ़ाओ। न मारने योग्य बछड़ों वाली, यक्ष्मा (तपेदिक) आदि रोगों से शून्य गौओं के तुम लोगों में जो चौर्यादि दुष्ट गुणों से युक्त हो, स्वामी न बने। अन्य पापी भी उनका रक्षक न बने, ऐसा यत्न करो, जिससे बहुत सी चिरकालपर्यन्त रहने वाली गौएं गौरक्षक के पास ठहरी रहें। परमात्मा से प्रार्थना करो कि यज्ञ करने वाले के पशुओं की हे ईश्वर ! तुम रक्षा करो।

ओं आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥२४॥

अर्थ–*हमें शुभ संकल्प प्राप्त हों। सर्वोत्तम दुःखनाशक विद्वान् लोग सर्वदा वृद्धि के लिए ही हों। उन्हें प्रतिदिन प्रमादशून्य रक्षा करने वाले बनाओ।*

ओं देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाꣳ रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानाम् सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२५॥

अर्थ–*सरलतया आचरण करने वाली, विद्वानों का कल्याण करने वाला अच्छी बुद्धि हमें प्राप्त हो, विद्वानों के मित्र-भाव को हम प्राप्त हों, जिससे कि वे हमारी अवस्था को दीर्घकाल जीने के लिए बनायें।*

ओं तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥२६॥

अर्थ–*हम लोग ऐश्वर्य वाले, चर-अचर और जगत् के प्रति परमात्मा की, अपनी रक्षा के लिए स्तुति करते हैं, जिससे कि वह पुष्टिकर्त्ता ज्ञानादि धनों की वृद्धि करे। रक्षक और कार्यों का साधक परमात्मा हमारा कल्याण करे।*

ओं स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥२७॥

अर्थ–*परमैश्वर्ययुक्त ईश्वर हमारा कल्याण करे। पुष्टिकर्त्ता सर्वज्ञ ईश्वर हमारा कल्याण करे। तीक्ष्ण. तेजस्वी, दुःखहर्ता ईश्वर हमारा कल्याण करे।*

ओं भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥२८॥

अर्थ–*विद्वान् लोगो ! हम कानों से शुभ ही सुनें, नेत्रों से अच्छी वस्तुओं को देखें, दृढ़ अंगों से परमात्मा की स्तुति करने वाले हम लोग शरीरों से अथवा मर्यादा के साथ विद्वानों के लिए कल्याणकारी जो आयु है, उसको अच्छी प्रकार प्राप्त हों।*

ओं अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥२९॥

अर्थ–*हे प्रकाशस्वरूप परमात्मा, ज्ञान के लिए प्रशंसित, आप भक्ति-दान देने को प्राप्त होवें। सब पदार्थों के ग्रहण करने वाले आप, यज्ञादि शुभ कर्मों में स्मरणादि द्वारा, हमारे हृदयों में स्थित होवें।*

ओं त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः।
देवेभिर्मानुषे जने ॥३०॥

अर्थ–*हे पूजनीय ईश्वर ! आप छोटे बड़े सब शुभ कर्मों के उपदेष्टा हैं। विद्वान् लोगों से आप विचारशील पुरुषों में उपास्य रूप से स्थापित किए जाते हैं।*

ओं ये त्रिषप्ताः परियन्ति विश्वा रूपाणि बिभ्रतः।
वाचस्पतिर्बला तेषां तन्वो अद्य दधातु मे ॥३१॥

अर्थ–*तीन गुण रजस्, तमस् और सत्त्व तथा सात ग्रह अथवा तीन-सात (इक्कीस) अर्थात् ५ महाभूत, ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ प्राण, ५ कर्मेन्द्रिय, १ अन्तःकरण जो सब चराचरात्मक वस्तुओं का अभिमत फल देकर पोषण करते हुए यथोचित विद्यमान रहते हैं, उनके सम्बन्धी बलों को मेरे शरीर में आज, हे वाणी के पति परमेश्वर ! धारण करो।*

॥ इति स्वस्तिवाचन ॥

अथ शान्तिप्रकरणम्

ओं शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयो शं न इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥१॥

अर्थ—*हे ईश्वर . बिजली और अग्नि रक्षा-सामग्री के द्वारा हमें सुखकारक हों, बिजली और जल हमें सुखकारी हों, सूर्य और चन्द्रमा कल्याण के लिए रोगनाशक और भय-निवारक हों। बिजली और पवन पराक्रम के लिए सुखदायक हों।*

ओं शं नो भगः शमु नः शंसो अस्तु शं नः पुरन्धिः शमु सन्तु रायः। शं नं सत्यस्य सुयमस्य शंसः शं नो अर्यमा पुरुजातो अस्तु ॥२॥

अर्थ—*भगवन् ! हमारा ऐश्वर्य शान्तिदायक हो, हमारी प्रशंसा शान्तिदायक हो। हमारी बुद्धि शान्तिदायिका हो, सब प्रकार के धन शान्तिदायक हों। शासन शान्तिदायक हो। श्रेष्ठों का माननीय सत्य, न्यायकारी भगवान् शान्तिदायक हो।*

ओं शं नो धाता शमु धर्त्ता नो अस्तु शं न उरूची भवतु स्वधाभिः। शं रोदसी बृहती शं नो अद्रिः शं नो देवानां सुहवानि सन्तु ॥३॥

अर्थ—*धारण करने वाले ईश्वर हमें शान्तिकारक हों। दिशाएँ हमें बहुत अन्नों से शान्तिकारक हों। बहुत विस्तार वाले भूमि और सूर्य दोनों शान्तिकारक हों। मेघ अथवा पहाड़ शान्तिकारक हों। विद्वान् जनों के सुन्दर बुलावें हमें शान्तिकारक हों।*

ओं शं नो अग्निर्ज्योतिरनीको अस्तु शं नो मित्रावरुणावश्विना शम्। शं नः सुकृता सुकृतानि सन्तु। शं न इषिरो अभि वातु वातः ॥४॥

अर्थ–*प्रकाशस्वरूप परमेश्वर हमारे लिए शान्तिकारक हों। दिन और रात हमारे लिए सुखकारक हों। सूर्य और चन्द्रमा शान्तिकारक हों, सत्यकर्मियों के शुभ कर्म हमारे लिए शान्तिकारक हों। पवन हमारे चारों ओर चले।*

ओं शं नो द्यावापृथिवी पूर्वहूतौ शमन्तरिक्षं दृशये नो अस्तु। शं न ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णुः ॥५॥

अर्थ–*कार्य के आरम्भ में सूर्य, भूमि और मध्यलोक शान्तिदायक हों। औषधियाँ, अन्नादि और वन के पदार्थ हमको शांतिदायक हों, विजेता स्वस्तिकर हों।*

ओं शं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु शमादित्येभिर्वरुणः सुशंसः। शं नो रुद्रो रुद्रेभिर्जलाषः शं नस्त्वष्टाग्नाभिरिह श्रृणोतु ॥६॥

अर्थ–*सूर्य हमें सुखदायक हो, जल सूर्य की किरणों के साथ सुखदायक हो। ज्ञानदाता आचार्य नियमों द्वारा हमें सुखदायक हो, परमेश्वर हमारी वाणियों द्वारा हमारी प्रार्थना सुनें।*

ओं शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नः शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः। शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥७॥

अर्थ–*सौम्यस्वभाव ब्राह्मण हमें शान्तिदायक हो। परमेश्वर हमें शान्तिदायक हो। पत्थर सुखकर हों, यज्ञ सुखदायक हो। औषधियाँ हमें सुखदायक हों और वेदी सुखदायक हो।*

ओं शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु। शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥८॥

अर्थ—*सूर्य हमें सुखदायक हो, चारों दिशाएँ सुखदायक हों, पहाड़ सुखदायक हों, समुद्र सुखदायक हों और जल व प्राण सुखदायक हों।*

ओं श नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः। शं नो विष्णुः शमुः पूषा नो अस्तु शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥९॥

अर्थ—*वेद-विद्या और धरती हमें सुखदायक हों। विद्वान् लोग सुखदायक हों। सूर्य सुखदायक हो। भूमि सुखदायक हो। अन्तरिक्ष और जल सुखदायक हों और पवन सुखदायक हो।*

ओं शं नो देवः सविता त्रायमाणः शं नो भवन्तूषसो विभातीः। शं नः पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ॥१०॥

अर्थ—*रक्षक प्रभु हमें सुखदायक हों। जगमगाती हुई प्रभात वेलाएँ सुखदायक हों। बादल सुखदायक हों, क्षेत्रपति किसान सुखदायक हों।*

ओं शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु शं सरस्वती सह धीभिरस्तु। शमभिषाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः ॥११॥

अर्थ—*विद्वज्जन सुखदायक हों, वेद-विद्या सुखदायक हो। बलशाली और दानी सुखदायक हों। आकाश और पृथ्वी के पदार्थ हमें सुखदायक हों, जल सम्बन्धी पदार्थ हमें सुखदायक हों।*

ओं शं नः सत्यस्य पतयो भवन्तु शं नो अर्वन्तः शमु सन्तु गावः। शं नः ऋभवः सुकृतः सुहस्ताः शं नो भवन्तु पितरो हवेषु ॥१२॥

अर्थ–*सत्यवक्ता हमें सुखदायक हों। घोड़े और गौएं सुखदायक हों। बुद्धिमान् बड़े-बड़े काम करने वाले, हस्तकार्य में चतुर लोग हमें यज्ञों में सुखदायक हों।*

ओं शं नो अज एकपाद् देवो अस्तु शं नोऽहिर्बुध्न्यः शं समुद्रः शं नो अपां नपात्पेरुरस्तु शं नः पृश्निर्भवतु देवगोपाः ॥१३॥

अर्थ–*जगत्पाद, अजन्मा व्यापक भगवान् हमें शांतिदायक हो। न हारने वाला सब मूल तत्त्वों का साधक हमें शांतिदायक हो। सब को सींचने वाला ईश्वर शांतिदायक हो। प्रजाओं को पार करने वाला, विद्वानों का रक्षक परमेश्वर हमें शांतिदायक हो।*

ओं इन्द्रो विश्वस्य राजति।
शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१४॥

अर्थ–*परमेश्वर ! आप दो पाँव वाले मनुष्य आदि के लिए चौपाये गौ आदि पशुओं के लिए शांतिदायक हों।*

ओं शन्नो वातः पवताᳪ शन्नस्तपतु सूर्य्यः।
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभिवर्षतु ॥१५॥

अर्थ–*परमेश्वर ! पवन सुखकारी हो। सूर्य हमको सुखकर रूप में तपावे। उत्तम गुण वाले बादल हमारे लिए सब ओर से वर्षा करें।*

ओं अहानि शं भवन्तु नः शᳪ रात्रीः प्रतिधीयताम्। शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शन्न इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः ॥१६॥

अर्थ–परमात्मन् ! दिन और रात सुख के लिए हों। बिजली और प्रत्यक्ष अग्नि दोनों रक्षा-सामग्री हमें सुखकारक हों। जल, बिजली और पृथ्वी अन्नों के लाभ हमें सुखकारी हों। सुखदायक बिजली और पृथ्वी, उत्तम धन के लिए रोगनाशक और भयनिवर्तक हों।

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शं योरभिस्रवन्तु नः ॥१७॥

अर्थ–शान्तिदात्री जगन्माता हमारे अभीष्ट की पूर्ति और भक्तिरस का पान कराने के लिए हमारे लिए शान्तिदायिनी हो। वह हमारे चारों ओर शान्ति की वर्षा करे और रोग-दोष एवं शोकादि को दूर कर दे।

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१८॥

अर्थ–सूर्य आदि लोक सुखदायक हों। मध्यलोक सुखदायक हों। भूलोक सुखदायक हो। औषधियाँ सुखदायक हों। वृक्ष सुखदायक हों। दिव्य पदार्थ सुखदायक हों। ईश्वर, वेद-विद्या व जितेन्द्रियता सुखदायक हों। सब कुछ सुखदायक हो। शान्ति भी सच्ची हो। ऐसी शान्ति मुझको प्राप्त हो।

ओं तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतꣳ शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ॥१९॥

अर्थ–सबको देखने वाला, विद्वानों का हितकारी, प्रलय से पूर्व विद्यमान परब्रह्म है। हम सौ वर्ष तक कल्याण देखें, सौ वर्ष तक

जीवें, सौ वर्ष तक हम सुनते रहें। सौ वर्ष तक शुभ वाणी बोलते रहें। सौ वर्ष तक स्वतन्त्रता से अदीन हो रहें। सौ वर्ष से अधिक भी हम ऐसा ही व्यवहार करते रहें।

ओं यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिव संकल्प- मस्तु ॥२०॥

अर्थ–*हे परमात्मन् ! जो जागते हुए पुरुष का दिव्यगुण वाला मन दूर चला जाता है और वही मन सोए हुए का उसी प्रकार चलता रहता है। जो दूर-दूर ले जाने वाला विषय-प्रकाशन इन्द्रियों का एक प्रकाशक है, वह मेरा मन धार्मिक विचार वाला हो।*

ओं येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः। यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्प-मस्तु ॥२१॥

अर्थ–*जिस मन द्वारा कर्म के जानने वाले धीर पुरुष यज्ञ अर्थात् धर्म-व्यवहार में कामों को करते हैं और जो प्राणियों के भीतर अद्भुत और पूजनीय है, वह मेरा मन शुभ विचार वाला हो।*

ओं यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऋते किंचन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्प-मस्तु ॥२२॥

अर्थ–*जो मन ज्ञान का उत्पादक, स्मरणशक्ति और साधारण शक्ति का आधार है, जो जीती-जागती ज्योति प्राणियों के भीतर है, जिसके बिना कुछ भी काम नहीं किया जाता, वह मेरा मन शुभ विचार वाला हो।*

ओं येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत्, परिगृहीतममृतेन सर्वम्। येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्प-मस्तु ॥२३॥

अर्थ—*प्रभो ! जिस अमर मन के द्वारा तीनों काल का सब वृत्तान्त सर्वथा जाना जाता है, जिसके द्वारा सात हवन करने वालों से पूरा किया हुआ पूजनीय कर्म फैलाया जाता है, वह मेरा मन शुभ संकल्प वाला हो।*

ओं यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः। यस्मिꣳश्चित्तꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु ॥२४॥

अर्थ—*परमात्मन् ! जिस मन में चारों वेदों का ज्ञान इस प्रकार विद्यमान है जैसे रथ के पहिये में अरे अटके रहते हैं, जिनमें प्राणियों का सब विचार बना हुआ है, वह मेरा मन भलाई का ही विचार करने वाला हो।*

ओं सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्वाजिन इव। हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसंकल्प-मस्तु ॥२५॥

अर्थ—*प्रभो ! जो मन मनुष्य को लगातार लिए फिरता है जैसे चतुर सारथि बागडोर से वेग वाले घोड़ों को। जो हृदय में ठहरा हुआ सबका चलाने वाला, बड़ा ही वेग वाला है, वह मेरा मन मंगल विचार युक्त हो।*

ओं स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते। शं राजन्नोषधीभ्यः ॥२६॥

अर्थ—*हे परमेश्वर ! गौओं और मनुष्यों की रक्षा के लिए, अन्न और सोम आदि औषधियों की रक्षा के लिए हमें सामर्थ्य दो।*

ओं अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे। अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥२७॥

अर्थ—*हे भगवन् ! हमें द्युलोक, मध्यलोक और पृथिवीलोक अभय करें, पश्चिम में अभय हो, पूर्व में अभय हो, उत्तर और दक्षिण में हमारे लिए अभय हो।*

ओं अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥२८॥

अर्थ—*अभय प्रभो ! हमें मित्र और अमित्र से और ज्ञात, अज्ञात से अभय हो, दिन और रात से हमें निर्भयता प्राप्तं हो। सब दिशाओं के निवासी प्राणी मेरे मित्र व हितकारी हों।*

॥ इति शान्तिप्रकरणम् ॥

अग्न्याधान मंत्र

ओं भूर्भुवः स्वः। इस मंत्र से कपूर को कड़छी में रख अग्नि प्रज्ज्वलित करें।

अर्थ—*हे ईश्वर ! आप जीवनदाता, दुःख विनाशक एवं सुखस्वरूप हैं।*

ओं भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ॥

इस मंत्र से वेदी के बीच में अग्नि स्थापित करें।

अर्थ—*हे प्रभो ! आपकी बनाई इस धरती पर, जहाँ सब विद्वान् यज्ञ करते हैं, मैं अग्नि का आधान कर रहा हूँ। आप मुझे अन्न व ऐश्वर्य से भरपूर कीजिए, जिससे मैं अपने समाज के लोगों की सहायता कर सकूँ। मेरा मन आकाश जैसा विशाल कीजिए तथा मेरे मन में पृथ्वी जैसा धैर्य व सहनशीलता हो।*

* अग्नि प्रदीपन मंत्र *

ओं उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयंच अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत ॥

इस मंत्र से छोटी-छोटी समिधा रख अग्नि को प्रदीप्त करें।

अर्थ–*हे अग्ने ! तुम प्रदीप्त हो। तुम्हारी कृपा से यजमान यह यज्ञ सम्पन्न कर सके और समाज की सेवा कर सके। हमें सद्बुद्धि दीजिए, हम सब परस्पर मिलकर रहें।*

समिधाधान मंत्र

निम्न मंत्रों से आठ अंगुल लम्बी ३ समिधा घी में भिगोकर अग्नि कुंड में रखें–

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम ॥ पहली समिधा

अर्थ–*हे अग्निदेव ! आप प्रकाशमय हैं। इस समिधा एवं घी से प्रदीप्त होइए। हमें अन्न, धन, सुख व पुत्र से समृद्ध कीजिए। हमारी शारीरिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति कीजिए। यह आहुति अग्नि के लिए है। मेरा अपना तो कुछ नहीं, सब कुछ प्रभु का दिया है।*

ओं समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्। आस्मिन् हव्या जुहोतन।

ओं सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे–इदं न मम। दूसरी समिधा

अर्थ–*हे मनुष्यों ! तुम समिधा से अग्नि को प्रदीप्त कर के घी से इस अग्नि को प्रचण्ड करो और फिर इसमें हव्य पदार्थ डालो।*

जब अग्नि पूर्णतः प्रदीप्त हो जाये और यह चमक रही हो तभी पिघला हुआ घी डालो। यह जातवेदस अग्नि को मेरी आहुति है, इस में मेरा कुछ नहीं।

(आध्यात्मिक भाव यह है कि हम अपने आप प्रभु को समर्पित कर के स्तुति मंत्रों से उसकी उपासना करें। जब भगवान् की हृदय में अनुभूति हो जाये, तो हम उसी में लीन रहें।)

ओं तं त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन वर्धयामसि। बृहच्छोचा यविष्ठ्य स्वाहा। इदमग्नयेऽङ्गिरसे इदन्न मम। तीसरी समिधा

अर्थ–*हे अंग-अंग में विद्यमान तेजःस्वरूप, हम जैसे समिधा और घृत से इस अग्नि को बढ़ाते हैं, वैसे ही तुझे अपने मन में प्रदीप्त करें। जैसे यह अग्नि प्रकाशमय युवा है, ऐसे ही तुझे हृदय में विद्यमान रखें। यह मेरी समिधा अंगिरस अग्नि को है। इसमें मेरा कुछ नहीं है।*

* घृताहुति मंत्र *

निम्न मंत्र को पाँच बार बोलकर घी की पाँच आहुतियाँ देवें–

ओं अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे–इदन्न मम।

* जल-प्रसेचन के मंत्र *

अंजलि से जल सेचन करें–

ओं अदितेऽनुमन्यस्व ॥ पूर्व दिशा में।

अर्थ–*हे प्रभु ! हमें अच्छे कर्म करने के लिए अच्छी बुद्धि दीजिए।*

ओं अनुमतेऽनुमन्यस्व ॥ पश्चिम दिशा में।

अर्थ–*हे पिता परमेश्वर ! हमें शुभ कर्म करने के लिए अनुकूल*

बुद्धि दीजिए।

ओं सरस्वत्यनुमन्यस्व ॥ उत्तर दिशा में।

अर्थ–*हे पिता परमेश्वर ! पुण्य कर्मों के लिए हमें मेधा बुद्धि दीजिए।*

ओं देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥

अर्थ–*हे ईश्वर ! मेरी बुद्धि को पवित्र रखिए, यज्ञ और यज्ञपति को बढ़ाइए और मेरी वाणी सब को प्रिय हो।*

* आघारावाज्याहुति *

निम्न मंत्रों से हवनकुंड के उत्तर व दक्षिण भाग में घी की आहुति देवें–

ओं अग्नये स्वाहा। इदमग्नये–इदन्न मम। उत्तर

ओं सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय–इदन्न मम। दक्षिण

आज्यभागाहुति

निम्न मंत्रों से मध्य में आहुति देवें–

ओं प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये–इदन्न मम।

ओम् इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय–इदन्न मम।

प्रातःकाल आहुति के मंत्र

निम्न मंत्रों से यजमान घी तथा अन्य लोग सामग्री की आहुति देवें–

ओं सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा ॥

अर्थ–हे जगत् के उत्पादक, ज्ञान-ज्योति के प्रकाशक भगवान् ! यह आहुति आपके लिए है।

ओं सूर्यो वर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

अर्थ–ब्रह्मयज्ञ के दाता, ज्ञानस्वरूप परमेश्वर ! आपकी सत्य वेद-ज्योति सर्वत्र फैले, अर्थात् प्रकाश दे।

ओं ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

अर्थ–हमारे नेत्रों की ज्योति प्रभु आप हैं और आप ही से सारा संसार प्रकाश पा रहा है। हम भी उसी ज्योति की प्राप्ति के लिए यह आहुति दे रहे हैं।

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा ॥

अर्थ–उपजने वाली दैवी शक्तियों और ऐश्वर्य के दाता सूर्यदेव उषा के साथ-साथ हमारी इस आहुति को स्वीकार करें और यज्ञ की सुगंधि को पूरे संसार में फैला दें। इसी प्रकार हे विश्व के उत्पादक प्रभो ! आपकी अनुभूति करते हुए हम लोग संसार में सद्गुणों की आहुति फैला दें।

सायंकाल आहुति के मंत्र

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

अर्थ–हे प्रकाश-स्वरूप परमेश्वर ! आप प्रकाशमान, अग्नि प्रकाशमान और विश्व की सकल ज्योतियाँ भी आपके द्वारा प्रकाशमान हैं। आप सुख और आनन्द दें।

ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ॥

अर्थ–हे जगत् के उत्पादक प्रभो ! आप तेज-स्वरूप हैं और

अग्नि भी तेज स्वरूप है। आप दोनों हमारे लिए मंगलकारी हों।

निम्न मंत्र को मौन मन में उच्चारण करके आहुति देवें—

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा ॥

अर्थ—*भगवान् ज्योति स्वरूप हैं, अग्नि उन्हीं की ज्योति है और अग्नि की ज्योति संसार में है, उन्हीं ज्योतियों की ज्योति प्रभु को हम यह आहुति अर्पण करते हैं।*

ओं सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।

अर्थ—*प्रकाशमान अग्नि उस ईश्वर का ही रूप है जिसने यह संसार बनाया है और जो सारे संसार का अग्रणी है। अग्निदेव ! हमारी आहुति को स्वीकार करें और यज्ञ की सुगंधि समस्त संसार में फैलाएँ।*

प्रातः-सायं काल के मंत्र

ओंभूरग्नयेप्राणायस्वाहा।इदमग्नयेप्राणाय–इदंनमम।

अर्थ—*हे प्रभो ! आप प्राणप्रिय हैं और यह सर्वत्र व्यापक होने वाली अग्नि महान् गतिशील है। प्राणवायु की शुद्धि के लिए मैं यह आहुति अग्नि को अर्पण करता हूँ जो केवल मेरे लिए नहीं, समस्त संसार की प्राण-शक्ति के लिए है।*

ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा। इदं वायवेऽपानाय इदन्न मम।

अर्थ—*दुःखों को दूर करने वाले भगवन् ! यह आहुति संसारके कष्टों को दूर करने वाले आप तथा कष्टनिवारक वायु के लिए है। मेरा इस में कुछ नहीं है।*

ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय

व्यानाय–इदं न मम।

अर्थ– *भगवन् ! आप सुख-स्वरूप हैं, सूर्य की ज्योति और उस व्यान वायु के लिए यह आहुति है, जो जठराग्नि तीव्र रखती है। व्यान स्वरूप आपको भी यह आहुति समर्पित है। मेरा इसमें कुछ नहीं है।*

ओंभूर्भुवःस्वरग्निवाय्वादित्येभ्यःप्राणापानव्यानेभ्यःस्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यःप्राणापानव्यानेभ्यःइदन्नमम।

अर्थ– *हे परमेश्वर आप सर्वाधार, सर्वव्यापी और सुखस्वरूप हैं। आप दुःख-विनाशक प्रभु के लिए अग्नि, वायु तथा सूर्य की किरणों की पवित्रता के लिए तथा प्राण-अपान-व्यान की शुद्धि के लिए यह सुंदर और उत्तम पदार्थों की आहुति है। इस पर मेरा अधिकार है।*

ओं आपो ज्योतिर्रोसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरों स्वाहा।

अर्थ– *सर्वरक्षक, जल के समान शांतिप्रदाता, ज्योतिस्वरूप, ज्ञानस्वरूप, आनन्द-रस के दाता, सबसे महान् और जो मुक्तिदाता सत् चित् और आनन्दरूप है, उस प्रभु को यह आहुति है।*

ओं यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया
मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा ॥

अर्थ– *हे अग्निदेव ! जिस मेधा बुद्धि का विद्वान जन आश्रय लेते हैं, जो बुद्धि आपने मेरे पूर्वजों को दी थी, हे ज्ञानस्वरूप ज्यातिर्मय भगवन् ! मुझे भी वह मेधा बुद्धि प्रदान कीजिए।*

ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।

अर्थ– *हे जगत्-रचियता, सुखों के दाता, विश्व-प्रेरक दिव्य-स्वरूप परमेश्वर ! आप हमारे समस्त दुःखों, संकटों, बुराइयों को दूर करें और जो कल्याणकारी हों, उन्हें हमें प्राप्त कराइए।*

ओं अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा।

अर्थ–*हे ईश्वर ! आप स्वप्रकाशस्वरूप एवं ज्ञानमय हैं। आप हमें उस रास्ते पर लगाइए जो सच्चे ज्ञान एवं धर्म को जाता है। ऐसी कृपा करो कि हम शुभ कर्मों द्वारा इस संसार में ज्ञान व ऐश्वर्य प्राप्त कर सकें। हमारे कुटिलता-युक्त कर्म व पाप दूर कीजिए। शुद्ध भावना से प्रेरित होकर हम हमेशा आपकी उपासना करते रहें।*

सामान्य प्रकरणम् (प्रधान होम)

अग्न्याधान, समिधाधान, ५ घृताहुति, प्रसेचन तथा आघारावाज्य भागाहुति के पश्चात् निम्नलिखित विधि करें–

व्याहृत्याहुति

तत्पश्चात् घी की चार आहुति देवें–

ओं भूरग्नये स्वाहा। इदमग्नये–इदन्न मम।

ओं भुवर्वायवे स्वाहा। इदं वायवे–इदन्न मम।

ओं स्वरादित्याय स्वाहा। इदमादित्याय–इदन्न मम।

ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः स्वाहा। इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदं न मम।

स्विष्टकृत होमाहुति

निम्न मंत्र से एक आहुति घी अथवा भात की देवें–

ओं यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचं यद्वा न्यूनमिहाकरम्। अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात् सर्वं स्विष्टं सुहुतं करोतु मे।

अग्नये स्विष्टकृते सुहुतहुते सर्वप्रायश्चित्ताहुतीनां कामानां

समर्द्धयित्रे सर्वान्नः कामान्त्समर्द्धय स्वाहा। इदम् अग्नये स्विष्टकृते–इदन्न मम।

अर्थ–ओ३म् ! हे ज्ञानस्वरूप प्रभो ! इस मंगलमय यज्ञकर्म को करते हुए मुझसे भ्रम अथवा भूलवश, जाने या अनजाने से जो अधिकता या न्यूनता रह गई हो उसे आप मेरी उत्तम भावनाओं को जानते हुए सुहुत और सफल कीजिए। जो कुछ मैंने स्नेह एवं श्रद्धा से अर्पित किया है, उसे स्वीकार कीजिए। समस्त उत्तम मनोरथों को सिद्ध करने वाले, उत्तम दानी, पापों के नाशक, पुण्यों के प्रेरक, ज्ञान-विज्ञान के लिए हमारी सब पवित्र कामंनाओं को आप पूरा कीजिए। यह आहुति शुद्ध पवित्र इष्ट की सिद्धि करने वाले अग्निरूप परमेश्वर आपके लिये है। यह अब मेरी नहीं है।

प्राजापत्याहुति

निम्न मंत्र को मन में बोलकर केवल ओ३म् तथा स्वाहा का उच्चारण करके एक आहुति घी की देवें–

ओं प्रजापतये स्वाहा ॥ इदं प्रजापतये–इदन्न मम।

चार आज्याहुति

निम्न मंत्रों से चार घी की आहुति देवें–

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः। आरे बाधस्व दुच्छुनां स्वाहा। इदमग्नये पवमानाय–इदन्न मम।

अर्थ–वह ओम् जीवनदाता, दुःखनाशक और सुखों की वर्षा करने वाला है। वह हमें शक्ति एवं जीवन दे। अग्निदेव को मैं यह आहुति देता हूँ। मेरा अपना तो कुछ नहीं; सब कुछ हे प्रभु, आप का ही है।

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयं स्वाहा। इदमग्नये पवमानायइदन्न मम।

अर्थ–*जीवनदाता, दुःखनाशक और सुखों की वर्षा करने वाले हे प्रभु, आप सर्वोपरि हैं, न्यायाकारी व सत्यस्वरूप हैं, आप हमारे नेता हैं। अग्निदेव हम आपको आहुति देते हैं। सब कुछ आपका ही दिया है, मेरा तो इसमें कुछ भी नहीं है।*

ओं भूर्भुवः स्वः। अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दधद्रयिं मयि पोषं स्वाहा। इदम् अग्नये पवमानाय–इदन्न मम॥

अर्थ–*जीवनदाता, दुःखनाशक और सुखों की वर्षा करने वाले हे ईश्वर ! मुझे जीवन और शक्ति दीजिए, स्नेह और दया की दृष्टि रखिए। मैं यह आहुति अग्निदेव को देता हूँ। सब कुछ प्रभु का दिया है। मेरा तो कुछ भी नहीं।*

ओं भूर्भुवः स्वः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो, विश्वा जातानि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् स्वाहा। इदं प्रजापतये–इदन्न मम॥

अर्थ–*जीवनदाता, दुःख-विनाशक और सुखों की वर्षा करने वाले हे प्रजापालक प्रभु ! आपसे बढ़ कर संसार में कोई दूसरा नहीं है। जिस उत्तम कामना से हम इस यज्ञ में आहुति अर्पण करते हैं, हमारी वह शुद्ध कामना पूरी हो। हम धन-ऐश्वर्यों के स्वामी बनें। यह आहुति आप प्रजापति के लिए है इसमें मेरा कुछ नहीं है।*

अष्ट आज्याहुति

निम्न आठ मंत्रों का उच्चारण करते हुए यजमान घी की आहुति तथा अन्य भाग लेने वाले 'स्वाहा' शब्द के साथ हवन कुंड में सामग्री की आहुति देवें–

ओं त्वं नो अग्ने वरूणस्य विद्वान् देवस्य हेडोऽव यासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम ॥

अर्थ*–*हे अग्ने ! आप प्रकाशमान, ज्ञानवान, अग्र नेता व सब विद्वानों में श्रेष्ठ हैं। हमें ऐसी बुद्धि दीजिए कि हम कभी किसी विद्वान् महापुरुष का अनादर. न करें। हमारे हृदय से द्वेष की भावना को दूर कर दीजिए। यह आहुति अग्नि एवं वरुण देव रूप आप के लिए है, मेरे लिए नहीं।

ओं स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ अवयक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृडीकं सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्याम्–इदन्न मम ॥

अर्थ*–*हे ज्ञानवान् प्रभु ! अपने आशीर्वाद से हम सब की रक्षा कीजिए, इस प्रभात बेला में अग्निहोत्रादि शुभ और मंगल कार्यों में आप हमारे विशेषतया समीप हैं। आप हमें ऐसी बुद्धि दीजिए कि हम सदैव विद्वानों व सत्पुरुषों की संगति मे रहें। यह आहुति अग्नि एवं वरुण रूप आप के लिए है। सब कुछ आप प्रभु का दिया है, मेरा कुछ भी नहीं है।

ओं इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके स्वाहा। इदं वरुणाय–इदन्न मम ॥

अर्थ–*हे प्रशंसनीय परमेश्वर ! आप मेरी विनम्र प्रार्थना सुनिए और इस यज्ञ के पवित्र समय पर हम को सुख व शांति प्रदान कीजिए। मैं अपनी रक्षा के लिए ही तो बार-बार आपको पुकारता हूँ। यह यज्ञ-आहुति आपके लिए है, मेरा तो कुछ नहीं, सब कुछ प्रभु का दिया है।*

ओं तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशंस मा न आयुः प्रमोषीः स्वाहा। इदं वरुणाय–इदन्न मम ॥

अर्थ–*हे परम प्रशंसनीय जगदीश्वर ! वेद-मंत्रों से सामग्री द्वारा यजमान जिन अभिलाषाओं के लिए यज्ञ करता है और स्तुति गाता है, उसकी कामना पूर्ण हो। हमारी प्रार्थना स्वीकार कीजिए, हमें सद्‌बुद्धि दीजिए, हम दीर्घायु हों और हमारी आत्माएँ आपकी भक्ति में प्रवृत्त हों। यह यज्ञ-कर्म आपको समर्पित है, मेरा तो इसमें कुछ नहीं। सब कुछ प्रभु, आप का दिया है।*

ओं ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्‌भ्यः स्वर्केभ्यः–इदन्न मम ॥

अर्थ–*हे वरुण देव ! आप इस संसार की रचना करने वाले एवं चलाने वाले हैं। आपकी ज्ञान बिना कोई भी जीव आँख तक नहीं झपक सकता। यह जो सैंकड़ों और हजारों प्रकार की विघ्न-बाधाएँ यज्ञ-विषय में उठती हैं, उन विघ्न-बाधाओं को दूर करने के लिए हे सर्व- व्यापक प्रभु ! आप व विद्वान् पुरुष कृपा करें और सहयोग प्रदान करें। यह यज्ञ की आहुति वरुण देव व मरुत् देव रूप आप के लिए है। मेरे लिए नहीं।*

ओं अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्त्वमयासि।

अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजं स्वाहा। इदमग्नये अयसे-इदन्न मम ॥

अर्थ–हे ज्ञानमय प्रभु ! आप सर्वव्यापक हैं। आप पापी और दुष्ट कर्म वाले, प्रायश्चित योग्य लोगों को पवित्र बनाने वाले हैं। वास्तव में यह सत्य है कि आप सदैव कल्याण की धारणा रखते हैं। अतः हे प्रभु जी ! आप हमारे इस यज्ञ को सफल बनाइये। हमें ऐसी बुद्धि व शक्ति प्रदान कीजिए कि हम बुरे कार्य न करें। यह आहुति अग्निदेव रूप आप के लिए है, मेरा इस पर अधिकार नहीं है।

ओं उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणाऽऽदित्यायादितये च–इदन्न मम ॥

अर्थ–हे पूजनीय प्रभु ! हम में से आलस्य, प्रमाद, मिथ्या-भाषण, राग-द्वेष, निन्दा, लोभ, मोह, अहंकार आदि, ममता, कीर्ति-यश, उपाधि आदि अहंभाव वाले बंधनों को अच्छी तरह नष्ट कर दीजिए। हे अविनाशी ! प्रभु। हम आपके नियमों का पालन करते हुए सदा पाप से बचें और मुक्ति के महान् सुख को प्राप्त कर सकें। यह यज्ञ की आहुति वरुण, आदित्य व अदिति रूप आपके लिए है। यह सब मेरी नहीं है।

ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ। मा यज्ञं हिंसिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः स्वाहा इदम्-जातवेदोभ्याम् इदन्न मम ॥

अर्थ—हे ज्ञानमय अनन्त प्रभु ! हमारी प्रार्थना है कि विद्वान् लोग मनसा, वाचा, कर्मणा एक हों। यज्ञ का कभी भी लोप न होने दें। वेदों के विद्वान् अपने सदुपदेश से हमारा कल्याण करें। यह आहुति जातवेद भगवान तेरे लिए है। मेरे लिए नहीं, मेरा इस पर अधिकार नहीं है।

विशेष अवसरों पर गायत्री मंत्र अथवा महामृत्युंजय मंत्र की विशेष आहुतियाँ।

गायत्री–मंत्र

ओं भूर्भुवः स्वः। तत् सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

महामृत्युंजय मंत्र

ओं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम।
उर्वारूकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥ यजु० ३।६०

अर्थ—शुद्ध गन्धयुक्त, शरीर, आत्मा और समाज के बल को बढ़ाने वाला जो रुद्र रूप जगदीश्वर है हम उसकी नित्य स्तुति करें और मोक्ष (अमरत्व) सुख को प्राप्त करें। इनकी कृपा से हम उसी प्रकार प्राण व शरीर के वियोग से छूट जावें जिस प्रकार खरबूजा पककर लता के बंधन से छूटकर अमृत तुल्य हो जाता है।

हे प्रभो ! उत्तम गंधयुक्त रक्षक स्वामी सबके अध्यक्ष हम आपका निरंतर ध्यान करें। लता के बंधन से छूटे पके अमृतरूप खरबूजे के तुल्य इस शरीर से छूट जायें परन्तु मोक्ष और अन्य जन्म के सुख और सत्य धर्म के फल से कभी न छूटें।

पूर्णाहुति मंत्र

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का तीन बार उच्चारण करके तीन आहुति देवें–

ओ३म् सर्वं वै पूर्णं ँ स्वाहा ॥

अर्थ–*समस्त कार्य पूर्ण एवं सिद्ध हों (स्वाहा) यही प्रार्थना है।*

शेष घृत अग्नि में छोड़ देवें–

ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

पाक्षिक यज्ञ की आहुतियाँ

पूर्णमासी और अमावस्या के दिन नैत्यिक अग्निहोत्र के पश्चात् स्थाली पाक (खीर अथवा हलवा) की निम्न मंत्रों से विशेष आहुतियाँ देवें–

पूर्णिमा के दिन–	अमावस्या के दिन–
ओं अग्नये स्वाहा	**ओं अग्नये स्वाहा**
ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा	**ओं इन्द्राग्नीभ्यां स्वाहा**
ओं विष्णवे स्वाहा	**ओं विष्णवे स्वाहा**

इसके पश्चात् निम्न मंत्रों से चार घी की आहुतियाँ देवें–

ओं भूरग्नये स्वाहा।

ओं भुववार्यवे स्वाहा।

ओं स्वरादित्याय स्वाहा।

ओं भूर्भुवः स्वरग्नि वाय्वादित्येभ्यः स्वाहा।

वामदेव्यगान

ओं भूर्भुवः स्वः। कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता ॥१॥

अर्थ–*हे राजन् इन्द्र ! किस रीति से तू हमारा मित्र होवे ? रक्षा से। किस कर्म या वृत्ति से विचित्र गुण कर्म स्वभाव होवे ? प्रज्ञायुक्त से। इस प्रकार सर्वदा वृद्धियुक्त होवें।*

ओं भूर्भुवः स्वः। कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः। दृढा चिदारुजे वसु ॥२॥

अर्थ–*हे राजन् इन्द्र ! दृढ़ भी शत्रु के वास करने की जगह दुर्गादि के तोड़ने को हृष्टिकारक पदार्थों में उत्तम सच्चा हृष्टिकारक क्या पदार्थ तुझको हृष्ट करे ? अन्न का।*

ओं भूर्भुवः स्वः। अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्। शतं भवास्यूतये ॥३॥

अर्थ–*हे राजन् इन्द्र ! मेरी सृष्टि में स्थित बूढ़े, निर्बल और तुझसे शत्रु भाव न करके मित्र भाव रखने वालों को बहुत अच्छे सर्वत्रः रक्षा के लिये तू रक्षक हो।*

प्रार्थना

त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देव देव ॥

प्रार्थना मंत्र

होम समाप्त होने के पश्चात् शेष घृत पात्र में जल डालकर सभी सज्जन उस जल को हाथ से स्पर्श कर हाथ, पैर, मुख का मर्दन करके इन्द्रियों को बलवान बनाने के लिये निम्न मंत्रों से भगवान से प्रार्थना करें–

ओं तनूपाऽग्नेऽसि तन्वं मे माहि। ओं आयुर्दाऽग्नेऽस्यायुर्मे देहि।

अर्थ–*हे शरीर रक्षक अग्ने ! मेरे शरीर की रक्षा करो। हे आयु की वृद्धि करने वाले अग्ने ! मुझे जीवन दो।*

ओं वर्चोदाऽग्नेऽसि वर्चो मे देहि। ओं अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण ॥

अर्थ–*हे वर्चस् व कान्ति प्रदान करने वाले अग्ने ! मुझे कान्ति दो। हे सर्व रक्षक अग्ने ! मेरे शरीर में जो न्यूनता हो उसे पूर्ण करो।*

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।

अर्थ–*आप तेज स्वरूप हो मुझ में तेज का आधान करो। आप वीर्यवान् हो मुझ में वीर्य का आधान करो।*

बलमसि बलं मयि धेहि। ओजोऽस्योजो मयि धेहि।

अर्थ–*आप बल स्वरूप हो मुझ में बल का आधान करो। आप ओज स्वरूप हो मुझ में ओज का आधान करो।*

मन्युरसि मन्युं मयि धेहि। सहोऽसि सहो मयि धेहि।

अर्थ–*आप मन्युमय हो मुझ में मन्यु का आधान करो। आप सहिष्णु हो मुझ में सहिष्णुता का आधान करो।*

ओं यत्तेऽग्ने तेजस्तेनाऽहं तेजस्वी भूयासम्।
ओं यत्तेऽग्ने वर्चस्तेनाऽहं वर्चस्वी भूयासम्।

अर्थ–*हे अग्ने ! तुम्हारे तेज से मैं तेजस्वी बनूं। हे अग्ने ! तुम्हारे वर्चस्व को पाकर मैं वर्चस्वी बनूं।*

ओं यत्तेऽग्ने हरस्तेनाऽहं हरस्वी भूयासम्।

ओं मेधां मे देवः सविता आदधातु।

अर्थ–*हे अग्ने ! तुम्हारे सामर्थ्य से मैं सामर्थ्यवान बनूं। दिव्य ज्योतिर्मय सन्मार्ग में प्रेरणा देने वाला भगवान् मुझे सद्बुद्धि दे।*

ओं मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु।

ओं मेधां मे अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ।

अर्थ–*दिव्य गुणमयी ज्ञानशक्ति मेरी मेधा को पुष्ट करें। दिव्य शक्तिमय सुखदायक प्राण अपान मेरी मेधा को पुष्ट करें।*

यज्ञ रूप प्रार्थना

यज्ञ रूप प्रभो हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल कपट को मानसिक बल दीजिए।
वेद की बोलें ऋचायें सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मग्न सारे शोक सागर से तरें ॥
अश्वमेधादिक रचायें यज्ञ पर उपकार को।
धर्म मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को ॥
नित्य श्रद्धा भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें ॥
भावना मिट जायें मन से पाप अत्याचार की।
कामनायें पूर्ण होंवे यज्ञ से नर नार की ॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिये।
वायु जल सर्वत्र हों, शुभ गन्ध को धारण किये ॥

स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेम पथ विस्तार हो।
'इदन्नमम' का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो ॥
हाथ जोड़ झुकाये मस्तक वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे ॥

कामना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ॥
सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय।
यह अभिलाषा हम सबकी मेरे भगवन् पूरी होय ॥
विद्या, बुद्धि, तेज बल सबके भीतर होय।
दूध-पूत-धन धान्य से वंचित रहे न कोय ॥
आप की भक्ति प्रेम से मन होवे भरपूर।
राग-द्वेष से चित्त मेरा कोसों भागे दूर ॥
मिले भरोसा आपका सदा हमें जगदीश।
आशा तेरे धाम की बनी रहे मम ईश ॥
पाप से हमें बचाइये करके दया दयाल।
अपना भक्त बनाय के हमको करो निहाल ॥
दिल में दया उदारता मन में प्रेम अपार।
हिये में धीरज वीरता सबको दो करतार ॥

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधि महारथो जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धीर्योषाजिष्णुरथेष्ठाः।

सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे-निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु। फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योग क्षेमो न कल्पताम् ॥

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्मतेजधारी।
क्षत्रिय महारथी हों, अरिदल विनाशकारी ॥
होवें दुधारु गौवें, पशु अश्व आशुवाही।
आधार राष्ट्र की हों, नारि सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योधा, यजमान पुत्र होवें ॥
इच्छानुसार वर्षे, पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल-फूल से लदी हों, औषध अमोघ सारी।
हो योग क्षेमकारी, स्वाधीनता हमारी ॥

ऋग्वेद का संगठन सूक्त

ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ॥१॥

अर्थ–*हे प्रभो, तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को। वेद सब गाते तुम्हें हैं, कीजिये धन-वृष्टि को ॥*

ओं संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ॥२॥

अर्थ–*प्रेम से मिलकर चलो, बोलो सभी ज्ञानी बनो। पूर्वजों की भाँति तुम, कर्त्तव्य के मानी बनो ॥*

ओं समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः।
सह चितमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः।

समानेन वो हविषा जुहोमि ॥३॥

अर्थ–*हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हों। ज्ञान-देता हूँ बराबर, भोग्य पा सब नेक हों ॥*

ओं समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ॥४॥

अर्थ–*हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा। मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख-सम्पदा ॥*

॥ शान्ति पाठ ॥

ओं द्यौः शांतिरन्तरिक्षꣳ शांतिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्ति। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

अर्थ–*हे परमेश्वर ! प्रकाशमान सूर्य सुखदायक हो, अन्तरिक्ष सुखदायक हो, भूलोक सुखदायक हो, जल और औषधियाँ सुखदायक हों, सब वृक्ष वनस्पति सुखदायक हों। इनसे भिन्न सुख सुखदायक हों, स्वयं शान्ति भी मुझको शान्ति देवे।*

पुरोहित को दक्षिणा दें, प्रसाद वितरण कर सभा विसर्जित करें।

॥ इति अग्निहोत्र (देवयज्ञ ॥

पारिवारिक यज्ञ

पितृ यज्ञ

पितृ यज्ञ श्राद्ध और तर्पण को कहते हैं। पितृ ऋण से उऋण होने के लिये जीवित माता-पिता की सेवा करना ही श्राद्ध है तथा अपने सत्कर्म और श्रेष्ठ आचरण से माता-पिता को तृप्त करना ही तर्पण है। अतः प्रत्येक संतान को अपने माता-पिता की सेवा करना अपना परम धर्म समझना चाहिए।

बलिवैश्वदेव यज्ञ

पाकशाला से फीके व मीठे अन्न से निम्नलिखित दस मन्त्रों से चूल्हे की अग्नि में आहुतियाँ देनी चाहिएँ–

ओं अग्नये स्वाहा ॥ ओं सोमाय स्वाहा ॥
ओं अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ॥ ओं विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा ॥
ओं धन्वन्तरये स्वाहा ॥ ओं कुह्वै स्वाहा ॥
ओं अनुमत्यै स्वाहा ॥ ओं प्रजापतये स्वाहा ॥
ओं सह द्यावापृथिवीभ्यां स्वाहा ॥ ओं स्विष्टकृते स्वाहा ॥

अतिथि यज्ञ

विद्वान्, परोपकारी, जितेन्द्रिय, सत्यवादी, धार्मिक, देशाटन करने वाले पुरुष को 'अतिथि' कहते हैं। उनका यथायोग्य आदर-सत्कार ही 'अतिथि यज्ञ' है।

सामान्य यज्ञ करके अवसर विशेष के अनुरूप आहुति देवें। आशीर्वाद शुभ कामना देकर यज्ञ सम्पन्न करें।

जन्मदिवस (वर्षगांठ)

आचमन, प्रार्थना मंत्र, स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण, अग्न्याधान सामान्य प्रकरण के पश्चात् जन्मदिवस के उपलक्ष में निम्न मन्त्रों से विशेष आहुतियाँ दें–

ओं आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधेऽ असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे स्वाहा ॥१॥

ओं देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानां रातिरभि नो निवर्त्तताम्। देवानां सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे स्वाहा ॥२॥

ओं भद्र कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः स्वाहा ॥३॥

ओं तच्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् स्वाहा ॥४॥

ओं आयुर्यज्ञेन कल्पतां, प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पतां श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां, वाक् यज्ञेन कल्पतां, मनोयज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां, ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पतां, स्वर्यज्ञेन कल्पतां, पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां, यज्ञोयज्ञेन कल्पताम्। स्तोमश्च यजुश्च ऋक्च सामश्च रथन्तरञ्च स्वर्देवाऽगन्मामृता अभूम प्रजापते प्रजा अभूम वेट् स्वाहा ॥५॥

ओं परिधत्त धत्त नो वर्चसेमं जरा मृत्यु कृणुतदीर्घमायुः। वृहस्पति प्रायछत वास एतत्सोमाय राज्ये परिधातवा उ स्वाहा ॥६॥

ओं एह्यश्मान मा तिष्ठाश्माभवतु ते तनूः कृण्वन्तु विश्वे देवाः आयुष्टे शरदः शतम् स्वाहा ॥७॥

ओं यस्यते वासः प्रथमवास्तं त्वा विश्वेऽवन्तु देवाः। तं त्वा भ्रातरा सुवृधां वर्धमान मनु जायन्तां वहवः सुजातम् स्वाहा ॥८॥

ओं त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्द्वेषु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम् स्वाहा ॥९॥

पूर्णाहुति स्थालीपाक (हलुवा) अथवा गोंले में घृत भर कर दें। छोटे बच्चे के माता-पिता यजमान बनें। योग्य होने पर किशोर से आहुति स्वयं दिलवायें।

आशीर्वाद-बधाई

जन्मदिवस-

"बालक ! त्वम् आयुष्मान् वर्चस्वी-तेजस्वी
श्रीमान् परोपकारी भूयाः"।

भजन बधाई

नाथ हो बालक आयुष्मान।
ज्योति से जिस कुल की बालक कुल का हो उत्थान ॥
ब्रह्मचारी ईश्वर विश्वासी, गुण ग्राही श्रीमान।
धर्म में निष्ठा सत्यव्रती हो वेदों का विद्वान ॥
वीर हो श्रद्धानन्द सरीखा दें निर्भयता दान।
पूर्व आर्य वीर जनों का प्रतिनिधि हो भगवान ॥

मात-पिता का आज्ञाकारी श्रवण कुमार समान।
राम भरत सा परस्पर प्रेमी उत्तम गुण की खान ॥
देश के पूर्ण क्लेश हरे जो रह कर निरभिमान।
ऋषि सा ऊँचा ईश भक्त हो हरे सकल अज्ञान ॥

नामकरण

"हे बालक ! त्वमायुष्मान् वर्चस्वी
तेजस्वी श्रीमान् भूयाः"।

हर्ष का दिवस आया है बधाई हो।
यह शुभ सन्देश लाया है बधाई हो बधाई हो।
फले फूले यह देवी ईश की कृपा रहे इस पर।
यह बालक जिसने ज़ाया है, बधाई हो बधाई हो ॥
हो लम्बी आयु बालक की रखा है नाम अब जिसका।
यदि मुण्डन संस्कार हो...(हुआ है मुण्डन अब जिसका)
प्रेम से रचाया है। बधाई हो बधाई हो
बधाई दे रहा 'नन्दलाल' है परिवार सारे को।
गीत गाकर सुनाया है बधाई हो बधाई हो ॥

चूड़ाकर्म एवं निष्क्रमण संस्कार में आशीर्वाद

"त्वं जीव शरदः शतं वर्धमानः।"

अन्न प्राशन में आशीर्वाद

"त्वमन्नपतिरान्नादो वर्धमानो भूयाः।"

उपनयन संस्कार में आशीर्वाद

"ओ३म् त्वं जीव शरदः शतं वर्द्धमानः,
आयुष्मान् तेजस्वी वर्चस्वी भूयाः"।

विवाह संस्कार में आशीर्वाद

"ओ३म् सौभाग्यमस्तु। ओ३म् शुभं भवतु"।
"ओ३म् स्वस्ति ओ३म् स्वस्ति ओ३म् स्वस्ति" ॥

सामान्य आशीर्वाद

"ओ३म् सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः"।

मंगल कामना

सदा फूलता फलता भगवन् यह याजक परिवार रहे।
रहे प्यार जो किसी से इनका सदा आपसे प्यार रहे ॥
मिथ्या कर अभिमान कभी न जीवन का अपमान करें।
देव जनों की सेवा करके वेदामृत का पान करें ॥
प्रभु आपकी आज्ञा पालन करता हर नर नार रहे ॥
मिले सम्पदा जो भी इनको उसको मानें आपकी।
घड़ी न आने पावे इनपै कोई भी सन्ताप की ॥
यही कामना प्रभु आपसे कर हम बारम्बार रहे ॥
दुनियादारी रहे चमकती धर्म निभाने वाले हों।
सेवा के सांचे में सबने जीवन अपने ढाले हों ॥
बच्चा-बच्चा परिवार का बनकर श्रवण कुमार रहे ॥
बने रहें संतोषी सारे जीवन के हर काल में।
चाल-चलन हो ऐसा ही इनका रहें मस्त हर हाल में।
ताकि 'देश' बसाया इनका सुखदायी संसार रहे ॥

आर्य पर्व पद्धति

आर्यों को निम्न त्यौहार और पर्व मनाने चाहिएँ—

१. नवसंवत्सरोत्सवः (संवत्सरेष्टि)

नूतन वर्ष के स्वागतार्थ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नववर्ष प्रारम्भ होने पर प्रातः सपरिवार सामान्य प्रकरण के अनुसार यज्ञ करके निम्न मंत्रों से विशेष आहुति देंवे—

१. ओं संवत्सरोऽसि, परिवत्सरोऽसीदावत्सरोऽसीद्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि। उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्ताम् मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ताम् संवत्सरस्ते कल्पताम्। प्रेत्या एत्यै सञ्चाञ्च प्र च सारय सुपर्व चिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवः सीद ॥ यजुः० २७।४५॥

२. ओं यमाय यमसूमथर्वभ्योऽवतोकाᳫं संवत्सराय पर्यायिणीम् परिवत्सरायाविजाता मिदावत्सराया तीत्व रीमिद्वत्सरा यातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरा ᳫं संवत्सराय पलिक्वनी मृभुभ्योऽजिनसन्ध ᳫं साध्येभ्यश्चर्मम्नम् ॥ यजुः० ३०।१५॥

३. ओं द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणी नभ्यानि क उ तच्चिकेत। तस्मिन्त्साकं त्रिशता नै शंकवोऽपिता षष्टिर्न चलाचलासः ॥

॥ ऋ० १।१६४।४८॥

४. ओं सप्त युञ्जन्ति रथमेकचक्रमेको अश्वो वहति सप्तनामा। त्रिनाभि चक्रमजरमनर्वं यत्रेमा विश्वा भुवनाधि तस्थुः ॥

॥ ऋ० १।१६४।२॥

५. ओं द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिद्यामृतस्य।
आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्तशतानि विंशतिश्च तस्थुः ॥

६. ओं पञ्चपादं पितरं द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्द्धे
पुरीषिणम्। अथेमे अन्य उ परे विचक्षणं सप्तचक्रे षडर
आहुरर्पितम् ॥

७. ओं पञ्चारे चक्रे परिवर्त्तमाने तस्मिन्नातस्थुर्भुवनानि विश्वा।
तस्य नाक्षस्तप्यते भूरिभारः सनादेव न शीर्यते सनाभिः ॥

८. ओं सनेमि चक्रमजरं विवावृत उत्तानायां दश युक्ता
वहन्ति सूर्यस्य चक्षू रजसैत्यावृतं तस्मिन्नार्पिता भुवनानि विश्वा ॥

॥ऋ ०१।१६४।११, १२, १३, १४॥

९. ओं संवत्सरस्य प्रतिमां यां त्वां रात्र्युपास्महे, सा न
आयुष्मतीः प्रजा रायस्पोषेण संसृजः ॥ ॥अथर्व ३।८।१॥

१०. ओं यस्मान्मासा निर्मितास्त्रिंशदराः संवत्सरो यस्मान्निर्मितो
द्वादशारः। अहोरात्रा यं परियन्तो नापुस्तेनौदनेनातिराणि मृत्युम्

सामाजिक कृत्य—मध्यान्ह में प्रीतिपूर्वक सपरिवार भोजन करें
तथा अपने आश्रित सेवक आदि का भी सत्कार करें।

अपराह्न में सब आर्य पुरुष किसी पार्क अथवा मैदान में एकत्रित
होकर सभा करें। उसमें संवत्सर विषयक वाद-विवाद प्रतियोगिता एवं
व्याख्यान तथा क्रीड़ा प्रतियोगिता (खेल-कूद) आदि का आयोजन
करें। यदि संभव हो पारितोषिक एवं प्रसाद वितरण करें।

२. आर्य समाज का स्थापना दिवस

संवत् १६३२ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को महर्षि दयानन्द ने अपने
विचारों व सत्य वैदिक सिद्धान्तों की आधारशिला मूर्त एवं स्थिर रूप
में बम्बई के गिरगाँव में डॉ० मानिक चन्द्र जी की वाटिका में प्रथम

आर्य समाज के रूप में रखी थी।

इस दिन ब्राह्म मुहूर्त में सब आर्य पुरुष मिलकर प्रभात फेरी (नगर कीर्तन) करें जिसमें परमपिता की महिमा और आर्यसमाज के प्र उद्देश्यों का गान मधुर स्वर में किया जाय। उसके पश्चात् समाज मंदिर में वापिस आकर सार्वजनिक रूप से सामान्य होम यज्ञ करके निम्न मंत्रों से विशेष आहुतियाँ देवें—

१. ओं सं जानीध्वं सं पृच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम्। देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥ अथर्व ६।६४।१॥

२. ओं सं वः पृच्यन्तां तन्वः सं मनांसि समु व्रता। सं वोऽयं ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत् ॥अथर्व ६।७४।१॥

३. ओं ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट संराधयन्तः सधु राश्चरन्तः अन्यां अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः समनसस्कृणोमि ॥ ॥अथर्व ३।३०।५॥

४. ओं समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि। सम्यञ्चोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः ॥

५. ओं सध्रीचीनान्वः संमनसकृणोम्येकश्नुष्टीन्त्सवनेन सर्वान् देवा इवामृतं रक्षमाणाः सायंप्रातः सोमनसो वो अस्तु ॥

अथर्व ३।३०।७॥

६. ओं सं वो मनांसिं सं व्रता समाकूतिर्नयामसि। अमी ये विवृता स्थत तान्वः संनमयामसि ॥ अथर्व ६।६४।१॥

७. ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम् समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥ ऋ० १०।१९१।३॥

८. ओं समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा व सुसहासति ॥ऋ० १०।१९१।४॥

९. ओं तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ऋ० ३।६२।१०॥

१०. ओं दृते दृꣳह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥

मध्याह्न में सपरिवार एकत्र हो भोजन करे तथा अपने आश्रित सेवकों आदि का भी सत्कार करें। अपराह्न व सायंकाल सब आर्य स्त्री पुरुष समाज मंदिर में एकत्र होकर सभा करें। उनमें आर्य समाज स्थापना दिवस की स्मृति में आर्य समाज के इतिहास, उसकी उपयोगिता तथा संगठन की महिमा पर निबन्ध पाठ व भाषण दिये जाये तथा आर्य समाज की अब तक की प्रगति व नवीन वर्ष के लिए कार्यक्रम की योजनाएँ निर्धारित करें और सदस्य वृद्धि और नवीन आर्य समाज की स्थापना का प्रत्यन करें। तदनन्तर मधुर गायन और शांति पाठ के साथ सभा विसर्जित करें।

३. श्रीराम नवमी या श्रीराम जयन्ती

चैत्र शुक्ला नवमी को भारतीय संस्कृति के पोषक मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्म हुआ था। इस दिन राम के आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का संकल्प प्रत्येक आर्य को लेना चाहिए। प्रातः सपरिवार यज्ञ करें। मध्याह्न में मिष्ठान्न युक्त भोजन सपरिवार करें। अपराह्न या सायंकाल में आर्य समाज मंदिर में मिलकर सभा करें तथा राम के जीवनादर्शों पर निबन्ध, कविता पाठ, मधुर संगीत आदि का आयोजन करें।

किसी मैदान में एकत्रित हो शारीरिक व्यायाम तथा दलितों के उत्थान के कार्यक्रम आयोजित किये जायें।

४. हरि तृतीया (हरियाली तीज)

श्रावण शुक्ला तृतीया वर्षा ऋतु में चारों ओर हरियाली देखकर प्रकृति के मधुमय आनन्द को स्वीकार करने के लिये इस पर्व का आयोजन किया गया। स्त्रियों के लिये यह पर्व विशेष उल्लास का है।

प्रातः यज्ञादि से निवृत्त हो पक्वान्न बनाकर स्त्रियाँ अपनी बड़ी बूढ़ियों का सम्मान कर आशीर्वाद प्राप्त करें।

अपराह्न में सखी सहेलियाँ मिलकर झूला झूलें तथा प्राकृतिक शोभा का मधुर गीतों में वर्णन करें।

५. श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबंधन)

श्रावणी शुक्ला पूर्णिमा को ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये वेद प्रचार स्वाध्याय की प्रेरणा देने वाला श्रावणी पर्व तथा वर्तमान समय में भाई-बहिन के स्नेह-बंधन को प्रगाढ़ करने वाला रक्षाबधंन पर्व मनाया जाता है। इस पर्व पर नूतन यज्ञोपवीत धारण का विशेष महत्व है।

प्रातः सपरिवार शुद्ध होकर सामान्य प्रकरण के अनुसार यज्ञ करके निम्न दो आहुति देवें–

ओ३म् ब्रह्मणे स्वाहा।

ओ३म् छन्दोभ्यः स्वाहा।

तत्पश्चात् निम्न मंत्रों से घी की दस आहुति देवें–

१. ओं सावित्र्यै स्वाहा। २. ओं ब्रह्मणे स्वाहा। ३. ओं श्रद्धायै स्वाहा। ४. ओं मेधायै स्वाहा। ५. ओं प्रज्ञायै स्वाहा। ६. ओं धारणायै स्वाहा। ७. ओं सदस्पतये स्वाहा। ८. ओं अनुमतये स्वाहा। ९. ओं छन्दोभ्यः स्वाहा। १०. ओं ऋषिभ्यः स्वाहा।

तदन्तर ऋग्वेद की निम्न ग्यारह ऋचाओं से आहुति दें–

१. ओं बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्रं यत्प्रैरत नामधेयं दधानाः। यदेषां श्रेष्ठं यदरिप्रमासीद् प्रेणा तदेषां निहितं गुहाविः।

२. ओं सक्तुमिव तितउना पुनन्तो यत्र धीरा मनसा वाचमक्रत। अत्रा सखायः सख्यानि जानते भद्रैषां लक्ष्मीर्निहिताधि वाचि ॥

३. ओं यज्ञेन वाचः पदवीयमायन्तामन्वविन्दन्नृषिषु प्रविष्टाम्। तामाभृत्या व्यदधुः पुरुत्रा तां सप्तरेभा अभि सं नवन्ते ॥

४. ओं उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम्। उतो त्वस्मै तन्वं विसस्त्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥

५. ओं अत त्वं सख्ये स्थिरपीतमाहुर्नैनं हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु। अधेन्वा चरति माययैष वाचं शुश्रुवां अफलामपुष्पाम् ॥

६. ओं यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति। यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ॥

७. ओं अक्षण्वन्तः कर्णवन्तः सखायो मनोजवेष्वसमा बभूवुः। आदध्नास उपकक्षास उ त्वे ह्रदा इव स्नात्वा उ त्वे ददृश्रे ॥

८. ओं ह्रदा तष्टेषु मनसो जवेषु यद् ब्राह्मणाः संयजन्ते सखायः। अत्राह त्वं विजहुर्वेद्याभिरोह ब्रह्मणो विचरन्त्युत्वे ॥

९. ओं इमे ये नार्वाङ् न परश्चरन्ति न ब्राह्मणासो न सुतेकरासः। त एते वाचमभिपद्य पापया सिरीस्तन्त्र तन्वते अप्रजज्ञयः ॥

१०. ओं सर्वे नन्दन्ति यशसागतेन सभासाहेन सख्या सखायः। किल्विषस्पृत्पितुषणिह येषामरं हितो भवति वाजिनाय ॥

११. ओं ऋचां त्वं पोषमास्ते पुपुष्वान् गायत्रं त्वो गायति शक्वरीषु ब्रह्मा त्वा वदति जातविद्यां यज्ञस्य मात्रां विमिमीत उत्वाः ॥ ॥ऋ० १०।७१।१—११।

इसके पश्चात् यजुर्वेद के इस मन्त्र से—

१२. ओं सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्। सनिं

सेधामयासिष ँ स्वाहा ॥ यजु० ३२।१३ ॥

यजमान व गृहपति हवन करे। किन्तु मन्त्र सब बोलें। पश्चात् सब उपस्थित पारिवारिक ज़न पलाश की तीन तीन हरी या शुष्क समिधाओं को घी से भिगोकर सावित्री (गायत्री) मन्त्र से आहुति दें। इस प्रकार तीन बार करें। पुनः स्विष्टकृदाहुति (यदस्य कर्मणोऽत्यरीरिचम्० आदि) देकर किया जाय।

"शन्नोमित्रः"—इस मन्त्र को पढ़कर उसके पश्चात् मुख धोकर आचमन करके, अपने अपने आसनों पर बैठकर जलपात्रों में कुशाओं को रखकर, हाथ जोड़कर, पुरोहित के साथ तीन बार ओङ्कार व्याहृति पूर्वक सावित्री पढ़कर वेदों के निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें—

ऋग्वेद—ओं अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् (अर्थ स्वस्तिवाचन में देखिये)

ओं समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथावः सुसहासतिः ॥ (अर्थ "आर्यसमाज स्थापना दिवस" में देखिये)

यजुर्वेद—ओं इषे त्वोर्ज्जे त्वा वायवः स्थ देवो वः सविता प्रापर्यतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजा वतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन इशत माघसँ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात वह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥

ओं हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्। योऽसावादित्ये पुरुषः सोऽसावहम् ॥ ओं खं ब्रह्म॥

सामवेदः—ओं अग्न आयाहि वीतये, गृणानो हव्यदातये नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

ओं मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठा परावत आजगन्थाः पृथिव्याः।सृकं संशाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून्ताहि वि मृधो नुदस्व॥

ओं भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥

ओं स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

ओं शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्त्रवन्तु नः ॥

ओं पनाय्यं तदश्विना कृतं वां वृषभो दिवो रजसः पृथिव्याः। सहस्त्रशंसा ऊतये गविष्टौ सर्वामित तामुपयाता पिवध्यै ॥

पश्चात् यह मन्त्र पढ़ें–

ओं सहनोऽस्तु सहनोऽवतु सह न इदं वीर्यवदस्तु। ब्रह्मा इन्द्रस्तद्वेद येन यथा न विद्विषामहे ॥

इस वेद मन्त्र को पढ़कर सामवेद का वामदेव्यगान करें।

६. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

भाद्रपद कृष्णा अष्टमी को कर्मयोगी महान् राजनीतिज्ञ श्री कृष्ण का जन्म मथुरा में कंस के कारागार में हुआ था। इस महापुरुष के संदेशों तथा उनको श्रेष्ठ कर्मों का स्मरण करने के लिये उनका जन्मदिन कृष्ण जन्माष्टमी के रूप में मनाया जाता है। प्रातः सपरिवार शुद्ध होकर विशेष यज्ञ करके निम्न मंत्रों से विशेष आहुतियाँ देवें–

ओं तेजोऽसि तेजो मयि धेहि स्वाहा।
ओं वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि स्वाहा।
ओं बलमसि बलं मयि धेहि स्वाहा।
ओं ओजोऽसि ओजो मयि धेहि स्वाहा।
ओं मन्युरसि मन्युं मयि धेहि स्वाहा।
ओं सहोऽसि सहो मयि धेहि स्वाहा।

अपराह्न में सामूहिक रूप में मल्लयुद्ध (कुश्ती) आदि का आयोजन करें। सायंकाल रात्रि में कृष्ण जयन्ती के उपलक्ष्य में श्री कृष्ण गुण गान करें तथा उनके तत्व दर्शन भगवद् गीता पर भाषणादि का आयोजन करें।

७. विजयादशमी

विजय दशमी का पर्व आश्विन शुक्ला दशमी के दिन मनाया जाता है। प्राचीन काल में वर्षा में यातायात की सुविधा के अभाव में विजय यात्रा एवं व्यापारिक कार्य रुक जाते थे, तथा विजय दशमी के दिन विजय यात्रा एवं व्यापारिक कार्य प्रारम्भ होते थे। वर्तमान समय में भी यह पर्व स्वच्छता, अवरुद्ध-कार्य-प्रारम्भ तथा बुराई पर अच्छाई की विजय दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रातः शुद्ध होकर सामान्य प्रकरण के अनुसार यज्ञ करके क्षात्र धर्म के द्योतक एवं यात्रा में लाभ के सूचक निम्न मंत्रों से विशेष आहुतियाँ देवें—

१. ओं संशितं म इदं ब्रह्म संशितं वीर्यं बलम्। संशितं क्षत्रमजरमस्तु जिष्णु येषामस्मि पुरोहितः।

२. ओं समहमेषाम् राष्ट्रं स्यामि समोजो वीर्यं बलम्। वृश्चामि शत्रूणां बाहूननेन हविषाहम् ॥

३. ओं नीचैः पद्यन्तामधरे भवन्तु ये नः सूरिं मघवानं पृतन्यान्। क्षिणामि ब्रह्मणामित्रानुन्नयामि स्वानहम् ॥

४. ओं तीक्ष्णीयांसः परशोरग्नेस्तीक्ष्णतरा उत। इन्द्रस्य वज्रात् तीक्ष्णीयांसो येषामस्मि पुरोहितः ॥

५. ओं एषामहमायुधा सं स्याम्येषा राष्ट्रं सुवीरं वर्धयामि। एषां क्षत्रमजरमस्तु जिष्ण्वेषां चित्तं विश्वेऽवन्तु देवाः ॥

६. ओं उद्धर्षन्तां मघवन्वाजिनान्युद् वीराणां जयतामेतु घोषः पृथगृघीषा उलुलयः केतुमन्त उदीरताम्। देवा इन्द्रज्येष्ठा मरुतो यन्तु सेनया ॥

७. ओं प्रेता जयता नर उग्रा वः सन्तु बाहवः। तीक्ष्णेषवोऽबलधन्वनो हतोग्रायुधा अबलानुग्रबाहवः ॥

८. ओं अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्म संशिते। जयामित्रान्

प्रपद्यस्व जह्येषां वरं वरं मामीषां माचि कश्चन ॥

अथर्व० ३।११।१-८॥

९. ओं ये बहवो या इषवो धन्वनां वीर्याणि च। असीन् परशूनायुधं चित्ताकूतं च यद् हृदि। सर्वं तदर्बुदे त्वममित्रेभ्यो दृशे कुरूदारांश्च प्रदर्शय ॥

१०. ओं उत्तिष्ठत सं नह्यध्वं मित्रा देवजना यूयम्। संदृष्टा गुप्ता वः सन्तु या नो मित्राण्यर्बुदे ॥

११. ओं उत्तिष्ठतमारभेथामादानसन्दानाभ्याम्। अमित्राणां सेना अभिधत्तमर्बुदे ॥

मध्याह्न में स्वादिष्ट, सात्विक भोजन सपरिवार करें। इस दिन शरद् ऋतु के नवभोज्य के रूप में दही-लौकी के रायते के सेवन को विशेष महत्व दिया गया है। अपराह्न में आर्य पुरुष नूतन वस्त्र धारण कर पैदल गाँव व शहर के बाहर किसी खुले स्थान पर एकत्र होकर शक्ति संचय और शौर्य संचार हेतु अस्त्र-शस्त्र का संचालन आदि का प्रदर्शन करें। रामलीला का प्रदर्शन भी इसी उद्देश्य को लेकर किया जाता है।

८. शारदीय नवसस्येष्टि (दीपावली)
श्रीमद् दयानन्द निर्वाण दिवस

कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली पर्व धान आदि नवान्न के आगमन एवं वर्षा के दूषित वायुमण्डल की शुद्धि एवं स्वच्छता के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। यज्ञ से वायुमण्डल की शुद्धि, लिपाई-पुताई से घरों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों की स्वच्छता तथा सरसों के तेल के दीपक से वर्षा में उत्पन्न कीट आदि का नाश इस पर्व के प्रमुख उद्देश्य हैं।

दीपावली के दिन प्रातःकाल यजमान सपरिवार नवीन वस्त्र धारण

कर सामान्य प्रकरण के अनुसार हवन कर स्थाली पाक (नवान्न धान से बनायी गयी खीर) से निम्न ३८ मंत्रों से विशेष आहुतियाँ देवें। हवन की अन्य सामग्री में खील विशेष रूप से मिला लेवें--

१. ओं परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानत् चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां री रिषो मोत वीरान् ॥

२. ओं मृत्योः पदं योपयन्तो यदैत द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः। आप्यायमानाः प्रजया धनेन शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः॥

३. ओं इमे जीवा विमृतैराववृत्रन्नभूद्भद्रा देवहूतिर्नो अद्य। प्राञ्ची अगाम नृतये हसाय द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ॥

४. ओं इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थ मेतम्। शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन ॥

५. ओं यथाहान्यनुपूर्व भवन्ति यज्ञाऋतव ऋतुभिर्यन्ति साधु। यथा न पूर्वमपरो जहात्येवा धातरायूंषिकल्पयैषाम्।

ऋ० । १० ।१८ ।१—५॥

६. ओं आयुष्मतामायुष्कृतां प्राणेन जीव मा मृथाः। व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा ॥ अथर्व० ३ ।३१ ।८॥

७. ओं ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत। इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत् ॥ अथर्व० ११ ।५ ।१९॥

८. ओं शतायुधाय शतवीर्याय शतोतयेभिमातिषाहे। शतं यो नः शरदो अजीजादिन्द्रो नेषदति दुरितानि विश्वा॥

९. ओं ये चत्वारः पथयो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी वियन्ति। तेषां यो आज्यानिमजीमावहास्तस्मै नो देवाः परिदत्तेह सर्वे ॥

१०. ओं ग्रीष्मो हेमन्त उत नो वसन्तः शरद्वर्षाः सुवितन्नो अस्तु। तेषामृतूना ँ शतशारदानां निवात एषामभये स्याम ॥

११. ओं इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता ब्रहन्नमः। तेषां वय श्च सुमतौ यज्ञियानां ज्योग जीता अहताः स्याम ॥

मं० ब्रा० २।१।८-१२॥ गो० गृ २३।१।१०-११॥

१२. ओं पृथिवी द्यौः प्रदिशो दिशो यस्मै द्युभिरावृत्ताः। तम़िहेन्द्रमुपह्वये शिवा नः सन्तु हेतयः ॥

१३. ओं यन्मे किञ्चदुपेप्सितमस्मिन् कर्मणि वृत्रहन्। तन्मे सर्व ँ समृध्यतां जीवतः शरदः शतम् ॥

१४. ओं सम्पत्तिर्भूतिर्भूमि वृष्टिर्ज्येष्ठय ँ श्रेष्ठय ँ श्रीः प्रजामिहावतु स्वाहा। इदमिन्द्राय इदन्न मम ॥

१५. ओं यस्या भावे वैदिकलौकिकानां भूतिर्भवति कर्मणाम्। इन्द्रपत्नीमुपह्वये सीता ँ सा मे त्वनपायिनी भूयात्कर्मणि कर्मणि स्वाहा ॥ इदमिन्द्रपत्न्यै-इदन्न मम ॥

१६. ओं अश्वावती गोमती सूनृतावती बिभर्त्ति या प्राणभृतो अतन्द्रिता। खलमालिनीमुर्वरामस्मिन् कर्मण्युपह्वये ध्रुवा ँ सा मे त्वनपायिनी भूयात् स्वाहा ॥ इदं सीतायै-इदं न मम ॥

पार० २।१७।७-६॥

१७. ओं सीतायै स्वाहा।

१८. ओं प्रजायै स्वाहा।

१९. ओं शमायै स्वाहा।

२०. ओं भूत्यै स्वाहा।

२१. ओं व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

यजु० १८।१२॥

२२. ओं वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्त्रो वा परावतः। वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाता विहावतु ॥

२३. ओं वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवां ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेयम् ॥

२४. ओं वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा

वर्धयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा आशा वाजपतिर्भवेयम्॥ ॥यजु० १८।३२—४॥

२५. ओं सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्। धीरा देवेषु सुम्नयौ ॥

२६. ओं युनक्त सारा वियुगा तनोत कृते योनौ वपतेह बीजम्। विराजः श्नुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय इत्सृण्यः पक्वमायवन् ॥

२७. ओं लाङ्गलं पवीरवत् सुशीमं सोमसत्सरु। उदिद्वपतु गामविं प्रस्थावद्रथवाहनं पीवरीं च प्रफर्व्यम्।

२८. ओं इन्द्रः सीतां निगृह्णातु तां पूषाभिरक्षतु। सा नः पयस्वती दुहामुत्तरामुत्तरां समाम् ॥

२९. ओं शुनं सुफाला वितुदन्तु भूमिं शुनं कीनाशा अनुयन्तु वाहान्। शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ओषधीः कर्त्तमस्मै॥

वर्णाश्रम व्यवस्था

चार वर्ण : कर्म के अनुसार चार वर्ण हैं।

१. ब्राह्मण—पढ़ना-पढ़ाना, यज्ञ करना-कराना तथा दान लेना ब्राह्मण के कर्म हैं।

२. क्षत्रिय—पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, प्रजा पालन, विषयों में आसक्त न होना ये क्षत्रियों के कर्म हैं।

३. वैश्य—पढ़ना, यज्ञ करना, दान देना, पशु-पालन, व्यापार करना, खेती करना ये वैश्य के कर्म हैं।

४. शूद्र—उपर्युक्त तीनो वर्णों की सेवा करना शूद्रों का कर्म है।

चार आश्रम :

१. ब्रह्मचर्य आश्रम—जीवन के प्रथम २५ वर्ष में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए विद्याध्ययन करना चाहिए।

२. गृहस्थाश्रम–२६ से ५० वर्ष तक विवाह करके संतान उत्पन्न करना तथा धर्मपूर्वक उद्यम करके धन-संचय करना चाहिए।
३. वानप्रस्थ आश्रम–५१वें वर्ष में समस्त गृह सम्पत्ति एवं उत्तरदायित्व ज्येष्ठ पुत्र को सौंपकर ७५ वर्ष तक घर में ही रहना चाहिए।
४. संन्यास आश्रम–७६वें वर्ष में घर त्यागकर जीवन के अन्तिम भाग को अभ्यास, स्वाध्याय और जनता को उपदेश देने आदि श्रेष्ठ कार्यों में व्यतीत करना चाहिए।

पंच यज्ञ :

१. ब्रह्म यज्ञ–संध्या वेद पाठ।
२. देव यज्ञ–हवन (अग्निहोत्र)।
३. पितृ यज्ञ–जीवित माता-पिता, गुरु, आचार्य की सेवा।
४. अतिथि यज्ञ–घर आये हुए विद्वान् साधु-सन्यासी आदि का सत्कार।
५. बलिवैश्वदेव यज्ञ–गाय, कुत्ते आदि आश्रित जीवों को भोजन कराना।

सोलह संस्कार

मनुष्य के गर्भाधान से लेकर मृतक शरीर की अन्तिम क्रिया करने तक निम्न १६ संस्कार होने चाहिए।

१. गर्भाधान–उत्तम सन्तान उत्पत्ति हेतु गर्भ-धारण के समय।
२. पुंसवन संस्कार–गर्भ के दूसरे या तीसरे महीने में गर्भ की रक्षा के लिये स्त्री-पुरुष प्रतिज्ञा करें।
३. सीमन्तोन्नयन–गर्भ के चौथे मास में पति द्वारा बच्चे की मानसिक शक्तियों की वृद्धि तथा पत्नी की सांत्वना के लिये निकट सम्बन्धियों के मध्य किया जाय।

४. **जातकर्म**–बालक के जन्म लेने पर बालक की शारीरिक शुद्धता एवं इन्द्रियों की सजगता के लिये।

५. **नामकरण संस्कार**–जन्म से ग्यारहवें अथवा १०१वें दिन या दूसरे वर्ष के आरम्भ में व्यावहारिक सार्थक जीवन बोध के लिये।

६. **निष्क्रमण**–जन्म के चौथे महीने में बालक के शरीर तथा मन के विकास के लिये खुली हवा,एवं प्रकाश में घर से बाहर निकलने के लिये।

७. **अन्नप्राशन**–जन्म के छठें एवं आठवें महीने में बालक को अन्न का भोजन देने के लिये।

८. **चूड़ाकर्म (मुंडन संस्कार)**–पहले अथवा तीसरे वर्ष में मस्तिष्क के विकास के लिये गर्भावस्था के बालों को उतारने के लिये।

९. **कर्ण वेध**–तीसरे अथवा पाँचवें वर्ष में बालक की शारीरिक निरोगता के लिये।

१०. **उपनयन**–जन्म वर्ष से ८वें वर्ष में ब्राह्मण, ११वें वर्ष में क्षत्रिय, १२वें वर्ष में वैश्य के बालक की शारीरिक शुद्धि एवं ब्रह्मचर्य के नियमों के पालन के लिये।

११. **वेदारम्भ**–उपनयन संस्कार के उपरान्त वेद शिक्षा प्राप्ति हेतु।

१२. **समावर्तन**–विद्या-अध्ययन के पश्चात् घर आने पर।

१३. **विवाह**–ब्रह्मचर्य आश्रम के २५वें वर्ष के पश्चात् गृहस्थ आश्रम में प्रवेश के लिये।

१४. **वानप्रस्थ**–५० वर्ष के उपरान्त सभी उत्तरदायित्वों से मुक्ति एवं सांसारिक निवृति के लिये।

१५. **सन्यास**–७५ वर्ष के उपरान्त परोपकार की भावना से गृह त्याग कर भ्रमण के लिये।

१६. **अन्त्येष्टि संस्कार**–मृतक शरीर की अन्तिम क्रिया करने के लिये।

१९७२ मे अपने परिवार के साथ

मुद्रक : सुधाकर मुद्रणालय, मेरठ। फोन : 4035969, 4028969